A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 17 अप्रैल, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 217, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

विधेयक अपने पास क्यों और कब तक रोक सकते हैं राज्यपाल ?

उमंग पोद्दार

सुप्रीम कोर्ट ने बीते सप्ताह एक महत्वपूर्ण फ़ैसला दिया है। इसमें यह साफ़ किया कि किसी विधेयक यानी बिल को अगर राज्यपाल और राष्ट्रपति के पास अनुमति के लिए भेजा जाए तो वे उसे किन हालात में और कब रोक सकते हैं। यह फ़ैसला जस्टिस जेबी पारदीवाला ने दिया है। हाल ही में ऐसे कई विवाद सामने आए हैं, जहाँ राज्यपालों ने राज्य की विधानसभा और विधान परिषद से पारित विधेयकों को मंज़ूरी नहीं दी। दरअसल, तमिलनाडु विधानसभा ने कई विधेयक पारित किए थे और उन्हें राज्यपाल को भेजा था। राज्यपाल ने इन विधेयकों को लंबे वक्त तक रोके रखकर एक तरह से 'पॉकेट वीटो' का उपयोग किया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राज्यपाल के पास ऐसा कोई अधिकार नहीं है और उनके इस काम को असंवैधानिक क़रार दिया। कोर्ट ने साथ ही यह भी कहा कि जिन विधेयकों को राज्यपाल अनुमति नहीं दे रहे थे, उन्हें क़ानून माना जाएगा। इस तरह का फ़ैसला पहली बार हुआ है।

विधानसभा और विधान परिषद द्वारा विधेयक पारित करने के बाद उसे राज्यपाल के सामने पेश किया जाता है। विधेयक के क़ानून बनने के लिए राज्यपाल की मंज़ूरी ज़रूरी है।

संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत, जब कोई विधेयक राज्यपाल के पास जाता है तो उनके पास तीन विकल्प होते हैं। पहला, विधेयक को मंज़ूरी देना. दूसरा विकल्प है, मंज़ूरी देने से रोकना। जब राज्यपाल मंज़ूरी से रोकते हैं, तो संविधान कहता है कि उन्हें विधेयक को 'जितनी जल्दी हो सके' विधानमंडल को पुनर्विचार के लिए सुझावों के साथ वापस करना चाहिए। इसके बाद, राज्य सरकार विधेयक को अगर फिर से पारित करती है तो राज्यपाल के पास इसे मंज़ूर करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। भले ही विधानमंडल ने उनके सुझावों को शामिल किया हो या नहीं।

तीसरा विकल्प है, विधेयक को राष्ट्रपति के पास मंज़ूरी के लिए भेजना। अगर कोई विधेयक उच्च न्यायालय की मूल शक्तियों को छीनता है तो राज्यपाल को अनुच्छेद 200 के तहत विधेयक को आवश्यक रूप से राष्टपति को भेजना होगा। यदि राष्ट्रपति मंज़ूरी रोकती हैं तो विधेयक राज्य सरकार के पास वापस भेजा जाता है। वह इसे फिर से पारित करने पर विचार कर सकती है। यदि विधेयक फिर से पारित होता है तो इसे राष्ट्रपति के सामने दोबारा प्रस्तुत किया जाता है। संविधान में यह निर्धारित नहीं किया गया है कि राज्यपाल या राष्टपति को कितने दिनों के भीतर मंज़ूरी देनी होगी या अपनी नामंज़ूरी के बारे में बताना होगा।

तमिलनाडु विधानसभा ने साल 2020 और 2023 के बीच 12 विधेयक पारित किए। ये राज्यपाल आरएन रवि को भेजे गए। राज्यपाल ने इन विधेयकों को लंबित रखा। उन पर कोई कार्रवाई नहीं की। अक्टूबर 2023 में राज्य सरकार ने इसके ख़िलाफ़ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की। राज्य सरकार का कहना था कि राज्यपाल के पास अनुमति न देने का ऐसा अधिकार नहीं है। इसके बाद, राज्यपाल ने 10 विधेयकों को बिना किसी सुझाव के वापस कर दिया। दो विधेयकों को राष्ट्रपति के पास विचार के लिए भेज दिया। राज्य सरकार ने इन 10 विधेयकों को फिर से पारित किया और उन्हें राज्यपाल के पास दोबारा भेजा। उन्होंने इस बार इन सभी विधेयकों को राष्ट्रपति के पास विचार के लिए भेज दिया। ये दस विधेयक तमिलनाडु के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कुलपति की नियुक्ति की शक्ति को राज्यपाल से लेकर राज्य सरकार को दे रहे थे।

राज्य सरकार ने तर्क दिया कि राज्यपाल के पास विधेयक की मंज़ूरी को अनिश्चितकाल तक रोकने और विधेयक पर 'पॉकेट वीटो' करने का अधिकार नहीं है। दूसरी ओर, राज्यपाल ने तर्क दिया कि उनके पास संविधान के तहत ऐसा अधिकार है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राज्यपाल का 10 विधेयकों को दूसरी बार पारित होने के बाद भी राष्ट्रपति को भेजना असंवैधानिक था। कोर्ट ने कहा कि इन 10 विधेयकों को पारित माना जाएगा। कोर्ट ने इस मामले में महत्वपूर्ण सिद्धांत भी निर्धारित किए। यही नहीं, विधेयकों की मंज़ूरी के लिए राज्यपाल और राष्ट्रपति के लिए समयसीमा भी निर्धारित की। कोर्ट ने कहा कि विधेयक प्रस्तुत होने पर राज्यपाल के पास केवल तीन विकल्प हैंः या तो मंज़ूरी देना, मंज़ूरी रोकना और विधेयक को विधानसभा के पास वापस भेजना या विधेयक को राष्ट्रपति के विचार के लिए भेजना। कोर्ट ने कहा कि राज्यपाल या राष्ट्रपति द्वारा 'वीटो' का कोई प्रावधान नहीं है। कोर्ट ने यह भी कहा कि राज्यपाल को किसी विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजने के कारण साफ़ तौर पर बताने होंगे।

कोर्ट का मानना था कि राज्यपाल 'राजनीतिक या किसी अन्य कारणों' के आधार पर विधेयक को राष्ट्रपति के पास नहीं भेज सकते।

यदि राष्ट्रपति किसी विधेयक की मंज़ूरी रोकना चाहते हैं, तो उन्हें आदर्श तौर पर उसमें समस्याओं और बदलावों के बारे में बताना होगा। यदि यह दूसरी बार भी उनके पास आता है तो मंज़ूरी रोकने के लिए उन्हें अपने कारण साफ़ तौर पर बताने होंगे।

कोर्ट ने यह भी माना कि यदि राज्यपाल ने विधेयक को विधानसभा के पास वापस भेजा है और विधानसभा इसे फिर से पारित करती है तो राज्यपाल सामान्य रूप से विधेयक को राष्ट्रपति के पास नहीं भेज सकते। इस मामले में सिर्फ़ एक स्थिति में राज्यपाल विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेज सकते हैं। वह स्थिति है, जब विधानसभा ने राज्यपाल द्वारा बताए हुए बदलावों को विधेयक में शामिल न किया हो और वे बदलाव ऊपर बताई गई शर्तों के तहत आते हों।

कोर्ट ने यह भी कहा कि राज्यपाल या राष्ट्रपति द्वारा विधेयक की मंज़ूरी रोकने को अदालतों में चुनौती दी जा सकती है।

यदि राज्यपाल किसी विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजते हैं और राज्य सरकार का मानना है कि यह उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर है तो वे इसे अदालत में चुनौती दे सकते हैं। अदालत राज्यपाल के विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजने के कारणों की जाँच करेगी। इसे संवैधानिक और क़ानूनी प्रावधानों पर परखेगी।

ऐसे विधेयकों के मामले में जहाँ संविधान राष्ट्रपति की मंज़ूरी अनिवार्य करता है, उस हालत में अदालतों का हस्तक्षेप सीमित होगा। अगर विधेयक को लोकतंत्र के ख़िलाफ़ होने के कारण राष्ट्रपति के पास भेजा जाता है तो उन मामलों में अदालतों के पास व्यापक समीक्षा का अधिकार होगा। राष्ट्रपति को भी अदालत द्वारा निर्धारित समय सीमा का पालन करना होगा। यदि राज्य कैबिनेट या मंत्रिमंडल की सलाह पर राज्यपाल मंज़ूरी रोकते हैं या विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजते हैं तो राज्यपाल को एक महीने के भीतर कार्रवाई करनी होगी।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में आधी आबादी की पूरी भूमिका हो : मुख्यमंत्री

मंडला जिले में 232 करोड़ रुपए की लागत वाले 66 विकास कार्यों का हुआ लोकार्पण और भूमिपूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि माताओं, बहनों और बेटियों के हित में हमारी सरकार हमेशा उनके साथ हैं। इनके लिए सरकार कोई कसर नहीं रखेगी। बहनों को हमारी सरकार उनका हर वाजिब हक दिलायेगी। राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में आधी आबादी की पूरी भूमिका हो, इसे बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। देश की राजनीति में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़े, इसके लिए आगामी वर्षों में लोकसभा और विधानसभा में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण का लाभ मिलेगा। मध्यप्रदेश सरकार पहले ही निकाय चुनावों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू कर चुकी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को मंडला जिले के टिकरवारा गांव में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहाँ आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में प्रदेश की लाड़ली बहनों सहित अन्य योजनाओं के हितग्राहियों को सिंगल क्लिक के जरिए 2500 करोड़ से अधिक की सम्मान एवं सहायता राशि अंतरित की। उन्होंने भारतीय महिला क्रिकेट टीम में चयनित होने के लिए सुश्री शुचि उपाध्याय का मंच से अभिनंदन भी किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विभिन्न योजनाओं में हितलाभ और युवाओं को नियुक्ति-पत्र भी वितरित किये।

मंडला को मिली 232 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंडला के विकास को गति देने के लिए 232 करोड़ रुपए की लागत वाले 66 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन किया। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके की मांग पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंडला जिले में सुरखी-इंद्री मार्ग पर 16 करोड़ 61 लाख रुपए की लागत से नया पुल बनाने और बंजर नदी में नवनिर्मित एक अन्य पुल का लोकार्पण कर इसका नामकरण अमर शहीद शंकर शाह रघुनाथ शाह सेतु करने की घोषणा की।

प्रदेश की 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों के खातों में सिंगल क्लिक से 1552.38 करोड़ रूपये अंतरित की

मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा प्रदेश की 1.27 करोड़ बहनों को 1552.38 करोड़ रुपए, 56.68 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को 340 करोड़ रुपए, प्रधानमंत्री उज्ज्वला गैस योजना में पात्र 25 लाख बहनों को 450 रुपए में सिलेंडर रिफिलिंग के लिए 57 करोड़ रुपए की राशि अंतरित की गई। सरकार द्वारा अब तक लाड़ली बहनों को 36 हजार 500 करोड़ रुपए से अधिक की सम्मान राशि प्रदान की जा चुकी है।

परिणय सूत्र में बंधे 1100 नवविवाहित दंपत्तियों को दिया आशीर्वाद

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना के अंतर्गत सामूहिक विवाह समारोह में परिणय-सूत्र में बंधे 1100 से अधिक नवविवाहित दंपत्तियों पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने कहा कि आज नवविवाहित दंपत्तियों को 49-49 हजार की राशि प्रदान की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 16 संस्कारों में विवाह सबसे बड़ा होता है। नवदंपत्ति नए संकल्पों के साथ सपनों का संसार बसाने के लिए आगे बढ़ते हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में कमाई का एक हिस्सा बचाएं जिससे भविष्य में अपने साथ बच्चों का भविष्य भी सुरक्षित हो सके। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोगों से विवाह समारोह पर बेहिसाब खर्च से बचने का सुझाव देते हुए कहा कि कन्या विवाह/निकाह योजना के सामूहिक विवाह में शामिल होकर कोई भी कम खर्च में धूमधाम से शादी कर सकता है। उन्होंने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग एवं किसानों को शादियों में टीका, दहेज और मृत्यु भोज के लिए कर्ज न लेने की सलाह दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसी कुरीतियों से समाज का विकास बाधित होता है।

आर्टिकल 26 सेक्युलर है, सभी समुदायों पर यह लागू होता है

● वक्फ कानून पर हुई सुनवाई पर बोले चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ● हिंसा से एससी परेशान, नए कानून पर रोक लगाने से किया इनकार ● केंद्र से पूछा- क्या सैकड़ों साल पुरानी मस्जिदों के दस्तावेज मिलेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को वक्फ संशोधन कानून को लेकर सुनवाई शुरू हुई। इस दौरान कई ऐसे मौके आए जब चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ने वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल को टोका और उन्हें संवैधानिक पहलुओं की जानकारी दी। नए वक्फ कानून के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सिब्बल भी पैरवी कर रहे हैं। इस मामले की सुनवाई चीफ जस्टिस संजीव खन्ना की अगुवाई वाली तीन सदस्यीय बेंच में हो रही है, जिसमें उनके अलावा जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस केवी विश्वनाथन भी शामिल हैं। नए वक्फ कानून के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस खन्ना ने साफ किया है कि जहां तक भूमि कानूनों का सवाल है, सुप्रीम कोर्ट को हमेशा संरक्षण प्राप्त है। एक मौके पर सिब्बल ने कहा कि वक्फ काउंसिल और बोर्ड में पहले सिर्फ मुसलमान होते थे...अब हिंदू भी हिस्सा हो सकते हैं...यह ठीक नहीं।

● **केंद्र से पूछा-क्या सैकड़ों साल पुरानी मस्जिदों के दस्तावेज मिलेंगे-** केंद्र सरकार के वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को दो घंटे सुनवाई हुई। इस कानून के खिलाफ 100 से ज्यादा याचिकाएं लगाई गई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इन पर केंद्र से जवाब मांगा है, लेकिन कोर्ट ने कानून के लागू होने पर रोक नहीं लगाई है। सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ कानून के विरोध में देशभर में हो रही हिंसा पर चिंता जताई। इस पर स्त्र ने कहा कि ऐसा नहीं लगना चाहिए कि हिंसा का इस्तेमाल दबाव डालने के लिए किया जा सकता है। सीजेआई संजीव खन्ना और जस्टिस पीवी संजय कुमार, जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच मामले पर सुनवाई कर रही है। केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता पैरवी कर रहे हैं। वहीं कानून के खिलाफ कपिल सिब्बल, राजीव धवन, अभिषेक मनु सिंघवी, सीयू सिंह दलीलें रख रहे हैं।

इसी मिट्टी की पैदाइश है उर्दू, मुस्लिम धर्म से जोड़ना गलत

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र के अकोला जिले के पातुर नगर परिषद के बोर्ड पर मराठी के साथ उर्दू भाषा के उपयोग को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया है। मंगलवार को कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि भाषा का धर्म नहीं होता और उर्दू को केवल मुसलमानों की भाषा मानना सच्चाई और भारत की विविधता की एक दुर्भाग्यपूर्ण गलतफहमी है। यह याचिका पूर्व नगरसेविका वर्षाताई संजय बगाड़े ने दायर की थी, जिसमें कहा गया था कि नगर परिषद का कार्य केवल मराठी में ही हो सकता है और उर्दू का उपयोग बोर्ड पर भी नहीं होना चाहिए। पहले यह याचिका नगर परिषद और फिर बॉम्बे हाईकोर्ट ने खारिज कर दी थी। अंत में याचिकाकर्ता सुप्रीम कोर्ट पहुंचीं। जस्टिस सुधांशु धूलिया की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि भाषा किसी धर्म की नहीं, बल्कि समुदाय, क्षेत्र और लोगों की होती है।

जस्टिस बीआर गवई होंगे देश के अगले चीफ जस्टिस

● सीजेआई संजीव खन्ना ने की है उनके नाम की सिफारिश ● जस्टिस बालकृष्णन के बाद सीजेआई बनने वाले दूसरे दलित

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस बीआर गवई देश के अगले चीफ जस्टिस होंगे। वर्तमान सीजेआई जस्टिस संजीव खन्ना ने बुधवार को सुप्रीम कोर्ट के सबसे सीनियर मोस्ट जज बीआर गवई को अपना उत्तराधिकारी बनाने की सिफारिश की। जस्टिस गवई भारत के 52वें चीफ जस्टिस बनने वाले हैं। बीआर गवई 14 मई को शपथ लेंगे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू उन्हें पद की शपथ दिलाएंगी। जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ के 65 वर्ष की आयु में रिटायर्ड होने के बाद जस्टिस खन्ना ने नवंबर 2024 में सीजेआई का पद संभाला था। भूषण रामकृष्ण गवई का जन्म 24 नवंबर, 1960 को अमरावती में हुआ था। वे 16 मार्च, 1985 को बार में शामिल हुए थे। जस्टिस गवई लगभग छह महीने तक भारत के चीफ जस्टिस रहेंगे। जस्टिस गवई नवंबर में रिटायर्ड होने वाले हैं। जस्टिस केजी बालकृष्णन के बाद वे चीफ जस्टिस का पद संभालने वाले दूसरे दलित होंगे, जिन्हें 2007 में देश के शीर्ष न्यायिक पद पर प्रोमोट किया गया था। जस्टिस गवई राज्य में हाई कोर्ट के पूर्व महाधिवक्ता और जस्टिस बैरिस्टर राजा भोंसले के साथ काम किया। इसके बाद उन्होंने 1987 से 1990 तक बॉम्बे हाई कोर्ट में स्वतंत्र रूप से प्रैक्टिस की।

देश में बाड़मेर सबसे गर्म, श्रीनगर में रिकॉर्ड तोड़ गर्मी

● 80 साल का रिकॉर्ड टूटा, 25 राज्यों में आंधी-बारिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने देश के 25 राज्यों में आंधी-बारिश का अनुमान लगाया है। बिहार, असम और ओडिशा में तेज बारिश की आशंका है। झारखंड, ओडिशा और मेघालय में ओले भी गिर सकते हैं। मौसम विभाग ने बताया कि 15 अप्रैल श्रीनगर का बीते 80 सालों में सबसे ज्यादा गर्म दिन था। शहर का तापमान सामान्य से 10.2 डिग्री ज्यादा 30.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

श्रीनगर में इस वक्त औसत तापमान 20.2 डिग्री सेल्सियस रहता है। जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी में इससे पहले 20 अप्रैल, 1946 को सबसे ज्यादा तापमान 31.1 डिग्री दर्ज किया गया था। अधिकारियों ने बताया कि 15 अप्रैल को कश्मीर घाटी के अलग-अलग इलाकों में तापमान सामान्य से 8.1 से 11.2 डिग्री ज्यादा रहा। वहीं, राजस्थान का बाड़मेर लगातार दूसरे दिन देश में सबसे गर्म रहा। जिले का तापमान 45.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने अगले तीन से चार दिनों में तापमान में बढ़ोतरी होने का अनुमान जताया है। इधर, हिमाचल में ओलावृष्टि-तूफान का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। यहां के 4 जिलों में भारी बारिश भी हो सकती है। अगले 5 दिन राज्य में मौसम खराब बना रहेगा। हरियाणा में आज बूंदाबांदी की संभावना है, जिससे तापमान में गिरावट आएगी। बिहार के 22 जिलों में बारिश-आंधी का यलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने मंगलवार को बताया कि इस बार मानसून सामान्य से बेहतर रहेगा। 104 से 110 फीसदी के बीच बारिश को सामान्य से बेहतर मानता है। यह फसलों के लिए अच्छा संकेत है। इस साल जून से सितंबर के बीच 105त्न यानी 87 सेंटीमीटर बारिश हो सकती है। 4 महीने के मानसून सीजन के लिए लॉन्ग पीरियड एवरेज 868.6 मिलीमीटर यानी 86.86 सेंटीमीटर होता है। यानी मानसून सीजन में कुल इतनी बारिश होनी चाहिए। मानसून हर साल 1 जून के आसपास केरल के रास्ते आता है। 4 महीने की बरसात के बाद यानी सितंबर के अंत में राजस्थान के रास्ते मानसून की वापसी होती है। कई राज्यों में यह 15 से 25 जून के बीच पहुंचता है। मध्यप्रदेश में अगले 3 दिन तेज गर्मी का असर रहेगा।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

बदला न अपने आपको जो थे वही रहे
मिलते रहे सभी से मगर अजनबी रहे!

अपनी तरह सभी को किसी की तलाश थी
हम जिसके भी क़रीब रहे दूर ही रहे!

दुनिया न जीत पाओ तो हारो न खुद को तुम
थोड़ी बहुत तो ज़ेहन में नाराज़गी रहे!

गुज़रो जो बाग़ से तो दुआ माँगते चलो
जिसमें खिले हैं फूल वो डाली हरी रहे!

हर वक़्त हर मकाम पे हँसना मुहाल है
रोने के वास्ते भी कोई बेकली रहे !

\- निदा फ़ाज़ली

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22°c

न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 17 अप्रैल 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

हथियार खरीदने के लिए गरीब देशों को अब लोन देगा भारत

● डिफेंस एक्सपोर्ट में इजाफे के लिए भारत की नई है स्ट्रैटजी ● हथियार बेचने के लिए अपना रहा चीन-फ्रांस वाली पॉलिसी

रियो डी जेनेरो (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत को ग्लोबल फैक्ट्री फ्लोर में बदलने के लिए काम कर रहे हैं। इस मिशन के तहत भारत में अरबों डॉलर के कम कीमत वाले आईफोन और फार्मास्युटिकल्स प्रोडक्ट्स का निर्माण किया गया। समाचार एजेंसी रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक अब भारत ने गरीब देशों को हथियार खरीदने के लिए कर्ज देने की नीति तैयार की है। इसके तहत भारत सरकार गरीब देशों को मिसाइल, हेलीकॉप्टर और युद्धपोत खरीदने के लिए कर्ज देगी। रिपोर्ट के मुताबिक, यूक्रेन के बाद दुनिया में सबसे ज्यादा हथियार खरीदने वाला देश भार, अब सरकार

स्वामित्व वाले एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक की क्षमता का विस्तार कर रहा है। इसके जरिए गरीब देशों को दीर्घकालिक, कम लागत वाले ऋण बांटे जाएंगे। इनमें वैसे देश भी शामिल होंगे, जिनकी राजनीतिक या क्रेडिट जोखिम प्रोफाइल कमजोर है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स ने दो भारतीय अधिकारियों और तीन इंडस्ट्री के सूत्रों के हवाले से ये रिपोर्ट दी है। इसके अलावा भारत के चार अधिकारियों ने रॉयटर्स को बताया है कि नई दिल्ली ने विदेशों मिशनों में रक्षा अताशे की संख्या में भी तेजी से इजाफा करने का फैसला लिया है। ये भारत सरकार के उस कार्यक्रम का हिस्सा होगा, जिसके तहत सरकार कुछ हथियारों के सौदों पर सीधे बातचीत करेगी। दो अधिकारियों ने बताया है कि भारत, खास तौर पर उन सरकारों को निशाना बना रहा है, जो हथियारों के लिए लंबे समय से रूस पर निर्भर रहे हैं।

यमुना सफाई परियोजना पर खर्च होंगे 3140 करोड़

● सीएम रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में होगी पहली अहम बैठक

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में यमुना की सफाई को लेकर दिल्ली सरकार पूरी तरह से एक्शन मोड है। दिल्ली सरकार ने अब इसको लेकर अपनी कवायद और तेज कर दी है। यमुना सफाई से जुड़े पूरे प्रोजेक्ट पर सरकार 3140 करोड़ रुपए की भारी भरकम राशि खर्च करेगी। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, व्यय वित्त समिति (ईएफसी) के एजेंड़े में 27 केंद्रीयकृत सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (डीएसटीपी), टर्मिनल सीवेज पंपिंग स्टेशन (एसपीएस) का निर्माण करने के अलावा दिल्ली गेट पर 10 एमजीडी क्षमता का एक अलग से सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) भी तैयार किया जाना

शामिल है। इस पूरे प्रोजेक्ट के संबंधित कार्यों और 10-12 साल के संचालन और रखरखाव आदि को भी शामिल किया गया है। केंद्रीकृत सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के अंतर्गत सीवर लाइन उपलब्ध कराना और बिछाना, घरों में सीवर कनेक्शन मुहैया करना आदि भी प्रमुख रूप से शामिल किया गया हैं।

मुजफ्फरपुर में बस्ती में आग, 5 की मौत

● मृतकों में 4 बच्चे, 15 बच्चे अभी लापता

मुजफ्फरपुर (एजेंसी)। बिहार के मुजफ्फरपुर में बुधवार एक दलित बस्ती के 50 से अधिक घरों में आग लग गई। हादसे में 4 बच्चे समेत 5 लोगों की झुलसकर मौत हो गई है। वहीं, 15 बच्चे लापता है। मृतकों में छोटू पासवान की बेटी अंशिका कुमारी (05), राज पासवान के बच्चे ब्यूटी कुमारी (08), सृष्टि कुमारी (06), विपुल कुमार (10) शामिल हैं। बताया जा रहा

है कि गोलक पासवान के घर में शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगी और देखते ही देखते पूरे झुग्गी के इलाके में फैल गई। मुजफ्फरपुर के डीएम सुब्रत कुमार सेन ने बताया, गांव के गोलक पासवान में घर में अचानक शॉर्ट सर्किट से आग लगी थी।

योगी सबसे बड़े भोगी, 'कुंभ' भगदड़ पर कुछ नहीं बोलते

इमामों के सम्मेलन में यूपी सीएम पर भड़कीं ममता बनर्जी

कोलकाता (एजेंसी)। इमामों की सभा में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को कहा- यूपी के सीएम योगी बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं। वह सबसे बड़े भोगी हैं।

महाकुंभ में कई लोगों की जान चली गई। उत्तर प्रदेश में मुठभेड़ों में कई लोग मारे गए। योगी लोगों को रैलियां नहीं निकालने देते। वक्फ संशोधन अधिनियम के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन के दौरान हुई मुर्शिदाबाद हिंसा के बाद ममता ने कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में कहा-बंगाल में बहुत आजादी है। दरअसल, यूपी के सीएम योगी ने मंगलवार को बंगाल हिंसा पर कहा था- बंगाल जल रहा है और मुख्यमंत्री चुप हैं।

बीजेपी को छोड़ किसी और से गठबंधन करेंगे एकनाथ शिंदे!

शिंदे और राज ठाकरे की मुलाकात से गरमाई राजनीति

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहने के बाद अब उप मुख्यमंत्री का दायित्व संभाल रहे एकनाथ संभाजी शिंदे क्या फिर से चौंकाएंगे। मंगलवार को एकनाथ शिंदे ने

आश्चर्यजनक तौर पर मुंबई में मनसे चीफ राज ठाकरे के घर पर स्नेह भोज किया। इसके बाद से महाराष्ट्र की राजनीति गरमा गई है। चर्चा हो रही है कि क्या एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना बीएमसी और दूसरी स्थानीय निकाय चुनावों के लिए मनसे के साथ गठबंधन करने वाले हैं। कहते हैं राजनीति में जो दिखता है वह होता नहीं है। राजनीतिक चर्चाओं के बीच शिंदे ने मीडिया से कहा कि वे राज से मिलने गए थे।

बीजेपी और संघ को हराने का रास्ता गुजरात से होकर ही जाता है

● गुजरात के मोडासा में राहुल गांधी ने कार्यकर्ताओं को किया संबोधित

अहमदाबाद (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी गुजरात दौरे के दूसरे दिन आज मोडासा जिले के अरावल्ली पहुंचे हैं। यहां वे सर्किट हाउस में पार्टी नेताओं के साथ बैठक कर संगठन सृजन अभियान की शुरुआत की। इसके बाद बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर हॉल में जिले के 1200 बूथ कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। बीजेपी और आरएसएस को हराने के रास्ता गुजरात से होकर जाता है अपने संबोधन में राहुल गांधी ने कहा- वर्तमान लड़ाई सिर्फ राजनीतिक नहीं है, बल्कि भाजपा-आरएसएस और कांग्रेस के बीच विचारधारा की लड़ाई भी है। पूरा देश जानता है कि अगर कोई भाजपा को हरा सकता है तो वह सिर्फ कांग्रेस पार्टी है। अगर हमें देश में आरएसएस और भाजपा को हराना है तो इसका रास्ता गुजरात से होकर ही जाता है। उन्होंने कहा- हमारी पार्टी की शुरुआत गुजरात में ही हुई थी। आपने हमें हमारे महानतम नेता महात्मा गांधी और सरदार पटेल दिए लेकिन हम गुजरात में लंबे समय से हतोत्साहित थे। लेकिन मैं आपको आश्वस्त करने आया हूं कि कुछ भी मुश्किल नहीं

है। पार्टी में बदलाव लाने का फैसला शीर्ष नेतृत्व ने पार्टी में बदलाव लाने का फैसला किया है। अब जिला स्तर के नेताओं को भी मजबूत किया जाएगा। आज पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं के बीच प्रतिस्पर्धा हो रही है, जो पार्टी के लिए विनाशकारी है। मुझे पार्टी नेताओं से जानकारी मिली है कि स्थानीय चुनावों के टिकट वितरण में स्थानीय लोगों को ही शामिल नहीं किया जाता है। कांग्रेस नेता ने आगे कहा- अहमदाबाद में पार्टी नेताओं से हुई चर्चा का मुख्य मुद्दा यही था कि राज्य के किसी जिले को अहमदाबाद से नहीं चलाया जाना चाहिए। जिले को जिले से ही चलाया जाना चाहिए। इसके लिए जिला नेताओं को मजबूत किया जाना चाहिए। जिला अध्यक्ष को जिम्मेदारी और शक्ति सौंपी जानी चाहिए। हम यह काम अभी से शुरू कर रहे हैं। प्यार से भाजपा के लोगों को बाहर करना है हमें अब नई पीढ़ी को कांग्रेस में लाना है। लेकिन, यह भी ध्यान रखना है कि इस भीड़ में भाजपा से जुड़े लोग भी शामिल होंगे और हमें उन्हें प्यार से बाहर निकालना है। उन्होंने आगे कहा कि गुजरात में कांग्रेस कार्यकर्ता सबसे मजबूत लोग हैं। आपको जहां भी मेरी जरूरत होगी। मैं गुजरात के कोने-कोने में आपके लिए मौजूद रहूंगा। ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को पार्टी से जोड़ना है उन्होंने आगे कहा कि गुजरात में कांग्रेस कार्यकर्ता सबसे मजबूत लोग हैं। हमें पार्टी में ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को जोड़ना है। आपको जहां भी मेरी जरूरत होगी। मैं गुजरात के कोने-कोने में आपके लिए मौजूद रहूंगा। कांग्रेस की बैठकों से नदारद रहने वाले कार्यकर्ताओं के लिए उन्होंने कहा कि जिला बैठकों में शामिल न होने वाले कांग्रेस कार्यकर्ता चुनाव नहीं लड़ पाएंगे।

बोलीं मायावती

विधानसभा चुनाव की तैयारी करिए

लखनऊ (एजेंसी)। मायावती ने बुधवार को बसपा पदाधिकारियों और जिलाध्यक्षों के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि पार्टी को मजबूत करने के लिए हर कार्यकर्ता को मेहनत करनी होगी। बसपा का मूल जनाधार दलित, पिछड़े और आदिवासी हैं, जिन्हें भाजपा और कांग्रेस बरगलाने में लगी है। बसपा प्रमुख ने कहा कि समय कम है और चुनौतियां बड़ी हैं। अभी से 2027 विधानसभा चुनाव

की तैयारियों में जुट जाइए। कार्यकर्ताओं को सिर्फ चुनाव के समय नहीं, हर वक्त जनता के बीच रहना होगा। उन्होंने संगठन की तैयारियों की समीक्षा कर नेताओं को दिशा-निर्देश दिए। लखनऊ में पार्टी कार्यालय पर आयोजित बैठक में उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के 300 पदाधिकारी शामिल हुए। मायावती ने कार्यकर्ताओं को निर्देश देते हुए कहा कि वे गांव-गांव, घर-घर जाकर जनता को भाजपा और कांग्रेस की दलित विरोधी मानसिकता के बारे में बताएं।

ट्रम्प ने चीन पर 100 फीसदी टैरिफ और बढ़ाया, 245 किया

● चीन बोला-ट्रेड वॉर से नहीं डरते, 5 दिन पहले अमेरिकी सामानों पर 125 फीसदी टैरिफ लगाया था

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ वॉर और आगे बढ़ गया है। अमेरिका ने अब चीन पर 100 फीसदी और टैरिफ लगा दिया है। इसके साथ चीनी सामान पर कुल टैरिफ 245 फीसदी हो गया है। चीन ने 11 अप्रैल को अमेरिकी सामान पर 125 फीसदी टैरिफ लगाया था, जिसके जवाब में ट्रम्प ने नया टैरिफ लगाया है। इससे पहले चीन ने कहा था कि अब वह अमेरिका की तरफ से लगाए जाने वाले किसी भी अतिरिक्त टैरिफ का जवाब नहीं देगा। अमेरिका की तरफ से नए टैरिफ के ऐलान के बाद चीन ने कहा कि हम अमेरिका के साथ ट्रेड वॉर करने से नहीं डरते। चीन ने दोबारा कहा कि अमेरिका को बातचीत करनी चाहिए। इससे पहले डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा था कि चीन को बातचीत की शुरुआत करनी होगी। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने कहा कि अगर अमेरिका सच में बातचीत को डायलॉग और समझौते के जरिए मुद्दे को सुलझाना चाहता है, तो उसे बेमतलब का दबाव बनाना, डराना और ब्लैकमेल करना बंद करना चाहिए और चीन के साथ बराबरी, सम्मान और आपसी हित पर बात करनी चाहिए।

गुरुग्राम लैंड स्कैम, रॉबर्ट वाड्रा फिर ईडी दफ्तर पहुंचे

● प्रियंका गांधी खुद छोड़ने आईं, कांग्रेस भी सड़क पर उतरी

पेशी से पहले बोले-वे परेशान करेंगे तो और स्ट्रॉन्ग बनूंगा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। गुरुग्राम लैंड स्कैम केस में कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा लगातार दूसरे दिन प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के दफ्तर पहुंचे हैं। उन्हें छोड़ने के लिए खुद प्रियंका गांधी आईं। इससे पहले मंगलवार को भी ईडी ने वाड्रा से करीब 6 घंटे पूछताछ की थी। वाड्रा पूछताछ के लिए पैदल ही दफ्तर पहुंचे थे। आज पेशी से पहले वाड्रा ने कहा, मैं कभी भी अपने आपको सॉफ्ट टारगेट नहीं बुलाऊंगा। आप (केंद्र सरकार) मुझे परेशान करोगे या कोई प्रेशर डालोगे तो मैं और उभरकर आऊंगा, स्ट्रॉन्ग बनूंगा। हम लोगों की बात रखते हैं, इसलिए टारगेट पर हैं। हम किसी से डरते नहीं हैं। हम हमेशा लोगों के लिए लड़ते रहेंगे। संसद में चाहे राहुल गांधी को रोका जाए या मुझे बाहर रोका जाए, हम सच्चाई और लोगों के लिए लड़ते रहेंगे। हम टारगेट जरूर हैं, पर सॉफ्ट टारगेट नहीं हैं। हम हार्ड टारगेट हैं, और हार्डर (मजबूत) बनते रहेंगे। समय बदलता रहता है। इस मामले में ईडी ने 8 अप्रैल को भी वाड्रा को समन भेजा था, हालांकि तब वह पेश नहीं हुए थे। मंगलवार को ईडी दफ्तर जाते समय वाड्रा ने कहा था कि यह कार्रवाई राजनीतिक मकसद से की जा रही है।

संकट मोचन संगीत समारोह

राजेन्द्र शर्मा

(कला समीक्षक एवं उप्र सरकार में अधिकारी)

सुर-ताल के बीच कला वीथिका में कैनवास-कूची की गूंज

वाराणसी के ऐतिहासिक संकट मोचन मंदिर के 13वें महंत और संकट मोचन संगीत समारोह के संयोजक प्रो. विशम्भोर नाथ मिश्र वर्ष 2013 के माह मार्च में 13वें महंत बने। प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र एक ऐसा अद्भुत व्यक्तित्व हैं। लीक से हटकर काम और फैसले करने का संस्कार उन्होंनें अपने देवतुल्य पिता पूर्व महंत वीरभद्र मिश्र से पाया है।

प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र को ख्याल आया कि ख्यात पेंटर एम एफ हुसैन,राम कुमार, शंखो चौधरी, दिनेश प्रताप सिंह, लतिका कटट आदि ने बनारस में रहकर बनारस की घाटों पर अपनी कला उकेरी है, क्यों न संकट मोचन संगीत समारोह में कला वीथिका को भी जोड़ा। जाए। इसकी जिम्मेदारी उन्होनें अपने अनुज डॉ. विजय नाथ मिश्र को सौंपी। वर्ष 2014 से संकट मोचन संगीत समारोह के साथ-साथ मंदिर परिसर में ही कला वीथिका का आयोजन किया जा रहा है। इस क्रम में कला वीथिका यह ग्यारहवां आयोजन है।

ग्यारह वर्षो में इस कला वीथिका ने अनूठे आयाम स्थापित किये हैं। जहां बड़े कलाकारों से लेकर नवांकुर कलाकारों की कलाकृतियां एक साथ प्रदर्शित होती है। साथ ही जहां कला समीक्षकों, कलाकारों के अलावा आम सुधी दर्शक सीधे तौर पर कलाकारों और उनकी कलाकृतियों से सीधा संवाद करने में समर्थ हो पाते हैं। इतनी बड़ी संख्या में दर्शक कलाकारों के लिए भी एक नवीन चेतना, प्रेरणा और प्रोत्साहन का वाहक बनते हैं।

कला वीथिका के पहले आयोजन में मूर्तिकार राजेश कुमार की मूर्तियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था, जिसका उद्घाटन संतूर सम्राट पंडित शिव कुमार शर्मा ने किया। दूसरे वर्ष के आयोजन में पूर्व में निर्मित चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। 2016 में इस कला वीथिका में चित्रों के साथ ही ललित कला की अन्य विधाओं की धरोहर यथा फोटोग्राफी, मुखौटे आदि को

भी प्रदर्शित किया गया। इसी वर्ष एस प्रणाम सिंह, वेद प्रकाश मिश्रा, विजय सिंह, प्रो. डी पी मोहन्तीस,डॉ. सुनील विश्वकर्मा, अनिल शर्मा, डॉ. राहुल सिंह, शारदा सिंह,डॉ. सुनील कुशवाहा, पूर्ण चंद उपाध्यासय, डॉ. गरिमा रानी,एस के नाग और बलदाऊ आदि जैसे चर्चित कलाकारों ने लाइव पेंटिग कर दर्शकों को हैरत में डाल दिया था। साल 2017 में इस दीर्घा में नए प्रयोग शुरु हुए। बनारस के पांच भारत रत्नों की मूर्ति एक आधार पर बनायी गयी। इसी वर्ष पहली बार काशी की सौ नामचीन हस्तियों के चित्र 'शत विभूति' के नाम से एक विशाल कैनवास पर कई चित्रकारों ने मिलकर बनाए। 2018 में सौ दिवगंत विख्यात चित्रकारों की पेंटिंग का कोलाज तैयार हुआ तो वर्ष 2019 में देश के सौ अमर शहीदों को चित्रकारों ने एक ही कैनवास पर आकार दिया। लॉक डाउन के दिनों में भी संकट मोचन संगीत समारोह के डिजीटल संस्क रण के साथ ही कला वीथिका का आयोजन भी डिजीटली किया गया।

संगीत समारोह के शताब्दी आयोजन के अवसर से स्कूली बच्चों को प्रोत्साहित किये जाने के उद्देश्यों से लाइव कला प्रतियोगिता का आयोजित कर उन्हें पुरुस्कृात करने का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। इस बार भी मंदिर परिसर में डॉ. विजय नाथ मिश्र के नेतृत्व में कला वीथिका सज धज कर कला के नये और अभिनव प्रयोग के लिए तैयार है। इसमें विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ के साथ-साथ हनुमानजी के अलग-अलग स्वरूपों को दिखाया जाता है। सुरों के प्रेमियों को सुरों की गंगा में गोते लगाते हुए कलाकारों की कलाकृतियों को निहारने का अवसर मिले, कला प्रेमियों को इससे ज्याादा और क्या चाहिए। कला वीथिका के संयोजक डॉ. वी एन मिश्र कहते हैं कि संकट मोचन संगीत समारोह के दौरान सजाई जाने वाली कला वीथिका का मुख्य उद्देश्य प्रशिक्षु और उदीयमान कलाकारों को प्रोत्साहन देना है। वरिष्ठ कलाकारों के सानिध्य में उनकी कला को और भी निखार मिलेगा ।

कला वीथिका के अब तक आयोजन के आयोजन में अनिल शर्मा, राजेश कुमार, डॉ. सुनील विश्वनकर्मा, राहुल सिंह, उदय प्रताप पॉल अपनी महती भूमिका निर्वहन करते रहे है, ग्यारहवें आयोजन में संकट मोचन संगीत समारोह के संयोजक महंत विशम्भर नाथ मिश्र के पुत्र पुष्कर नाथ मिश्र को भी कला वीथिका के संयोजक डॉ. वी एन मिश्र ने नयी जिम्मेदारियां सौंपी हैं।

जीवन भर समारोह में हाजिरी लगाता रहूंगा : राजेश कुमार

संकट मोचन संगीत समारोह की मूल आत्मा यह है कि कोई कितना ख्यात कलाकार क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि मैं संकट मोचन मंदिर में अपनी कला का प्रदर्शन कर रहा हूँ अपितु वह कहता है कि मैं अपनी कला के जरिये संकट मोचन के दरबार में हाजिरी लगा रहा हूँ, उपासना कर रहा हूँ । श्रोता भी रात भर संकट मोचन मंदिर के परिसर में संगीत की रसवर्षा में भीगने को उपासना मानते हैं। ऐसे ही एक उपासक हैं बिहार के दरभंगा जिले के मूर्तिकार राजेश कुमार।

अपनी साधना के बल पर अनेकों पुरस्कारों और सम्मानों से नवाजे जा चुके मूर्तिकार राजेश कुमार 2014 में स्वयं संकट मोचन समारोह में उपासना करने की इच्छा व्यक्त की। इसे देखते हुए डॉ. विजय नाथ मिश्र ने सुझाया कि जब कोई ख्यात कलाकार मंच पर अपनी प्रस्तुति दे रहा हो, तब आप उसकी मूर्ति बनाओ।

पिछले दस बरस से राजेश कुमार इस समारोह में हाजिरी देने वाले मूर्धन्य कलाकारों पंडित शिव कुमार शर्मा, बांसुरी सम्राट पंडित हरि प्रसाद चौरसिया,अनूप जलोटा, राजेश्वरर आचार्य, पंडित माधव गुडी, पंडित जसराज, गुदेचा बंधु, रवीन्द्र जैन, कंकणा बनर्जी आदि का लाइव स्कल्प्चर गंगा की पावन माटी से बना चुके हैं। राजेश कुमार इन दिनों बिहार में अररिया जनपद में जवाहर नवोदय विद्यालय में बतौर कला अध्यापक कार्यरत हैं और इस वर्ष भी संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी हाजिरी लगाने पहुंच चुके हैं।

भोपाल में नवविवाहिता ने फांसी लगाई, मौत

परिजन बोले–पति के दूसरी महिला से संबंध थे, प्रताड़ित करता था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के छोला इलाके में नवविवाहिता ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। परिजनों का आरोप है कि पति की प्रताड़ना के चलते उसने यह कदम उठाया है। दो महीने पहले ही उसकी शादी की गई थी। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। भारती कुचबंदिया (23) पत्नी विशाल कुचबंदिया कैंची छोला इलाके की रहने वाली थी। दो महीने पहले 3 फरवरी सम्मेलन में उसकी शादी हुई थी। शादी के बाद से ही पति उसे परेशान करता था। कई-कई दिन तक घर नहीं लौटता था। मृतका के भाई राहुल ने बताया कि जीजा उसकी बहन को परेशान करता था। मारपीट करता था, दूसरी औरत के संपर्क में था। बहन को साथ रखने को राजी नहीं था। हमने कई बार समझाया लेकिन वह नहीं माना। मंगलवार को हम उसके ससुराल पहुंचे। वहां जीजा ने बहन के साथ विवाद किया था। वहां से बहन को भोपाल स्थित घर ले आए। रात के समय मां पास में किसी काम से गई थी। घर में और कोई भी नहीं था। तभी भारती ने अपने दुपट्टे का फंदा बनाकर एक कमरे में फांसी लगा ली।

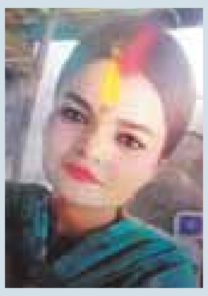

सुसाइड से पहले पति से हुआ था फोन पर विवाद– मृतका के भाई राहुल ने बताया कि घटना से ठीक पहले उसकी बहन भारती का अपने पति से फोन पर विवाद हुआ था। इस दौरान घर में मौजूद भतीजी ने दोनों के बीच का झगड़ा सुना।

राहुल के अनुसार, बहस के कुछ देर बाद उसी भतीजी ने भारती को फंदे पर लटका देखा और तुरंत आसपास के लोगों को सूचना दी। वहीं टीआई सुरेशचंद्र नागर ने बताया कि मौके से सुसाइड नोट नहीं मिला है। मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

सौरभ मामले में और लोगों पर हो सकती है एफआईआर

भोपाल (नप्र)। आरटीओ के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा और उसके कारोबार में सहयोगी रहे 12 लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर चुकी ईडी अब इस मामले में कुछ और लोगों पर केस दर्ज कर सकती है। इसके चलते ईडी विशेष न्यायाधीश की अदालत में केस दर्ज करने के बाद पूरक चालान पेश कर सकती है।

यह केस सौरभ के रिश्तेदारों तथा सौरभ को गोल्ड की सप्लाई करने वाले भोपाल के कुछ ज्वैलर्स पर दर्ज हो सकती है। जिन्हें समन जारी कर बयान लेने के लिए बुलाने की तैयारी है।

ईडी ने 8 अप्रैल को ईडी कोर्ट में पेश की गई चार्जशीट में जिन्हें आरोपी बनाया है, उसके बाद कुछ और लोगों की भूमिका सामने आई है। इसके बाद ईडी की टीम अब सौरभ की काली कमाई से जुड़े ऐसे लोगों पर शिकंजा कसने की तैयारी में है। ईडी के चालान में अभी सौरभ शर्मा की सास रेखा तिवारी, उनके साले की पत्नी अनुभा तिवारी, शरद जायसवाल की मां कृष्णा जायसवाल, राजमाता भारत माता शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति के उपाध्यक्ष दीपक अरोरा, मेंबर शुभम तिवारी आरोपी नहीं हैं। लेकिन अब इन्हें फिर समन जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया जा सकता है। इनके बयान के आधार पर इन्हें आरोपी बनाया जा सकता है।

एजुकेशन पोर्टल 3.0 में है मानव संसाधन से संबंधित व्यापक जानकारी

भोपाल(नप्र)। स्कूल शिक्षा विभाग ने नये शिक्षा सत्र एक अप्रैल, 2025 से एजुकेशन पोर्टल 3.0 तैयार किया है। इस पोर्टल में विभाग से जुड़ी मानव संसाधन की व्यापक जानकारी का समावेश किया गया है। इस पोर्टल से विभाग के कर्मचारियों का डाटाबेस तैयार किया गया है। पोर्टल में मानव संसाधन से संबंधित जानकारी को कर्मचारी और विकासखण्ड स्तर पर वेरीफाई किया गया है। इसमें विभाग के करीब 2 लाख 75 हजार कर्मचारियों की समस्त जानकारी पारदर्शी रूप से पोर्टल पर प्रदर्शित की गयी है। विभाग के पौने तीन लाख कर्मचारियों के स्थानांतरण को भी पारदर्शी माध्यम से स्थानांतरण नीति-2022 के आधार पर ऑनलाइन ट्रांसफर मॉड्यूल तैयार किया गया है। उच्च पद प्रभार एवं अतिथि शिक्षक प्रक्रिया को भी पोर्टल पर ऑनलाइन किया जा रहा है। विभाग के सभी कर्मचारियों को वेतन पर्ची उनके मोबाइल पर प्राप्त हो सके, ऐसी व्यवस्था विभाग द्वारा की गयी है।विभाग के कर्मचारी छोटी-छोटी समस्याओं के लिये जिला या मुख्यालय स्तर पर चक्कर न लगायें। इसके लिये उनकी शिकायतों निराकरण के लिये परिवेदना प्रणाली को ऑनलाइन किया गया है। पोर्टल में इंटीग्रेटेड डेशबोर्ड से मुख्यालय, जिला और विकासखण्ड स्तर पर समस्त गतिविधियों की मॉनीटरिंग किये जाने की व्यवस्था की गयी है। एजुकेशन पोर्टल 3.0 में एकीकृत डाटाबेस के आधार पर जानकारी तैयार की जा रही है।

जेनेटिक काउंसलिंग में समुदाय का सहयोग लिया जाए : राज्यपाल

समस्त रोगी और वाहकों को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराना ही लक्ष्य, आयुष लोक स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा समीक्षा बैठक हुई

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों में जेनेटिक काउंसलिंग की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। जेनेटिक काउंसलिंग कार्य में मध्यस्थों की भूमिका की संभावनाओं पर कार्य करते हुए समुदाय का सहयोग प्राप्त किया जाए। उन्होंने कहा है कि सिकल सेल एनीमिया आनुवंशिक रोग है। रोग को खत्म करने के लिए वैवाहिक और गर्भधारण संबंधी सावधानियां के बारे में सामुदायिक जन जागृति की दिशा में प्रभावी पहल जरूरी है। जेनेटिक काउंसलिंग कार्य में समुदाय के नेतृत्व और पंचायत पदाधिकारियों का सहयोग भी लिया जाना चाहिए।

राज्यपाल श्री पटेल राजभवन में जनजातीय प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल, आयुष मंत्री श्री इंदर सिंह परमार भी मौजूद थे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि रोगी को स्वस्थ बनाने के सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ प्रमाणित औषधियों और चिकित्सा पद्धतियों को स्वीकार किया जाना चाहिए। मध्यप्रदेश के वनों में प्रचुर मात्रा में वन औषधियों की उपलब्धता है। इन औषधियों के सिकल सेल रोगी को स्वस्थ बनाने के अनुभवों और उपयोग के परीक्षणों के प्रमाणीकरण का कार्य व्यापक स्तर पर तेज गति से किया जाए। लक्ष्य समस्त रोगी और वाहकों को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराना होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सिकल सेल एक जटिल रोग है, जो लगभग 21 प्रकार के रोगों का कारण बन सकता है। जरूरी है कि रोग प्रबंधन के कार्य बहुआयामी और एकीकृत स्वरूप में किए जाएं। समस्त रोगियों की उपचार व्यवस्थाओं के साथ ही वाहकों को भी आवश्यक स्वास्थ्य संबंधी सहयोग प्रदान किया जाए। स्वस्थ जीवन शैली के लिए मार्गदर्शन दिया जाए। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि रोग नियंत्रण प्रयासों को व्यक्ति केंद्रित किया जाए। हर स्तर पर औषधियों की पर्याप्त उपलब्धता हो। समस्त रोगियों और वाहकों को उपचार, औषधि और जेनेटिक काउंसलिंग की सेवाएं उपलब्ध हो। उन्होंने छात्रावासों के भोजन में लौह तत्व की उपलब्धता वाले खाद्य पदार्थों को जोड़ने की जरूरत बताई है। गर्भवती महिलाओं की सिकल सेल जांच, जेनेटिक परामर्श और नवजात शिशुओं के वैक्सीनेशन के प्लेटफार्म के रूप में आंगनवाड़ियों को शामिल करने के लिए कहा है।

बैठक में जनजाति प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री दीपक खांडेकर, राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के.सी. गुप्ता, प्रमुख सचिव आयुष श्री डी.पी. आहूजा, प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव एवं अन्य वरिष्ठ विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

पिंजरे में तोता लेकर भोपाल ईडी दफ्तर पहुंचे कांग्रेसी

पटवारी बोले– गांधी परिवार पर कार्रवाई अलोकतांत्रिक ; सीएम ने कहा– ये मोटी चमड़ी की पार्टी

भोपाल (नप्र)। कांग्रेस के अखबार नेशनल हेराल्ड और एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस में सोनिया और राहुल गांधी के खिलाफ चार्ज शीट पेश किए जाने के विरोध में बुधवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया।

पीसीसी चीफ जीतू पटवारी पिंजरे में प्रतीकात्मक तोता लेकर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के दफ्तर पहुंचे। कांग्रेस के प्रदर्शन को देखते हुए पुलिस ने मेन गेट बंद कर दिया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने बैरिकेड्स पर चढ़ने की कोशिश की तो पुलिस ने उन्हें रोक दिया।

पुलिस ने जब प्रदर्शनकारियों को ईडी ऑफिस तक नहीं जाने दिया तो कांग्रेस कार्यकर्ता तपती धूप में सड़क पर ही लेटकर नारेबाजी करने लगे। पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने सोनिया और राहुल गांधी को लेकर ईडी के एक्शन को अलोकतांत्रिक बताया तो सीएम मोहन यादव ने कांग्रेस को मोटी चमड़ी की पार्टी बताया।

ज्ञापन के साथ पिंजरे में रखा तोता भेंट किया– कांग्रेस नेताओं के खिलाफ चार्ज शीट पेश किए जाने का विरोध करते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ पीसीसी चीफ पटवारी प्रवर्तन निदेशालय के दफ्तर पिंजरे में प्रतीकात्मक तोता लेकर पहुंचे। इस दौरान पुलिस को ज्ञापन के साथ ही पिंजरे में रखा तोता भी भेंट किया।

पुलिस ने बैनर से ढका ईडी दफ्तर का बोर्ड– बीएसएनएल मुख्यालय के बाहर लगे ईडी ऑफिस के बोर्ड को पुलिस ने कांग्रेसियों के पहुंचने के पहले ही ढक दिया। यहां पहुंचने पर युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष मितेंद्र सिंह यादव ने बोर्ड से बैनर हटाने की कोशिश भी की, लेकिन पुलिस ने उन्हें जाने नहीं दिया। इस दौरान धक्का-मुक्की भी हुई।

ईडी बीजेपी का तोता बनकर काम कर रही– पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा कि सोनिया गांधी के खिलाफ की गई कार्रवाई पूरी तरह अलोकतांत्रिक है। ईडी ने 5 हजार से अधिक केस दर्ज किए, लेकिन पिछले 10 साल में उसका रिजल्ट शून्य रहा है। आज ईडी सिर्फ बीजेपी का तोता बनकर काम कर रही है।

दिग्विजय बोले– एजेंसियों का दुरुपयोग कर रहे

मामले में कांग्रेस के राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने कहा- भारतीय जनता पार्टी और आरएसएस मिलकर ईडी, आईटी और सीबीआई का एक राजनीतिक हथियार के रूप में दुरुपयोग कर रहे हैं। हम इसकी निंदा करते हैं।

कमलनाथ बोले– सरकार ने अपनी हताशा दिखाई–पूर्व सीएम कमलनाथ ने कहा कि नेशनल हेराल्ड मामले में भाजपा जिस प्रतिशोध की आग में गांधी परिवार को झुलसाना चाहती है।

कांग्रेस का प्रदर्शन, इंदौर में हुई किरकिरी, ईडी का ऑफिस ही नहीं ढूंढ पाए नेता

कांग्रेस पार्टी ने नेशनल हेराल्ड केस में ईडी की चार्जशीट के विरोध में देशभर में प्रदर्शन किया। इंदौर में कांग्रेस नेताओं की किरकिरी हो गई जब वे ईडी के पुराने दफ्तर पहुंच गए, जो शिफ्ट हो चुका था। इसके बाद प्रदर्शन का स्थान बदला गया, लेकिन फिर भी दो गुटों में बंटकर प्रदर्शन किया गया।कांग्रेस ने बुधवार को इसके विरोध में देशभर में प्रदर्शन कर रही है। इंदौर में इस मामले में कांग्रेस नेताओं की किरकिरी हो गई।

बीजेपी प्रदेश कार्यालय में भीमराव अंबेडकर सम्मान कार्यशाला का आयोजन

सीएम बोले– कांग्रेस मोटी चमड़ी की पार्टी ; ये लोग हमेशा शॉर्टकट अपनाते हैं

भोपाल (नप्र)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय में बुधवार को डॉ. भीमराव अंबेडकर सम्मान कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य संविधान के प्रति जागरूकता फैलाना और अंबेडकर जी के योगदान को सम्मान देना था। इस अवसर पर सभी कार्यकर्ताओं को संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ दिलाई गई।

कार्यक्रम में सीएम डॉ मोहन यादव, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लक्ष्मीकांत, राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, और एससी मोर्चे के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य सहित अनेक वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता मौजूद थे।

सीएम बोले– कांग्रेस मोटी चमड़ी की पार्टी– मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा, कांग्रेस मोटी चमड़ी की पार्टी है। खुद ही गलतियां करती है और फिर ईडी कार्यालय के बाहर धरना देती है। कांग्रेस के लोग संविधान की बात करते हैं, जबकि सबसे ज्यादा संविधान संशोधन भी उन्होंने ही किए हैं। ये लोग हमेशा शॉर्टकट अपनाते हैं, जैसे एग्जाम में 'गारंटी सक्सेस' वाली किताबें। लेकिन हमने मध्य प्रदेश में डॉ. भीमराव अंबेडकर के नाम पर 25 वीं सेंचुरी बनाई हैं। इसके साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महू से दिल्ली तक की रेल सेवा की शुरुआत की है, जो भोपाल होते हुए गुजरेगी।

सीएम यादव ने कहा कि महू में डॉ. अंबेडकर का स्मारक बनाया गया है। देश-विदेश से लोग यहां दर्शन के लिए आते हैं, इसलिए सरकार उनके रुकने की व्यवस्था सुनिश्चित कर रही है।

आज महिलाओं के खाते में आएंगे 1250 रुपए– इस दौरान सीएम यादव ने कहा कि रक्षाबंधन तो साल में एक बार आता है, लेकिन हमारे लिए हर महीने राखी का महत्व है। हर जिले की लाड़ली बहनों के खाते में ?1250 की राशि भेजी जा रही है। महिलाओं को गौशाला योजना से जोड़ा जाएगा। साथ ही सरकार 10 वर्षों तक महिलाओं के रोजगार की भरपाई करेगी।

दूध उत्पादन में 25 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा– इस दौरान मुख्यमंत्री ने कामधेनु योजना की घोषणा की। उन्होंने बताया कि इस योजना के माध्यम से दूध उत्पादन की क्षमता बढ़ाई जाएगी। मध्य प्रदेश, एशिया में दूध उत्पादन में तीसरे स्थान पर है और सरकार इसे पहले स्थान पर लाना चाहती है। इसके तहत 25 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा, और 25 से अधिक गायें रखने वालों को विशेष लाभ मिलेगा।

भोपाल में ड्राइवर ने डिवाइडर पर चढ़ाई बस, पलटी

बियर कंपनी के 15 कर्मचारी घायल, 4 गंभीर ; दूसरी बस ने ओवरटेक की कोशिश की थी

भोपाल (नप्र)। भोपाल-नर्मदापुरम रोड पर बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के सामने एक कंपनी की बस डिवाइडर से टकराने के बाद पलट गई। हादसे में बस में सवार ड्राइवर-कंडक्टर सहित सोम डिस्टिलरीज के करीब 15 कर्मचारी घायल हो गए। इनमें चार की हालत गंभीर बताई जा रही है।

हादसे के बाद राहगीरों और पुलिस ने रेस्क्यू कर सभी घायलों को घटना स्थल के पास ही स्थित प्राइवेट हॉस्पिटल पहुंचाया। ड्राइवर हेमंत, मनोज यादव और अनिल मीणा की हालत चिंताजनक है। वीडी शुक्ला नाम के एक व्यक्ति की हालत भी गंभीर है, जिसे वेंटिलेटर पर रखा गया है।

बाग सेवनिया टीआई अमित सोनी के मुताबिक बीयू के सामने बस बेकाबू होने के बाद डिवाइडर से टकराई और पलट गई। हादसा बुधवार दोपहर करीब 2:35 बजे हुआ। घटना की सूचना मिलते ही थाने से करीब 15 जवानों को मौके पर रवाना किया गया।

दूसरी बस के ओवरटेक करने से संतुलन बिगड़ा– प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बस सोम डिस्टिलरीज के कर्मचारियों को लेकर जा रही थी। तभी दूसरी बस ने ओवरटेक की कोशिश की। हादसे का शिकार बस उसके बेहद करीब थी। ड्राइवर ने बचने के लिए डिवाइडर पर चढ़ा दिया और बस अनियंत्रित होकर पलट गई।

घायल बोले– दूसरी बस के चक्कर में हादसा हुआ

बस में सवार जगदीश नाम के व्यक्ति ने बताया कि आनंद नगर से मंडीदीप जा रहे थे। दूसरी बस ने ओवरटेक करते समय हमारी बस को दबाया, हमारी बस भी स्पीड में थी। ड्राइवर ने ब्रेक लगाने का प्रयास किया, नहीं लगे, तब उसने बस को फुटपाथ पर चढ़ा दिया।

हादसे के बाद ट्रैफिक जाम के हालात

हादसे के बाद नर्मदापुरम रोड पर जाम के हालात बन गए। पुलिस क्रेन की मदद से बस को हटाकर रास्ता क्लियर करवा रही है। दोनों तरफ लंबा जाम लगा हुआ था। शुरुआती जांच में पता लगा है कि बस कर्मचारियों को लेकर मंडीदीप की ओर जा रही थी।

मायके से नहीं लौटी पत्नी, पति ने खाया जहर

भतीजे ने कहा– चाची ने लगाए थे केस, परेशान होकर चाचा ने की आत्महत्या

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरसिया इलाके में रहने वाले युवक ने मंगलवार की देर रात जहरीला पदार्थ खा लिया। इलाज के दौरान बुधवार की सुबह उनकी मौत हो गई। नौ साल से मायके में रह रही पत्नी उसके साथ रहने को तैयार नहीं थी। इसी बात को लेकर वह परेशान रहता था। वहीं परिजनों का आरोप है कि पत्नी ने युवक पर कई केस दर्ज करा रखे थे। इधर पुलिस का कहना है कि मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। बुधवार की दोपहर को पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। मोहन सिंह (34) पुत्र मातम सिंह इमलिया गांव का रहने वाला था और खेती किसानी करता था। नौ साल से उसकी पत्नी दोनों बेटियों को लेकर शमशाबाद में स्थित अपने मायके में रह रही है। मोहन और परिजनों ने कई बार उसे मनाने का प्रयास किया। हर बार पत्नी ने ससुराल लौटने से इनकार कर दिया।

सास ने दर्ज कराया था हत्या के प्रयास का केस

मृतक के भतीजे राजा राजपूत ने बताया कि चाची की मां ने चाचा मोहन पर हत्या के प्रयास का केस दर्ज करा रखा है। करीब एक साल पहले वह चाची को लेने मायके गए थे, वहां हुए विवाद के बाद चाचा ने चाची की मां से मारपीट की, तब उन पर हत्या के प्रयास का केस दर्ज हुआ था। चाची ने एक अन्य केस भी उन पर दर्ज करा रखा था। पेशी और पत्नी के नहीं लौटने से परेशान होकर उन्होंने कई बार जान देने की बात पूर्व में भी कही थी।

पुलिस ने शुरू की जांच

केस की जांच कर रहे कन्हैयालाल ने बताया कि मामले में मर्ग कायम कर लिया है। पीएम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। परिजनों के डिटेल बयान भी अभी दर्ज नहीं किए जा सके हैं। मामले की जांच की जा रही है।

एमपी ट्रांसको ने मानव जीवन के लिए घातक अनाधिकृत निर्माण तोड़े

भोपाल(नप्र)। मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) की एक्स्ट्रा हाईटेंशन लाइन के समीप के उस निर्माण को आज एमपी ट्रांसको के अधिकारियों की उपस्थिति में तोड़ा गया जिसके कारण कुछ दिन पूर्व शारदा नगर ,नारियल खेड़ा, भोपाल से गुजर रही 132 के व्ही भोपाल-लालघाटी एक्स्ट्रा हाई टेंशन लाइन के संपर्क में आने के कारण दो रहवासी गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

मकान में शेड लगाने के दौरान हुआ था हादसा– एम.पी. ट्रांसको के भोपाल में अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री एस. के. दुबे ने बताया कि विगत 12 अप्रैल को शारदा नगर, नारियल खेड़ा, भोपाल क्षेत्र में 132 केवी भोपाल-लालघाटी एक्स्ट्रा हाई टेंशन लाइन में ट्रिपिंग आई थी। इससे संबंधित लाइन में 9 मिनिट का व्यवधान रहा। लाइन पेट्रोलिंग करने पर यह संज्ञान में आया कि उक्त क्षेत्र से जा रही एक्स्ट्रा हाईटेंशन लाइन के बिल्कुल समीप एक मकान में सीमेंट की चादर का शेड लगाने के दरम्यांन यह हादसा हुआ, जिसमें दो व्यक्ति फरहान खान एवं गुड्डू खान इस एक्सट्रा हाईटेंशन लाइन के इंडक्शंन जोन में आने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए थे। इसके बाद क्षेत्र में मानव जीवन को सुरक्षित रखने के लिए एम.पी. ट्रांसको द्वारा यह कार्रवाई की गई।

इन निर्माणों को तोड़ा गया– एम.पी. ट्रांसको द्वारा की गई कार्रवाई में गुडडू खान मकान नंबर 470, खलील खान मकान नंबर 448 एवं नसीम खान मकान नंबर 361 के शारदा नगर, नारियल खेड़ा स्थित आवासों के अनाधिकृत एवं मानव जीवन के लिए घातक निर्माणों को तोड़ा गया।

भोपाल में दिये गये 900 नोटिस– एसीई श्री दुबे ने बताया कि भोपाल में ऐसे लगभग 275 स्थान चिन्हित किए गए हैं, जहां किए गए निर्माण मानव जीवन के लिए घातक और असुरक्षित है। यहाँ अनाधिकृत निर्माण पाया गया है, उनके भवन मालिकों को करीब 900 नोटिस विगत वर्षों में जारी किये गए हैं। हादसों के लिए अति संवेदनशील इन क्षेत्रों के मकान मालिकों को पूर्व में भी नोटिस जारी किये गए हैं। अब उन्हें पुनः नोटिस देने के साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी समझाइश दी जा रही है।

संवेदनशील क्षेत्र

भोपाल में मानव जीवन के लिए घातक और संवेदनशील एक्स्ट्रा हाईटेंशन लाइन के समीप जहां निर्माण हुए हैं उनमें गोविंदपुरा इंड्रस्टियल एरिया, करौंद, रतनपुरा कॉलोनी, देवकीनगर, लालघाटी, नारियल खेड़ा, जैन कॉलोनी, आनंद नगर, मारूति सुजुकी पेंटिग फैक्ट्री, साईनाथ इंटरप्राईजेस, विश्वकर्मा नगर शिव नगर, बैरागढ़, रतन कालोनी शारदा नगर के क्षेत्र शामिल हैं।

कार्रवाई में ये रहे शामिल

अनाधिकृत निर्माण को तोड़ने की कार्रवाई में एमपी ट्रांसको के कार्यपालन अभियंता श्री रवि चौरसिया, सहायक अभियंता श्री अंकित महरोलिया, वरिष्ठ लाइन मैन स्टाफ श्री पूनाजी गलफाट, राम प्रीत, आउटसोर्स कर्मी सतीश और राजेन्द्र भारती सहित अन्य शामिल रहे, जिन्होने पूरी सजगता और सतर्कता से मानव जीवन के लिए घातक इन निर्माणों को तुड़वाकर उनका जीवन सुरक्षित किया।

संपादकीय

बिहार: सीएम फेस पर घमासान

बिहार विधानसभा चुनाव में अभी छः महीने का वक्त है, लेकिन दो प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक गठबंधनों एनडीए और इंडिया में अभी से सीएम चेहरे को लेकर घमासान शुरू हो गया है। हाल में राज्य के वरिष्ठ भाजपा नेता व पूर्व मंत्री अश्विनी चौबे ने यह बयान देकर खलबली मचा दी थी कि नीतीश कुमार की वरिष्ठता इतनी हो गई है कि उन्हें अब मुख्यमंत्री से ज्यादा बड़ा पद मिलना चाहिए। चौबे के बयान का जदयू ने तुरंत खंडन किया और भाजपा ने भी उसे चौबे का निजी बयान बताया। लेकिन चौबे ने सियासत के ताल में जो पत्थर फेंका, वह अनायास नहीं था। इससे भी बड़ा द्वंद्व अब राज्य के दो अति पिछड़े वर्ग से आने वाले और एक ही गठबंधन के दो बड़े नेताओं के बीच शुरू हो गया है। हरियाणा में भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने रविवार को बयान दिया कि बिहार में विस चुनाव बिहार के उपमुख्यमंत्री और युवा भाजपा नेता सम्राट चौधरी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। क्योंकि वर्तमान सीएम नीतीश कुमार मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं हैं। अफसर भी उनकी नहीं सुनते। सैनी के बयान पर राज्य में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने एनडीए पर तंज कसा कि वहां सभी मुख्यमंत्री पद के हकदार हैं। हालांकि सैनी के बयान के सियासी खतरों को भांपकर खुद सम्राट चौधरी ने कहा कि बिहार में एनडीए का चेहरा नीतीश कुमार ही हैं। विस चुनाव उन्हीं के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। विपक्षी राजद केवल भ्रम फैलाना चाहती है। हालांकि खुद विपक्षी महागठबंधन मंच सीएम फेस को लेकर एकमत नहीं है। लालू प्रसाद यादव और राजद अपने नेता और लालू के बेटे तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं तो महागठबंधन में शामिल कांग्रेस की तरफ से पार्टी के नए प्रदेशाध्यक्ष राजेश राम का नाम बढ़ाया गया है। यह नाम कांग्रेस के गोपालगंज विधायक यशवंत कुमार ने सुझाया है। यशवंत के बयान राजद और महागठबंधन में खलबली मच गई। राजद की आपत्ति के बाद कांग्रेस ने उन्हें कारण बताओ नोटिस थमा कर पर्यवेक्षक पद से भी हटा दिया है। उधर खुद राजेश राम ने सफाई दी है कि मैं कांग्रेस का एक साधारण कार्यकर्ता हूं। पार्टी ने मुझे गठबंधन को मजबूती देने का काम सौंपा है, मैं उसी में लगा हुआ हूं। जिस तरह की बात सामने आ रही है, मैंने उनका बयान सुना नहीं है, लेकिन अगर फिर भी उन्होंने ऐसा कहा है तो उस पर तत्काल विराम लगना चाहिए। अगर किसी की भावना का असर संबंधों पर आ रही है तो यह कतई ठीक नहीं है। राजेश राम ने भले ही विनम्रतावश यह सब कहा हो, लेकिन इससे यह तो उजागर हो ही गया कि महागठबंधन में भी सीएम फेस को लेकर सब कुछ ठीक नहीं है। वैसे तेजस्वी यादव नीतीश कुमार सरकार में उपमुख्यमंत्री रहे हैं, लेकिन बिहार की जनता उन्हे मुख्यमंत्री चेहरे के रूप में कितना स्वीकार करेगी, यह अभी कहना मुश्किल है। बिहार के संदर्भ यह जमीनी हकीकत है कि चाहे एनडीए हो या फिर इंडिया, किसी के पास भी नीतीश के मुकाबिल कोई चेहरा नहीं है। यानी नीतीश हर साल में जरूरी हैं। इसीलिए भाजपा बीच-बीच में टेस्टिंग भले कर रही हो, लेकिन चुनाव तक नीतीश को हटाने और विस चुनाव उनके बगैर कराने की नहीं सोच सकती। माना जा रहा है कि भाजपा भी अब उस अति पिछड़े वर्ग पर दांव खेल सकती है, जिसके नेता नीतीश कुमार हैं। उनकी काट के रूप में भाजपा ने सम्राट चौधरी को आगे बढ़ाया है, जो युवा भी हैं। बहरहाल सीएम फेस को लेकर दोनों गठबंधनों में असमंजस चुनावी नुकसान पहुंचा सकता है। इससे बचा जाना चाहिए।

तमिलनाडु में भाजपा व अन्नाद्रमुक पार्टी का भविष्य

संसद का बजट सत्र अभी समाप्त हुआ है और सत्र के अंत में, लोकसभा और राज्यसभा में मोदी सरकार द्वारा पेश किए गए वक्फ संशोधन विधेयक पर एक हंगामेदार बहस हुई। विधेयक का विरोध करने के लिए भाजपा का विपक्ष एक साथ आया था। कांग्रेस, सपा, तृणमूल कांग्रेस,डीएमके सहित विपक्षी दल। एआईएडीएमके ने भी इसी तरह की भावनाएं व्यक्त की थीं। इतना ही नहीं एआईएडीएमके के सांसदों ने राज्यसभा में भी वक्फ सुधार सरकार के खिलाफ वोट किया था। तो अब सवाल यह उठता है कि अचानक ऐसा क्या हुआ कि बीजेपी और एआईएडीएमके दोनों ही बहुत करीब आ गए? अमित शाह एक राजनयिक राजनेता हैं और राजनीतिक कूटनीति में चाणक्य के रूप में जाने जाते हैं।

नजरिया

अशोक भाटिया

लेखक स्तंभकार हैं।

4 अप्रैल को तमिल नववर्ष से पहले, भारतीय जनता पार्टी ने अपने पूर्व सहयोगी ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के साथ राज्य में गठबंधन बनाने की घोषणा की। हालाँकि एआईएडीएमके ने एक समय तमिलनाडु के द्रविड़-प्रभुत्व वाले राजनीतिक परिदृश्य में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी, लेकिन अब इसका वही प्रभाव नहीं है जो पूर्व मुख्यमंत्री जे। जयललिता के समय था। पूर्व मुख्यमंत्री एडप्पाडी के। पलानीस्वामी (ईपीएस) की अगुआई वाली पार्टी अपने पार्टी सहयोगी और पूर्व मुख्यमंत्री ओ. पनीरसेल्वम (ओपीएस) के साथ नियंत्रण के लिए तीखे संघर्ष के बाद सत्ता में बनी हुई है। 2016 से 2021 तक भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार से जुड़े रहने के कारण, ईपीएस ने भाजपा नेतृत्व के साथ कामकाजी संबंध का आनंद लिया। पिछले हफ्ते चेन्नई में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा की गई घोषणा में भी स्पष्ट राजनीतिक संदेश था कि ईपीएस मौजूदा एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली डीएमके गठबंधन सरकार के खिलाफ़ लड़ाई का नेतृत्व कर रहे हैं।

गौरतलब है कि संसद का बजट सत्र अभी समाप्त हुआ है और सत्र के अंत में, लोकसभा और राज्यसभा में मोदी सरकार द्वारा पेश किए गए वक्फ संशोधन विधेयक पर एक हंगामेदार बहस हुई। विधेयक का विरोध करने के लिए भाजपा का विपक्ष एक साथ आया था। कांग्रेस, सपा, तृणमूल कांग्रेस,डीएमके सहित विपक्षी दल। एआईएडीएमके ने भी इसी तरह की भावनाएं व्यक्त की थीं। इतना ही नहीं एआईएडीएमके के सांसदों ने राज्यसभा में भी वक्फ सुधार सरकार के खिलाफ वोट किया था। तो अब सवाल यह उठता है कि अचानक ऐसा क्या हुआ कि बीजेपी और एआईएडीएमके दोनों ही बहुत करीब आ गए? अमित शाह एक राजनयिक राजनेता हैं और राजनीतिक कूटनीति में चाणक्य के रूप में जाने जाते हैं। एक राजनीतिक दल जो संसद में भाजपा का समर्थन नहीं करता है, वह राजनीतिक दल जिसने पिछले चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन तोड़ दिया था, एआईएडीएमके, वह पार्टी जिसने एनडीए में फिर से प्रवेश किया। ये सारी घटनाएं इतनी तेजी से घटीं कि इसने देश के सभी राजनीतिक दलों को हैरान कर दिया। तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के लिए एआईएडीएमके पार्टी के साथ जल्दबाजी में गठबंधन क्यों किया गया, इसका रहस्य कई लोगों के सामने नहीं आया है।

इससे पहले, भाजपा ने पश्चिम बंगाल में अपनी ताकत बढ़ाने में अपनी सारी ऊर्जा लगा दी थी, और अब भाजपा अन्नाद्रमुक को फिर से गठबंधन करके चेन्नई के सिंहासन से एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली द्रमुक सरकार को गिराने की पूरी कोशिश कर रही है। भाजपा पिछले 10-12 वर्षों से तमिलनाडु में पार्टी का विस्तार करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है, लेकिन शीर्ष नेतृत्व ने महसूस किया है कि द्रमुक बनाम अन्नाद्रमुक की लड़ाई में भाजपा का कोई लाभ नहीं है। भाजपा और एआईएडीएमके दोनों ने महसूस किया है कि अगर वे डीएमके को सत्ता से हटाना चाहते हैं तो उन्हें एक साथ आने की जरूरत है। यही कारण है कि अमित शाह ने खुद चेन्नई में घोषणा की कि भाजपा-अन्नाद्रमुक गठबंधन राजनीतिक उदासीनता से आगामी विधानसभा चुनाव लड़ेंगे।

भाजपा के निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष अन्ना मलाई अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन बनाने में एक बड़ी बाधा थे। अन्ना मलाई खुद एक जुझारू नेता हैं। उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि उन्होंने डीएमके सरकार के खिलाफ लड़ते हुए पार्टी में जान डाल दी और पार्टी की नींव मजबूत की। जहां भाजपा से कोई नहीं पूछता, भाजपा से कोई नहीं पूछ रहा है, भाजपा का कोई कैडर नहीं। अन्ना मलाई ने ऐसे राज्यों

में भाजपा के वोट शेयर को तीन से 11 प्रतिशत तक बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसीलिए भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व के लिए अन्ना मलाई के प्रदर्शन को नजरअंदाज करना और उन्हें पद से हटाना मुश्किल था। अन्ना मलाई एक सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी हैं। वे युवा हैं। 2019 में, उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली और भाजपा में शामिल हो गए। उन्होंने अपने दमदार काम से मोदी-शाह का दिल भी जीत लिया। उनके काम को देखते हुए उन्हें तमिलनाडु के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई। प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने सत्ताधारी डीएमके सरकार के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया। वे स्टालिन सरकार को परेशान करते रहे।

स्पष्ट है कि सबको लग रहा था बीजेपी तमिलनाडु में 2026 का विधानसभा चुनाव अन्ना मलाई के नेतृत्व में लड़ेगी। यह भी चर्चा थी कि अन्ना मलाई आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा के मुख्यमंत्री पद का चेहरा होंगे। सभी ने महसूस किया कि राजनीति में ऐसा नहीं होता जैसा दिखता है। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने रोटी पलट दी। अचानक अन्ना मलाई को पार्टी ने प्रदेश अध्यक्ष पद से हटा दिया था। शीर्ष नेतृत्व को यकीन था कि द्रमुक के साथ कोई गठबंधन नहीं होगा जब तक कि उन्हें राज्य अध्यक्ष के पद से हटा नहीं दिया जाता। इसलिए पार्टी ने उनके स्थान पर नयनार नागेंद्र को नियुक्त किया और तुरंत भाजपा-द्रमुक गठबंधन के गठन की घोषणा की। 64 वर्षीय नयनार नागेंद्रन ने 12 अप्रैल को भाजपा के तमिलनाडु राज्य अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला। नागेंद्रन एक मृदुभाषी व्यक्तित्व हैं। वे दक्षिण तिरुनेलवेली निर्वाचन क्षेत्र से विधायक हैं। वह अन्ना मलाई की तरह आक्रामक नहीं हैं। तो पार्टी के एजेंडे को कैसे लागू किया जाएगा? गठबंधन भाजपा एआईएडीएमके नेताओं की बातों को स्वीकार कर गठबंधन चलाना चाहती है। स्टालिन सरकार को हराना ही भाजपा-एआईएडीएमके गठबंधन के सामने एकमात्र एजेंडा है।

लोकसभा चुनाव के मामले में तमिलनाडु पांचवां सबसे बड़ा राज्य है। भाजपा ने कर्नाटक में पैठ बनाई, लेकिन केरल और तमिलनाडु में ज्यादा पैठ नहीं बना सकी, और अब, 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले, भाजपा ने पार्टी विस्तार का एजेंडा तैयार करने के लिए अन्नाद्रमुक को फिर से गठबंधन किया है।भाजपा ने तमिलनाडु में 2024 का लोकसभा चुनाव अपने दम पर लड़ा था। इस चुनाव में भाजपा को 11 फीसदी वोट मिले थे। लोकसभा चुनाव में भाजपा का कोई भी उम्मीदवार सांसद नहीं चुना गया था। तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष अन्ना मलाई भी हार गए थे। भाजपा आलाकमान ने महसूस किया कि पार्टी का तमिलनाडु में कोई बड़ा आधार नहीं है और अपने दम पर चुनाव लड़ना लाभदायक नहीं है।

जैसे ही एक पुराने सहयोगी के साथ आगामी विधानसभा चुनाव लड़ने का विचार पार्टी में जोर पकड़ने लगा, एआईएडीएमके पार्टी, जिसने भाजपा छोड़ दी थी, को फिर से भाजपा द्वारा दरकिनार कर दिया गया। संसद सत्र के अंत में, एआईएडीएमके नेता दिल्ली गए और अमित शाह के साथ बातचीत की और अमितभाई भाजपा-अन्नाद्रमुक गठबंधन की घोषणा करने के लिए चेन्नई गए।2024 के लोकसभा चुनावों में, डीएमके सांसदों ने तमिलनाडु की सभी 39 सीटों पर जीत हासिल की। डीएमके को 46।9 प्रतिशत वोट मिले। यह 1991 के बाद से डीएमके द्वारा सबसे अधिक वोट शेयर था। 2024 में, भाजपा ने तमिलनाडु की 39 लोकसभा सीटों में से 23 पर चुनाव लड़ा, लेकिन हर जगह हार गई। भाजपा को 2019 के लोकसभा चुनावों में 3.6 प्रतिशत, 2024 में 5.5 प्रतिशत वोट मिले। 2009 में, इसे 2.3 प्रतिशत वोट और 2004 में 5.1 प्रतिशत वोट मिले। द्रमुक के पास अन्नाद्रमुक और भाजपा की तुलना में बड़ा समर्थन आधार है। स्टालिन के पास पलानीस्वामी की तुलना में बड़ा समर्थन आधार है, लेकिन उन्हें सत्ता विरोधी लहर से भी पीड़ित होने की संभावना है। तमिलनाडु में, भाजपा ने अन्नाद्रमुक को महत्व दिया है। डेढ़ साल के अंतराल के बाद, भाजपा और अन्नाद्रमुक ने गठबंधन में फिर से प्रवेश किया है।

हाल ही में आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) नेतृत्व का मानना रहा है कि तमिलनाडु में डीएमके का मुकाबला करने के लिए भाजपा के पास मजबूत कैडर बेस की कमी है। भाजपा का मानना है कि एआईएडीएमके के साथ गठबंधन अगले साल विधानसभा चुनावों से पहले स्टालिन सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था को प्रमुख मुद्दे बनाने में एक ताकत के रूप में काम करेगा। संघ के लिए द्रविड़ मतदाता अब द्रविड़ पार्टियों के पक्ष में चुनावी यथास्थिति में विश्वास नहीं करता। भाजपा के एक अंदरूनी सूत्र ने कहा, 'अब आजीविका, काम के अवसर और भ्रष्टाचार बड़े मुद्दे हैं, और हिंदी, हिंदू और हिंदुत्व के खिलाफ भावनाओं का भड़कना भी बड़ा मुद्दा है।'

ज्ञात हो कि किसी समय तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता, जिन्हें अम्मा के नाम से जाना जाता है, एआईएडीएमके की शक्तिशाली नेता थीं। मुख्यमंत्री बनने से पहले, वह तमिलनाडु विधानसभा में विपक्ष की नेता थीं। 25 मार्च, 1989 की घटना ने विधानसभा में भारी हंगामा किया था। हंगामा मच गया। उस दिन राज्य का बजट पेश किया जाना था। हालांकि, जैसे ही विपक्ष की नेता जयललिता ने आरोप लगाया कि पुलिस ने विपक्षी नेताओं के खिलाफ अवैध कार्रवाई की है, न केवल उनके फोन टैप किए जा रहे थे, द्रमुक और अन्नाद्रमुक के बीच खींचतान शुरू हो गई। किसी ने जयललिता की साड़ी खींची, किसी ने उसके बाल खींचे। एक ऐसी घटना जिसने संसदीय लोकतंत्र को काला कर दिया। जयललिता ने संकोच नहीं किया। उसने दृढ़ता से कहा- आज मेरे साथ जो हुआ उसका जवाब मैं जरूर दूंगी। अगली बार जब मैं सदन में कदम रखूंगी, मुख्यमंत्री के रूप में.... जयललिता दो साल बाद मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर सदन में दोबारा पहुंची हैं। उसने अपनी बात सच कर दी। 1991 से 2016 तक, वह 14 साल से अधिक यानी 5238 दिनों तक तमिलनाडु की मुख्यमंत्री रहीं।

समय का अनुशासन, न्याय का असली आभूषण

मुद्दा

प्रो. आरके जैन अरिजीत

लेखक स्तंभकार हैं।

हर पल, जब कोई इंसाफ की गुहार लेकर अदालत के दरवाजे पर दस्तक देता है, समय उसकी सबसे कठोर अग्निपरीक्षा बन जाता है। इंसाफ महज हक दिलाना नहीं, बल्कि उसे सही वक्त पर सौंपने का अटूट वचन है। मगर जब सुर्खियां चीखकर बताती हैं कि राष्ट्रपति को विधेयकों पर तीन महीने में फैसला लेने का फरमान सुनाया गया, और उसी पल यह खबर गूंजती है कि सुप्रीम कोर्ट ने चार दशक बाद एक बेटी को उसका हक वापस किया, तो दिल सन्नाटे में डूब जाता है। ये खबरें सिर्फ अखबारों की स्याही नहीं, बल्कि एक कराहती पुकार हैं– क्या हमारी न्यायपालिका, जो लोकतंत्र का सबसे अडिग किला है, समय की इस आग में तप पा रही है? क्या उसमें अपनी चाल को तेज करने और खामियों को बेदखल करने का जज्बा बाकी है?

न्यायपालिका: समय की कठघरे में– हमारी न्यायपालिका लोकतंत्र का वह जगमगाता सूरज है, जो हर अंधेरे को चीरने का दम रखता है। यह वह पवित्र मंदिर है, जहां सबसे कमजोर नागरिक भी अपने हक की फरियाद लेकर बेखौफ पहुंचता है, यह यकीन लिए कि उसकी पुकार सुनी जाएगी। मगर जब यह पुकार सालों, बल्कि दशकों तक गूंजती रहती है और जवाब में सिर्फ सन्नाटा मिलता है, तो वह मंदिर भी धुंध की चादर में लिपटा सा दिखने लगता है। आंकड़े इस कड़वे सच को और बेनकाब करते हैं। नेशनल ज्यूडिशियल डेटा ग्रिड (एनजेडीजी) की सितंबर 2024 की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत की अदालतों में 4.9 करोड़ से ज्यादा मामले लंबित पड़े हैं, जिनमें 1.3 करोड़ मामले पांच साल से भी पुराने हैं। सुप्रीम कोर्ट के कंधों पर ही 80,000 से अधिक मामलों का बोझ है। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, बल्कि उन लाखों जिंदगियों की त्रासदी हैं, जो इंसाफ की आस में अदालतों के चक्कर काटते-काटते थक हार जाती हैं। जब एक बेटी को अपने हक के लिए 40 साल तक जूझना पड़े, जैसा कि हाल के सुप्रीम कोर्ट के फैसले में सामने आया, तो यह महज देरी नहीं, बल्कि इंसाफ का गला घोंटने जैसा है। ऐसी देरी न सिर्फ पीड़ितों के विश्वास को चूर करती है, बल्कि न्यायपालिका की साख को भी कटघरे में खड़ा कर देती है।

दोहरा मापदंड: समय की पाबंदी का सवाल– जब सुप्रीम कोर्ट कार्यपालिका को समय की सख्त घड़ी थमाता है, मसलन राष्ट्रपति को विधेयकों पर तीन महीने की मोहलत, तो एक तीखा सवाल हवा में तैरता है–क्या वह खुद इस घड़ी की सुइयों के साथ कदमताल कर पा रही है? एक तरफ वह दूसरों को फुर्ती का मंत्र सिखाती है, दूसरी तरफ उसके अपने गलियारों में लंबित मुकदमों की फाइलें धूल चाट रही हैं। यह दोमुंहा रवैया उसकी विश्वसनीयता को कठघरे में खड़ा करता है। अगर समय ही न्याय का असली आलम है, तो क्या पहले अपने चौबारे को नहीं संवारना चाहिए? यह नजारा चीख-चीखकर कह रहा है-न्याय के मंदिर में सुधार की लौ अब और तेज जलनी चाहिए, पहले भीतर, फिर बाहर।

चुनौतियां: समय के आगे बौनी व्यवस्था– भारत जैसे विशाल और विविध देश में, जहां हर वर्ग न्यायपालिका से उम्मीद भरी नजरों से देखता है, समय पर न्याय देना एक बड़ी चुनौती है। सबसे गंभीर समस्या है जजों की कमी–2024 तक भारत में प्रति 10 लाख लोगों पर मात्र 21 जज थे, जबकि अमेरिका में यह संख्या 150 के आसपास है। जटिल कागजी कार्यवाही और तकनीकी संसाधनों की कमी इस देरी को और गहराती है। नतीजतन, समय न्याय की राह में सबसे बड़ा रोड़ा बन जाता है। फिर भी, यह निराश होने का समय नहीं है। यदि न्यायपालिका को समाज का सच्चा मार्गदर्शक बनना है, तो उसे समय के साथ कदम मिलाकर चलना होगा।

सुधार की राह: समय को पकड़ने का जज्बा– न्यायपालिका को समय के साथ कदम मिलाने के लिए निर्णायक और त्वरित सुधारों की जरूरत है। पहला कदम है तकनीक को अपनाना–ई-कोर्ट परियोजना को गति देना, ऑनलाइन सुनवाई को सर्वसुलभ बनाना और डिजिटल रिकॉर्ड-कीपिंग को अचूक करना। 2023 में सुप्रीम कोर्ट ने 3.3 लाख से अधिक मामलों की वर्चुअल सुनवाई की, जो एक सशक्त शुरुआत है। दूसरा, फास्ट-ट्रैक कोर्ट्स की संख्या में भारी वृद्धि जरूरी है, खासकर महिलाओं, बच्चों और कमजोर वर्गों के लिए। वर्तमान में मात्र 800 फास्ट-ट्रैक कोर्ट्स हैं, जो मांग की तुलना में नाकाफी हैं। तीसरा, जजों की भर्ती, प्रशिक्षण और संख्या में इजाफा अनिवार्य है, साथ ही उन्हें आधुनिक कानूनी और तकनीकी ज्ञान से सुसज्जित करना होगा। सबसे महत्वपूर्ण, जवाबदेही सुनिश्चित करनी होगी-फैसलों में देरी के कारणों को पारदर्शी बनाना और समयबद्ध न्याय की नीति लागू करना विश्वास बहाली का आधार बनेगा।

आत्मावलोकन: समय से बड़ा सुधारक कोई नहीं– आत्मावलोकन कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत का प्रतीक है। जब कोई संस्था अपनी खामियों का ईमानदारी से सामना करती है, तभी वह समाज का अटूट भरोसा अर्जित करती है। न्यायपालिका को अपनी सुस्त गति, लंबित मामलों के पहाड़ और फैसलों में असमानता जैसे गंभीर सवालों पर ठहरकर विचार करना होगा। यह महज एक संस्था की बात नहीं, बल्कि उस हर व्यक्ति की पुकार है, जो न्याय की उम्मीद में जिंदगी का अनमोल वक्त कोर्ट-कचहरी में गंवा देता है। समय पर न्याय न मिलना केवल देरी नहीं, बल्कि न्याय का इनकार है। यदि न्यायपालिका को समाज का सच्चा पथ-प्रदर्शक बनना है, तो उसे सबसे पहले अपनी रफ्तार पर सवाल उठाने होंगे।

लोकतंत्र की ताकत: समय पर इंसाफ– जब न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका–हर संस्था समय के साथ तालमेल बिठाकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करती है, तभी लोकतंत्र की गरिमा सिरमौर बनती है। न्यायपालिका को अपनी भूमिका का नये सिरे से मूल्यांकन करना होगा–खामियों को निडरता से स्वीकारते हुए समयबद्ध न्याय का अटल संकल्प लेना होगा। क्योंकि अगर न्याय की नींव डगमगाई, तो कोई भी समाज देर तक टिका नहीं रह सकता। समय वह कसौटी है, जो हर संस्था की सत्यता परखता है। यदि न्यायपालिका इस कसौटी पर खरी उतरना चाहती है, तो उसे अपनी गति को तेज करना होगा।

नई सुबह: समय पर इंसाफ का वादा– न्यायपालिका वह दीपक है, जो समाज को अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाता है। यदि यह दीपक मंद पड़ जाए, तो इसे फिर से प्रज्वलित करना हम सबका कर्तव्य है। आत्मावलोकन की निडरता और सुधार की ज्वाला के साथ, न्यायपालिका न केवल अपने गौरव को पुनः स्थापित कर सकती है, बल्कि हर नागरिक के लिए वह सुबह ला सकती है, जहां न्याय सिर्फ सपना नहीं, समयबद्ध हकीकत हो। समय की पाबंदी केवल एक नियम नहीं, बल्कि न्याय का प्राण है–यह वह आधार है, जो भरोसे को अटल बनाता है। यह सुबह तभी साकार होगी, जब न्यायपालिका न केवल दूसरों को समय का पाठ पढ़ाए, बल्कि स्वयं उसे जीए। समय की पुकार है कि वह अपनी कमियों को दूर करे, गति को तीव्र करे और यह विश्वास दिलाए कि न्याय की राह में कोई पीछे नहीं छूटेगा।

हीटवेव से बचाव ही उपचार है

सेहत

बाल मुकुन्द ओझा

लेखक स्तंभकार हैं।

गर्मी अकेले नहीं आती बल्कि अपने साथ-कई तरह की परेशानियां भी लेकर आती है। इनमें हीटवेव या लू की समस्या प्रमुख है। गर्मी के मौसम में शुष्क और बेहद गर्म हवा चलने को लू कहा जाता है। उत्तर भारत इस समय हीटवेव की चपेट में है। यह हीट वेव या लू है क्या, ऐसे में हर खास और आम को यह जानना जरूरी है। साधारण शब्दों में हीट वेव अत्यधिक गर्म मौसम को कहते है जो आमतौर पर दो या उससे अधिक दिनों तक रहता है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार जब तापमान किसी दिए गए क्षेत्र के सामान्य औसत से अधिक हो जाता है तो उसे हीट वेव कहते हैं। तापमान 46 डिग्री को पार कर चुका है। ये घटनाएं मौसम में दिन-प्रतिदिन बदलाव का एक स्वाभाविक हिस्सा हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण देश में हर साल मरने वालों की संख्या भी बढ़ रही है। पिछले दो दशक में हीटवेव मौत का दूसरा नाम बन गया है। इस दौरान इसने 15 हजार से अधिक जानें ले ली है। पुख्ता जानकारी के मुताबिक 2024 में हीट वेव की वजह से 733 मौतें हुईं, जबकि आईएमडी के अनुसार, 2023 में इससे 264 लोगों की मौत हुई थी। जबकि 2022 में हीट वेव से 30 लोग मारे गए। यह आंकड़ा बताता है हर साल हीट वेव से मौतों की संख्या में वृद्धि दर वृद्धि हुई है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि 2012 से 2024 के बीच हीट वेव के कारण 12 हजार से अधिक लोगों की मौत हुई। यह भी एक तथ्य है कि हीट वेव से हर साल हजारों लोग झुलस कर अस्पतालों में अपना उपचार कराते है। बहुत से लोग घर पर प्राकृतिक उपचार करते है। हीट वेव सामान्य जन जीवन को बुरी तरह प्रभावित करती हैं। हीट वेव मानव के साथ पशु जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक हीट वेव के स्वास्थ्य प्रभावों में आमतौर पर पानी की कमी (डिहाइड्रेशन), ऐंठन, उष्माघात आदि शामिल होते हैं। 39 डिग्री सेल्सियस से कम बुखार, सूजन और बेहोशी आमतौर पर ऐंठन के लक्षण होते हैं। थकान, कमजोरी, चक्कर आना, सिरदर्द, उल्टी, मांसपेशियां ऐंठन और पसीना लू लगने के संकेत देते हैं। उष्माघात के लक्षणों में शरीर का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक, दौरे या कोमा शामिल हैं। यह एक घातक स्थिति मानी जाती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक हीटवेव ने भारत में 50 वर्षों में 17,000 से अधिक लोगों की जान ले ली।

देशभर में भीषण गर्मी और हीट वेव का अलर्ट जारी हो चुका है। वैज्ञानिकों के मुताबिक मैदानी क्षेत्र में जब भी तापमान 40 डिग्री या उससे अधिक हो जाता है तब लू या हीट वेव का असर दिखने लगता है। मौसम विभाग के मुताबिक जब कभी मैदानी इलाकों का अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस तक और पहाड़ी क्षेत्रों का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो हीट वेव या लू चलने लगती है और यह स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। वहीं अत्यधिक गर्म मौसम की अवधि को हीट वेव कहते हैं जो आमतौर पर तीन या अधिक दिनों तक रहता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हीट वेव, चरम गर्म मौसम की लंबी अवधि होती है जो मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। भारत एक उष्णकटिबंधीय देश होने के कारण विशेष रूप से हीट वेव के प्रति अधिक संवेदनशील है, जो हाल के वर्षों में लगातार और अधिक तीव्र हो गई है। जैसे-जैसे पृथ्वी की जलवायु गर्म होती जा रही है, वैसे-वैसे दिन और रात सामान्य से अधिक गर्म होते जा रहे हैं और हीट वेव की घटनाएं बढ़ जाती हैं। इससे मौतों और बीमारियों की संभावनाएं बढ़ जाती है। हीट वेव का प्रभाव ज्यादातर देश के पंजाब, हरियाणा, ओडिशा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और कर्नाटक में देखा जा सकता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अप्रैल फूल के चक्कर में खुद अप्रैल फूल बन गया

व्यंग्य

प्रकाश हेमावत

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पिछले दिनों देश के प्रतिष्ठित समाचार पत्र 'लटकता खंजर' में व्यंग्य की दृष्टि से शानदार पंच मारने वाला वजनदार तरीके से जानदार व्यंग्य 'आओ अप्रैल फूल बनाएं' शीर्षक से 1 अप्रैल को प्रकाशित हुआ । खुशी के मारे आंखें चुंधिया गईं मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा वह इसलिए कि, प्रकाशित व्यंग्य पर संपादक के द्वारा प्राप्त सूचना के अनुसार व्यंग्य का मानदेय राशि रू. 2000 देने की बात वाट्सएप के माध्यम से प्राप्त हुई । सुचना प्राप्त होते ही खुशी के मारे उछलने लग गया पैर जमीन पर नहीं टिक रहे थे वह इसलिए कि, मेरे लेखनीय जीवन में पहली बार किसी व्यंग्य पर इतना मानदेय मिलेगा यह मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। सम्पादक की तरफ प्राप्त आदेश को घरवाली का हाईअलर्ट संदेश जैसा मानकर मांगी गई जानकारी को भेजने में लग गया। आनन-फानन में पैन कार्ड, आधार कार्ड, बैंक की पास बुक की फ़ोटो कांपी का फ़ोल्डर बनाया और तुरन्त सम्पादक को भेजने में लग गया क्योंकि सम्पादक साहब ने कहा था कि, आप अपना सारा काम छोड़कर पहले हमारा काम करें इसलिए सारा काम छोड़कर रू. 2000 प्राप्त करने के लिए मांगी गई समस्त जानकारी ईमेल से संपादक को भेज दी गई और इंतजार करने लगा रू. 2000 लेखनीय मेहनताने के लिए। व्यंग्य की मानदेय राशि की सूचना प्राप्त होते ही मेरा मन मयूर की तरह नाचने लगा और गुनगुनाने लगा 'रूप तेरा ऐसा दर्पण में न समाए खुशबू तेरे तन की मधुबन में न समाए औ मुझे खुशी मिली इतनी की मन में न सामाए आंखें बंद कर लूं कहीं झलक ही न जाए' लेकिन कहते हैं ना इश्क और मुश्क की बातें छिपे न छुपाई जाती है मैंने अपने मित्रों को इस व्यंग्य से प्राप्त मानदेय की खुशी को बताया तो उन्होंने मुझसे पार्टी देने का वादा कर लिया और मै निश्चित हो गया साथ ही प्रेमिका की तरह इंतजार करने लगा अपने प्रेमी रू. 2000 का इस दौरान मित्र की बातों ही बातों ने कई शंकाओं को जन्म दें दिया और मै यह भूल गया कि, अप्रैल फूल बनाने का महीना चल रहा है । कहीं ऐसा तो नहीं मुझे अप्रैल फूल बनाया जा रहा है । कुछ दिन इंतजार करने के बाद मेरा मन शंकाओं को मजबूत मानते हुए यह कहने लगा।

इंतहा हो गई मेरे मानदेय की।

आइना कुछ ख़बर मेरे मानदेय की ....।।

एक, दो सप्ताह निकलते ही आज पूरा एक महीना होने आ गया लेकिन उस प्रकाशित व्यंग्य का मानदेय अभी तक प्राप्त नहीं हुआ जबकि मांगी गई संपूर्ण जानकारी भेजने के बाद भी संपादक के कान में मेरी आवाज अभी तक नहीं पहुंची । संपूर्ण जानकारी भेजने के बाद भी मानदेय नहीं भेजा गया तो पुनः सुचना को आधार बनाकर फिर से मांगी गई संपूर्ण जानकारी भेज दी क्योंकि सवाल मानदेय राशि का था और इंतजार करने लगा लेकिन 'दिल के अरमान आंसुओं में बह गए' जब संपादक के द्वारा भेजी गई सूचना कि उक्त दिनांक को प्रकाशित आपका व्यंग्य का मानदेय देने में हम असमर्थ हैं क्योंकि गलती से मानदेय की सूचना आपके पास पहुंच गई आप हमें माफ करें और आप ने अपने व्यंग्य में वतर्मान की व्यवस्था को देखते हुए कई जिम्मेदार लोगों को भरपूर तरीके से अप्रैल 'फूल' बनाया। इसलिए आप बधाई के पात्र हैं आप किसी भी प्रकार का 'बुरा' नहीं माने क्योंकि बुरा न मानो अप्रैल फूल है। आज हमने भी आप जैसे कई लेखकों को 'अप्रैल फूल' बनाया है अतः हमें माफ करें लेकिन सहयोग बनाए रखिए इसी आशा और विश्वास के साथ आपका अपना लटकता खंजर का संपादक।

मैं मन ही मन में यह सोचता रहा कि, अब अपने मित्रों को क्या जवाब दूंगा अप्रैल फूल बनाने के चक्कर में खुद अप्रैल फूल बन गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

प्रो. नीलिमा गुप्ता

(कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर)

सशक्त एवं विकसित भारत का आधार स्तंभ

विदेशों में भारतीय शिक्षा ब्रांड का निर्यात करने और शिक्षा के क्षेत्र में भारत 'विश्व गुरु' बनने की तैयारी कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने हमारी सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित कर, नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया है। भारतीय शैक्षणिक आभा का विस्तार महिला नेतृत्व, डिजिटलीकरण और प्रभावी संसाधन जुटाने की रणनीतियों को अपनाने से हुआ है, जिससे देश ज्ञान केंद्र में बदल गया है।

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली, दुनिया की सबसे बड़ी ऐसी प्रणालियों में से एक है जो राष्ट्र की सतत आजीविका और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। जैसे-जैसे भारत ज्ञान अर्थव्यवस्था और समाज बनने की ओर अग्रसर हो रहा है, वैसे-वैसे अधिक युवा भारतीय उच्च शिक्षा को पाने की आकांक्षा रख रहे हैं। हमारी समृद्ध, प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, विशेष रूप से गुरुकुल प्रणाली, मौलिक परंपराओं, चर्चाओं और व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के साथ समग्र शिक्षा, नैतिक विकास और एक मजबूत गुरु-शिष्य (शिक्षक-छात्र) संबंध पर जोर देती थी, जिसमें वेद, गणित, विज्ञान और दर्शन जैसे विषय सम्मिलित थे। विदेशी आक्रांताओं ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को काफी प्रभावित किया जिसने पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली से पश्चिम-प्रभावित मॉडल में स्थानांतरित होकर, अंग्रेजी भाषा पर जोर दिया। हमारी सांस्कृतिक और नैतिक राष्ट्रीय शैक्षिक नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से फिर से पुनर्जीवित हुई है, जो विभिन्न शैक्षिक अनुभवों के माध्यम से छात्रों में ईमानदारी, सहानुभूति, सम्मान और जिम्मेदारी जैसे नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देती है जिसका उद्देश्य उच्च नैतिक चरित्र और नैतिक आचरण वाले नागरिकों को विकसित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का दस्तावेज उच्च शिक्षा में बदली हुई वैश्विक वास्तविकताओं को समाहित करने की दिशा में एक रास्ता प्रतीत होता है जिसकी लंबे समय से प्रतीक्षा थी । इसका उद्देश्य 2030 तक भारत की शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना है। यह एक प्रभावी शिक्षा प्रणाली है जो प्रत्येक छात्र की अनूठी क्षमताओं का निर्माण करने के लिए सीखने के सकारात्मक अवसर और अनुभव प्रदान करता है। इस नीति में शिक्षा की सभी मौजूदा चुनौतियों को ध्यान में रखा गया है। बदलते परिवेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन के विविध पहलुओं और इसके सकारात्मक आयामों को देखने से यह पता चलता है कि देश निरंतर अग्रसर हो रहा है।

वर्तमान भारत में महिलाओं के प्रभावी नेतृत्व के रूप में आगे आने से अकादमिक नेतृत्व परिदृश्य व्यापक हुआ है। महिलाएं भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा रही हैं। भारत में महिलाओं की शिक्षा के लिए लगातार चुनौतियों का सामना करने के बावजूद महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जिसमें पुरुषों की तुलना में कम साक्षरता दर, सामाजिक बाधाएं और शिक्षा की पहुंच और गुणवत्ता में असमानताएँ शामिल हैं। विशेष रूप से ग्रामीण और हाशिए के समुदायों वाली महिलाएं। फिर भी, भारत ने

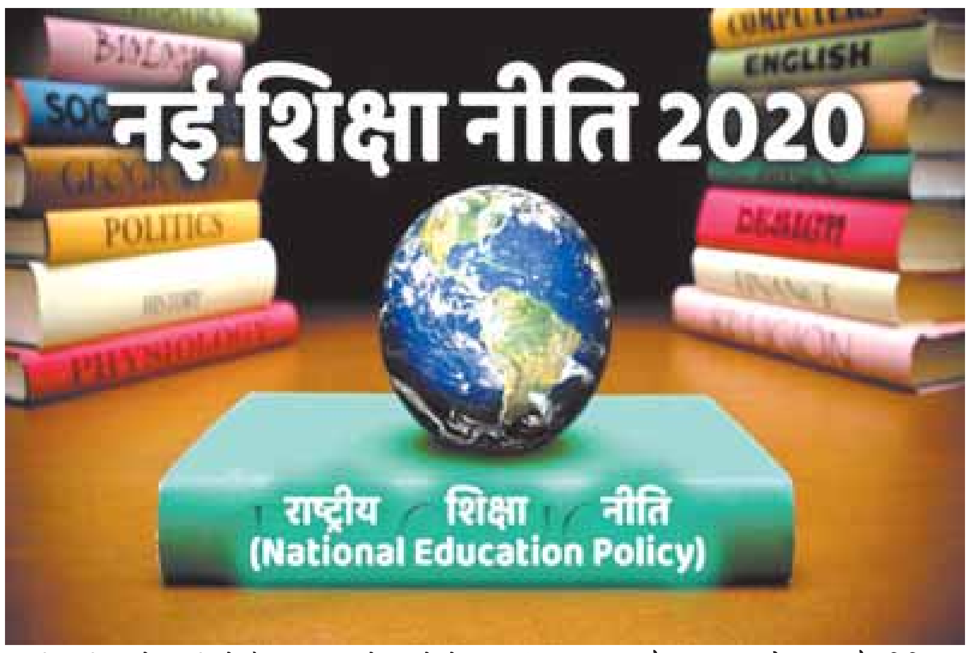

प्राथमिक शिक्षा में लड़कियों के नामांकन को बढ़ाने में उल्लेखनीय प्रगति की है। आज प्राथमिक स्तर पर लड़कियों के लिए सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) 96.3 प्रतिशत तक पहुँच गया, जो लड़कों के लगभग बराबर है। भारत में कुल साक्षरता दर लगभग 74.04 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष 82.14 प्रतिशत और महिलाएं 65.46 प्रतिशत हैं। हालाँकि, उच्च शिक्षा में भी महिला नामांकन में पिछले वर्षों में लगभग 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत के स्कूलों में लगभग 50 प्रतिशत शिक्षक महिलाएं हैं और केरल और मिजोरम जैसे राज्यों में, 80 प्रतिशत से ज्यादा महिला शिक्षक हैं।

भारत में अधिकांश विश्वविद्यालयों द्वारा अब ऑनलाइन शिक्षा पद्धति का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में डिजिटल शिक्षा की भूमिका पर जोर देता है, जिसका उद्देश्य डिजिटल कक्षाओं और ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों सहित प्रौद्योगिकी एकीकरण के माध्यम से पहुंच, गुणवत्ता और समानता को बढ़ाना है। डिजिटल शिक्षा का उद्देश्य, 21वीं सदी के एक महत्वपूर्ण कौशल के रूप में डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना है और छात्रों को डिजिटल दुनिया में मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना है। प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित कर व्यक्तिगत शिक्षा की सुविधा प्रदान करना, विविध शिक्षण शैलियों और आवश्यकताओं की पूर्ति करना और डिजिटल डिवाइड को पाटना सुनिश्चित करना है, ताकि सभी शिक्षार्थियों के लिए प्रौद्योगिकी और डिजिटल संसाधनों तक समान पहुंच सुनिश्चित हो सके। विशिष्ट पहलों और रणनीतियों में पीएम ई-विद्या (स्कूल जाने वाले छात्रों के लिए), दीक्षा (एक राष्ट्र - एक डिजिटल प्लेटफॉर्म), राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच (एनईटीएफ), मौजूदा प्लेटफार्मों का विस्तार (स्वयं और दीक्षा), ई-सामग्री विकसित करना, उभरती प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित करना, डिजिटल पुस्तकालयों की स्थापना और ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण सम्मिलित हैं।

एनईपी 2020 के संदर्भ में, संसाधन जुटाने में शैक्षणिक कार्यक्रमों, शोध और सामुदायिक जुड़ाव का समर्थन करने के लिए विविध वित्तपोषण स्रोतों और संसाधनों (वित्तीय, मानव, बुनियादी ढांचे और ज्ञान-आधारित) को सुरक्षित करना भी सम्मिलित है। नीति संसाधन सृजन के लिए विभिन्न तरीकों को प्रोत्साहित करती है, जिसमें सार्वजनिक-निजी भागीदारी, शोध सहयोग, बौद्धिक संपदा अधिकार, परोपकारी योगदान और कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी सम्मिलित है। शैक्षणिक उत्कृष्टता का समर्थन करने, शोध परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए शोध और नवाचार को सक्षम करने, शोध केंद्र स्थापित करने और शीर्ष शोधकर्ताओं को आकर्षित करने, सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रमों को प्रारंभ करने के लिए सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देने, सामाजिक विकास परियोजनाओं का समर्थन करने और समाज के समग्र कल्याण में योगदान देने, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और अन्य सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचे में सुधार करने के लिए संसाधन जुटाना महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय सरकारी फंडिंग, निजी क्षेत्र की भागीदारी, पूर्व छात्रों और दान दाताओं, शुल्क संग्रह, राजस्व उत्पन्न करने के लिए ऑडिटोरियम, सेमिनार हॉल और खेल सुविधाओं जैसे बुनियादी ढांचे को किराए पर देकर, अतिरिक्त राजस्व उत्पन्न करने के लिए स्व-वित्तपोषण और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा व्यवसायों और संगठनों को परामर्श सेवाओं के माध्यम से और राजस्व और विशेषज्ञता उत्पन्न करके और सक्रिय सामुदायिक जुड़ाव के माध्यम से संसाधन जुटा सकते हैं।

अब समय आ गया है कि इस नीति की खूबसूरती को पूर्णतः अमल में लाया जाए। एक कार्य योजना विकसित करने से नीति निर्माताओं को अपने दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने में मदद मिल सकती है। उच्च शिक्षा के विभिन्न हितधारकों ने भविष्य के लिए तैयार कार्यबल बनाने के लिए नई पहलों को लागू करना प्रारंभ कर दिया है और सकारात्मक परिणाम दिखने लगे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को अमल में लाने के लिए संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) के माध्यम से संस्थान के विजन-मिशन पर विचार करना चाहिए। शिक्षा की सुविधाओं और गुणवत्ता पर जोर दिया जाना चाहिए। चूंकि सभी सुधारों को एक बार में लागू नहीं किया जा सकता है और इसलिए बहु-विषयक स्नातक पाठ्यक्रमों को डिजाइन करने, परिसर में मौजूदा पाठ्यक्रमों के अनुसार सीबीसीएस को लागू करने और ऑनलाइन शिक्षण को शामिल करने के लिए मिश्रित शिक्षा को बढ़ावा देने जैसे गैर-वित्तीय सुधार कारगर साबित हो सकते हैं। उच्च शिक्षा बहु-विषयक पाठ्यक्रमों और बहुप्रवेश और निकास बिंदुओं के साथ बदलने के लिए तैयार है और एक संस्थान में अर्जित क्रेडिट को दूसरे संस्थान में स्थानांतरित करने की भी अनुमति देनी चाहिए। श्रेणी ए शहरों में स्थित विश्वविद्यालयों को कार्यान्वयन के केंद्रों के रूप में पहचाना जा सकता है जो बाद में पिछड़े क्षेत्रों में स्थित अन्य विश्वविद्यालयों के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकते हैं। समृद्ध इतिहास, मजबूत बुनियादी ढाँचे और बड़ी संख्या में छात्रों के साथ मॉडल कॉलेज भी विकसित किए जा सकते हैं।

भविष्य में उद्योगों को वित्त पोषण प्रदान करने, शोध परियोजनाओं का मार्गदर्शन करने और औद्योगिक भ्रमण की सुविधा प्रदान करना महत्वपूर्ण हो सकता है। कौशल का विस्तार शैक्षणिक पाठ्यक्रम में सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के बढ़ते एकीकरण को पूरा करता है। शिक्षा की कमजोर गुणवत्ता, संसाधनों की कमी, क्षीण सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था और अन्य चुनौतियों को सार्वजनिक-निजी भागीदारी और सामाजिक समावेशन के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। उन्नत देशों के कौशल विकास मॉडल का अध्ययन किया जा सकता है और प्राचीन भारत के विश्व स्तरीय संस्थानों जैसे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी की समृद्ध विरासत को भारतीय शिक्षा प्रणाली में कौशल विकास और गुणवत्ता चुनौतियों का समाधान करने के लिए नई दिशा दी जा सकती है। हमें प्रतिस्पर्धा के माध्यम से और उच्च शिक्षा क्षेत्र में सतत आर्थिक विकास के लिए प्रोत्साहन देकर नई गतिशीलता लानी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के कार्यान्वयन के लिए केंद्र, राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों, उच्च शिक्षा संस्थानों, नियामक एजेंसियों, निकायों और अन्य सभी संबंधित हितधारकों के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। अब समय आ गया है जब भारतीय ब्रांड की शिक्षा को विदेशी देशों में निर्यात किया जाए और शिक्षा के क्षेत्र में 'विश्व गुरु' बनने के लिए खुद को तैयार किया जाए ताकि माननीय प्रधानमंत्री, शिक्षा मंत्रालय और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सपनों को पूरा किया जा सके, जिन्होंने हमें एक नई शिक्षा प्रणाली और एक नए भारत का रास्ता दिखाया है।

सामयिक

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

फैलती हिंसा में महिलाओं के वीभत्स रूप का जिम्मेदार कौन?

हम जब भी कभी प्रेम, दया और समर्पण की बात करते है, तब हमारे समक्ष एक ही चेहरा उभरकर आता है। जिसे हम विभिन्न नामों से बुलाते है। वह किसी की मां हो सकती है, बहन हो सकती है, पत्नी या बेटी भी हो सकती है है। कहने का तात्पर्य है कि स्त्री के विभिन्न रूपों में हम सौम्यता की हर झलक देख सकते है। प्रकृति के नियम के अनुसार जिस प्रकार समयानुसार हर युग में कुछ बदलाव होते है ठीक वैसे ही बीते कुछ वर्षो में स्त्री के स्वभाव के साथ- साथ उसकी सोच में भी बदलाव आए है। यह कहना गलत नहीं होगा कि कई वर्षो से स्त्री उत्पीड़न का शिकार होती रही है। उसकी आवाज़ सुनने वाला कोई नहीं था। कई बार तो आवाज़ इतनी जोर से दबा दी जाती की कोख और कब्र में अंतर करना कठिन हो जाता। अफ़सोस की बात है कि समाज के इस भयानक रूप में पुरषो का साथ महिलाएं ही देती रही है। प्रश्न यह उठता है कि क्यों महिला ही महिला की दुश्मन बनी हुई थी।तो जवाब भी हमारे सामने ही है। उनकी जाति पर अत्याचार करने के लिए उनसे पूछा नहीं जाता था, बल्कि मजबूर किया जाता था। लेकिन मजबूरी की जंजीरें कितनी भी मजबूत क्यों ना हो एक दिन वह टूटती ज़रूर है और ऐसा ही स्त्रीयों के साथ भी हुआ। सदियों तक घुट-घुटकर रहने वाली स्त्रीयों ने जब समाज की क्रूरता का सामना करने का निश्चय किया तब उनका जो रूप सामने आया वह कई प्रश्नों को हमारे समक्ष लाता है।

जब हम किसी पर अत्याधिक अत्याचार करने लगते है तब हमें इस बात पर सतर्क हो जाना चाहिए कि पलटवार आपके द्वारा की जाने वाली हिंसा से भी ज़्यादा भयानक होगा। स्त्री जो स्वभाव से ही कोमल थी। आज उसके जिस वीभत्स रूप का सामना समाज को करना पड़ रहा है, इसका जिम्मेदार कौन है? स्त्री जो निस्वार्थ भावना से समाज के हर वर्ग की सहायता के लिए जानी जाती है। आज वह ही समाज के लिए सोचने का विषय बन गई है। प्रेमी की हत्या कर देना, पैसों के लिए विवाह करना फिर विवाह के बाद किसी अन्य के साथ मिलकर पति की हत्या कर देना। अपने माता-पिता की हत्या में किसी अन्य का साथ देना। बच्चों को किसी ओर के लिए छोड़ देना या कभी तो बच्चो की जान ले लेना। कभी तो अपने भीतर के गुस्से को खत्म करने के लिए अपने ही बच्चो की निर्ममता से पिटाई करना। यह सब जब हम पढ़ते है तब यकीन नहीं होता कि हम किसी स्त्री के बारे में बात कर रहे है या किताबों में छपी किसी दानवी के बारे में पढ़ रहे है। हिंसा का अर्थ हमेशा मार- पीट करना या हत्या करना ही नहीं होता। बल्कि भावनात्मक रूप से अपनों को तोड़ देना या उनके सम्मान को चोट पहुंचाना भी हिंसा का ही दूसरा रूप है।

टीन-ऐज़ की तरफ जाती हुई कई बच्चियों को यह पता ही नहीं है कि वह क्या चाहती है? अश्लील गानों पर भद्दी रील बनाना, यदि कोई रोक दें तो उसे अपनी सोच बदलने को कहना। अपने भविष्य को सवारने के लिए पढाई को नहीं बल्कि मीडिया के विभिन्न चैनल पर अपने जीवन के हर पल को दिखाने को ही सही मानना। यह चिंता का विषय बन गया है। खुद की समानता की मांग करते-करते कब स्त्रियां सामान्य व्यवहार से दूर होती गई, इस बात का उन्हें पता ही नहीं चला। एक अंधी दौड़ में स्त्री निरंतर दौड़ रही है। वह यह भूल गई है कि उसे किसी से भी समान या बराबर होने का सर्टिफिकेट लेने की ज़रूरत नहीं है बल्कि ईश्वर ने स्वयं ही स्त्री को पुरुष से बढ़कर बनाया है। तभी तो प्रकृति को आगरे बढ़ाने की जिम्मेदारी पुरुष को नहीं बल्कि स्त्री को दी है।

यहाँ मैं यह नहीं कहना चाहती कि सोशल मीडिया से सब स्त्रियां दूर रहे। मैं यह कहना चाहती हूँ कि हर महिला जन्म से ही वीरांगना होती है । घर के साथ-साथ सुचारू रूप से परिवार और बच्चो को सम्भालने का कठिन कार्य जितनी आसानी से महिलाएं करती है उतना पुरुष नहीं कर पाते।हम बेहतर है इसका हमें प्रमाण क्यों चाहिए?

हमें तो यह सोचना चाहिए कि कहीं हमारे द्वारा किसी कानून का गलत प्रयोग करने से उस महिला का नुकसान तो नहीं हो रहा जिसे सच में न्याय की ज़रूरत है। हम उन महिलाओं की आवाज़ क्यों नहीं बनना चाहती, जिनकी आवाज़ आज भी दबाई जा रही है। यहाँ मैं गाने-नाचने या प्रेम के खिलाफ नहीं हूँ। मैं खिलाफ हूँ उस अंधाधुध दौड़ के जो बिना किसी मंजिल के दौड़ी जा रही है। हमें यह समझना होगा की हमारा उपयोग हो रहा है। आज भी किसी षड्यंत्र के तहत हमारे भीतर की सकारात्मक ऊर्जा को बेकार की चीज़ों में लगवाया जा रहा है। मात्र अपनी नुमाइश करके हम स्वयं को किसी से बेहतर साबित नहीं कर सकते। हमें यह मानना होगा कि हम बेहतर है। अगर हमारे भीतर झांसी की रानी है तो सुनीता विलियम्स भी है।हमारे सुंदर एवं सौम्य रूप को किसी वीभत्स चेहरे में बदल दिया गया है। जिसमें हम सिर्फ बदला लेना चाहते है,लेकिन यह नहीं जान पा रहे कि धीरे-धीरे हमारे ही आस्तित्व को खत्म करके बदला तो हमसे लिया जा रहा है।

मैं यह नहीं कहना चाहती की कामकाजी ना बने, बस यह कहना चाहती हूँ कि भीतर की ऊर्जा से काम ले, बदले की आग से नहीं। अपना सम्मान करें, अपनी नुमाइश ना बनने दें।

शिक्षा

श्याम कोलारे

लेखक समाजसेवी हैं।

बच्चों के लिए उज्ज्वल और समृद्ध भविष्य वाली दुनिया बनाएं

अप्रैल की शुरुआत और स्कूल का नया सत्र प्रारम्भ होते ही बच्चों में एक नया उत्साह दिखाई देता है। पिछली कक्षा की परीक्षा के बाद कुछ अंतराल में स्कूल फिर से खुलते हैं और बच्चे नई उम्मीदों और उमंग के साथ स्कूल पहुँचना शुरू करते हैं। हर तरफ एक नई रौनक होती है - स्कूल के गलियारों में बच्चों की चहचहाहट गूंजने लगती है, नई किताबों की खुशबू और रंग-बिरंगे बैग और यूनिफॉर्म से पूरा माहौल जीवंत हो उठता है।

बच्चों के लिए यह समय खास होता है क्योंकि वे एक नई कक्षा में प्रवेश करते हैं। खासकर उन छोटे बच्चों के लिए जो पहली बार पूर्व-प्राथमिक या कक्षा 1 में स्कूल आ रहे होते हैं, यह अनुभव और भी खास होता है। उनके लिए यह एक नई और अनजानी दुनिया होती है, जहाँ वे घर की गोद से निकलकर स्कूल के अनुशासित वातावरण में कदम रखते हैं। स्कूल उनके लिए सिर्फ पढ़ाई की जगह नहीं होती, बल्कि यह वह स्थान होता है जहाँ वे पहली बार दोस्त बनाना, मिल-जुलकर रहना, नियमों का पालन करना और सामाजिकता जैसी बातें सीखते हैं। यहीं से उनके जीवन की एक नई यात्रा शुरू होती है, जो उन्हें आत्मनिर्भर और समझदार बनाती है। इस तरह अप्रैल का महीना न केवल एक नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत करता है, बल्कि बच्चों के जीवन में नए अनुभवों और विकास की दिशा भी तय करता है।

शुरुआती कक्षा बच्चों की होती बच्चों की सर्वांगीण की पहली सीढ़ी होती है। पूर्व प्राथमिक/कक्षा पहली वह आधारशिला है जिस पर बच्चे की पूरी शैक्षिक यात्रा टिकी होती है। इस स्तर पर बच्चों को अक्षर, शब्द, संख्याएँ, रंग, आकार और सामाजिक व्यवहार सिखाया जाता है। यह वह समय होता है जब बच्चे की जिज्ञासा चरम पर होती है, और यदि उन्हें सही मार्गदर्शन और समर्थन मिले, तो वे तेजी से सीखते है, इस उम्र में बच्चों को एक अनुकूलित शिक्षण, वातावरण मिलना चाहिए जिससे वह सुरक्षित महसूस करें व सीखने के लिए प्रेरित हो। भाषा विकास के माध्यम से वे अपने विचार व्यक्त करना और दूसरों को समझते हुए सीख सके। वहीं गणित की प्रारंभिक अवधारणाएँ उनकी तर्क शक्ति को बढ़ाती हैं। इस स्तर पर बच्चों में सामाजिक कौशल जैसे सहयोग, साझा करना और नियमों का पालन करना सिखाना बहुत जरूरी होता है। साथ ही, भावनात्मक विकास के अंतर्गत वे अपनी भावनाओं को पहचानना और दूसरों की भावनाओं को समझना सीखते हैं। कला, संगीत और खेल के माध्यम से उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है, और स्वस्थ आदतों को अपनाने की प्रक्रिया भी इसी समय शुरू होती है। इस प्रकार कक्षा 1 बच्चों के समग्र विकास की नींव रखने का महत्वपूर्ण चरण होता है।

बच्चों के लिए स्कूल एक नई दुनिया जैसा होता है। जब बच्चा पहली बार स्कूल आता है, तो वह एक नए माहौल में होता है। उसे बहुत कुछ नया देखना और समझना होता है। नई जगह, नए लोग, स्कूल में सब कुछ नया होता है- क्लासरूम, बेंच, टीचर, दोस्त, मैदान, घंटी, पानी की बोतलें और घंटियों की आवाज़। बच्चे धीरे-धीरे इस माहौल को अपनाते हैं। यहां नई बातें सीखने का मौका मिलता है। बच्चों को यहाँ पढ़ना, लिखना, बोलना, सुनना और समझना सिखाया जाता है। यह उनकी बुद्धि को विकसित करता है। दोस्ती और मिलजुलकर रहना की समझ कक्षा से ही आती है। स्कूल में बच्चा पहली बार दूसरों के साथ समय बिताना सीखता है। वह दोस्त बनाता है, चीजें शेयर करना सीखता है, और साथ खेलना भी। एक नई प्रकार की यूँ कहे तो नन्ही सी सही परन्तु कुछ जिम्मेदारी का एहसास की समझ विकसित होती ही। बच्चा अब खुद से बैग उठाता है, अपनी चीजें संभालता है, टीचर की बात मानता है और खुद पर भरोसा करना सीखता है। इसलिए शुरुआती कक्षा बच्चों को एक अलग दुनिया का अहसास कराती है।

इस समय बच्चों की सीखने की क्षमता बहुत ही प्रबल होती है। इस समय घर, परिवार, शिक्षक एवं पड़ोस इनके लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है जिनसे बच्चा शिक्षा ग्रहण करता है। शिक्षा के क्षेत्र मे कई काम हुए है एवं होते जा रहे है, परंतु वर्तमान स्थिति अभी चिंताजनक है, हालाँकि सरकार की विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं से पिछले सालों की तुलना में सुधार होता नजर आ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के बाद शिक्षा सुधार में अमूलचूल परिवर्तन दिखता है। हालांकि कोरोना माहमारी ने बच्चों के सीखने के स्तर को पीछे करने का काम किया परंतु आज बच्चों का लर्निंग गेप की रिकवरी करके आज कोविड से पहले स्थिति से बेहतर स्थिति में आने का एक अच्छा प्रयास हुआ है।

एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (ASER) 2024 के अनुसार, ग्रामीण भारत में शिक्षा की स्थिति में कुछ सुधार देखा गया है, लेकिन कई चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। असर 2022 के अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों का स्कूल नामांकन लगभग 98.1 प्रतिशत है। हालांकि, सरकारी स्कूलों में नामांकन 2022 में 72.9 प्रतिशत से घटकर 2024 में 66.8 प्रतिशत हो गया है। सरकारी स्कूलों के बच्चों की पढ़ने की स्थिति में कक्षा 3 के केवल 23.4 प्रतिशत छात्र कक्षा 2 स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं, जो 2022 में 16.3 प्रतिशत था। कक्षा 5 के 44.8 प्रतिशत छात्र कक्षा 2 स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं, जो 2022 में 38.5 प्रतिशत था। गणितीय सीखने की स्थिति में कक्षा 3 के 66 प्रतिशत छात्र साधारण घटाव हल करने में असमर्थ हैं। कक्षा 8 के केवल 45.8 प्रतिशत छात्र बुनियादी गणितीय समस्याएँ हल कर सकते हैं। ये सब आंकड़े बताने का प्रयास कर रहे है कि बच्चों को सीखने में शुरुआती कक्षा में ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है और यह प्रयास संयुक्त रूप से शिक्षक और माता-पिता के माध्यम किये जानें कि आवश्यकता है।

शुरुआती या पहली कक्षा में प्रवेश करने वाले बच्चों के लिए शिक्षकों और माता-पिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों को खेल-खेल में सिखाएँ। बच्चों की यह उम्र ऐसी होती है जब बच्चा किसी चीज को सीखने से अधिक खेलने में ज्यादा रुचि रखता है, तो क्यों न बच्चों को खेल-खेल के माध्यम से ही पढ़ाया और सिखाया जाए। बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाने की कई तकनीक एवं गतिविधियों का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 , निपुण भारत अभियान के तहत उल्लेखित है जिसमे प्रत्येक बच्चे की समझ और उनकी रुचि के अनुसार पढ़ाई करवाने का प्रावधान है। शिक्षकों के साथ-साथ माता-पिता का भी दायित्व है कि वे अपने बच्चों को पढ़ाई एवं अन्य सीखने की गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करें और उनकी जिज्ञासा को बढ़ावा दें। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को नियमित रूप से स्कूल भेजें। स्कूल से लौटने पर उनके अनुभवों के बारे में पूछें। घर पर एक सकारात्मक और सहायक अध्ययन वातावरण प्रदान करें। अप्रैल माह की शुरुआती पढ़ाई के बाद ग्रीष्मकाल मे बच्चों की माह मई-जून माह में अवकाश होता है, जब बच्चा अपना अधिकतम समय घर एवं पड़ोस में बिताता है। यह समय बच्चों का एक अवशर होता है जब वह बच्चा अपने घर के सदस्यों, रिश्तेदार, पड़ोसी एवं आसपास के संसाधनों से सीखता है। इस समय बच्चारु को अपने परिवेश से सीखना का महत्वपूर्ण समय मिलता है, इस समय का सही उपयोग करने में परिवार एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। ग्रीष्मकालीन अवकाश के समय बच्चों के सीखने के क्रम को सही दिखा देने में पिछले कुछ सालों में बहुत से समाजसेवी संस्था एवं सरकार आगे आयी है। पिछले वर्ष मध्यप्रदेश में 'समर कैम्प', 'कमाल के कैम्प' जैसे केचअप कार्यक्रम का आयोजन में अभिभावकों, माताओं एवं स्वयंसेवकों ने विशेष सहयोग किया जिसमें बच्चों के सीखने एवं उनके बौद्धिक विकास में एक अहम भूमिका निभाई है।

प्रारंभिक कक्षा बच्चों के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ होता है। यह वह समय है जब उन्हें शिक्षा की दुनिया से परिचित कराया जाता है। असर 2024 रिपोर्ट दर्शाती है कि शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सुधार हुए हैं, लेकिन अभी भी कई क्षेत्रों में काम करने की आवश्यकता है। यदि शिक्षक, माता-पिता और समाज मिलकर प्रयास करें, तो हम बच्चों के लिए एक उज्ज्वल और समृद्ध भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं। अगर हम स्कूल को बच्चों के लिए एक सुरक्षित, रोचक और सिखाने वाला वातावरण बना सकें, तो वे आगे चलकर एक मजबूत और समझदार नागरिक बन सकते हैं।

प्राचीन धरोहर कुंडों की बिगड़ती स्थिति के लिए दोषी कौन...?

मुंह पर मास्क, हाथों में दस्ताने पहनकर करना पड़ता है श्रमदान

बैतूल/मुलताई। पवित्र नगरी मुलताई का अपना धार्मिक और पौराणिक महत्व सदियों से रहा है, इस पवित्र नगरी की पहचान नगर के कुंड, मठ, मंदिर है जो पूरे बैतूल जिले की आस्था के प्रतीक है, किंतु अफसोस पवित्र नगरी मुलताई की यह पहचान, सांस्कृतिक प्राचीन धरोहर को संजोने के प्रयास कभी नहीं हुए। हाल ही में संपूर्ण जिले में चलाए जाने वाले जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रारंभ मुलताई नगर के ताप्ती तट से किया गया, हालांकि जिस अभियान का प्रारंभ मुलताई के ताप्ती तट से किया गया। इस अभियान में मुलताई के किसी कार्य को शामिल नहीं किया गया। इस बार संपूर्ण जिले के अधिकारियों और नेताओं का ध्यान प्राचीन ताप्ती मंदिर के समक्ष बने सूर्य कुंड पर गया। जहां सभी ने मिलकर इस सूर्यकुंड के सफाई अभियान में जन भागीदारी निभाई, हालांकि नगर पालिका कर्मचारियों ने इसे पहले ही बहुत हद तक साफ कर दिया था, किंतु कुंड के अंतिम दौड़ की सफाई जिले के प्रमुख नेता विधायक एवं अधिकारियों ने मुंह पर मास्क और हाथों में दस्ताने पहन के की और इस सफाई अभियान का उल्लेखनीय पहलू भी यही है।

मुंह पर मास्क, हाथों में दस्ताने पहनकर की सूर्य कुंड की सफाई

ताप्ती सरोवर निर्माण से पूर्व ताप्ती सात कुंडो से होकर बहा करती थी, समय के साथ अधिकांश कुंड समाप्त हो गए। वर्तमान में दिखाई देने वाले तीन कुंड जिसमें सूर्य कुंड, पाप कुंड और दान कुंड शेष है, जो दिखाई देते हैं, जिसमें सबसे प्रमुख प्राचीन ताप्ती मंदिर के समक्ष सूर्य कुंड है। हाल ही में जिले के सभी प्रमुख नेता अधिकारियों ने मिलकर इस सूर्य कुंड की सफाई की, किंतु कुंड की हालत इतनी अधिक खराब थी कि इसके पास खड़े रहना कठिन था। अधिकारियों और नेताओं ने इसे साफ करने के लिए हाथ में दस्ताने और मुंह पर मास्क लगाना पड़ा। इसके बाद ही कुंड से निकलने वाले गाल के टोकनो को अपना हाथ लगाया।

प्राचीन कुंडों की दयनीय स्थिति क्यों..?

बड़ा प्रश्न यह है कि नागरिकों की आस्था का केंद्र यह प्राचीन धरोहर कुंडो की इतनी दयनीय स्थिति क्यों है। इन कुंडों पर नेताओं और अधिकारियों का ध्यान कार्यक्रमों में औपचारिकता निभाने के लिए ही क्यों जाता है। वर्ष भर इस नगर की धरोहर को संजोने के प्रयास क्यों नहीं होते। आज अगर इन कुंडों की हालत बिगड़ रही है तो क्यों..? और इसके लिए जवाबदार कौन..? ताप्ती तट पर वर्ष में अनेको कार्यक्रम होते हैं जिसमें जिले और प्रदेश के अनेक राजनीतिक लोग धार्मिक आयोजनों में भाग लेते हैं आश्वासन दे जाते हैं ताप्ती से जुड़े विकास कार्य को महत्व दिया जाएगा कहा जाता है, किंतु बीते 4 दशकों से ताप्ती को लेकर कोई ठोस योजना सामने नहीं आ पाई।

पूर्व विधायक पांसे ने दी थी राशि, खर्च नहीं कर पाई नपा

ताप्ती श्री क्षेत्र के विकास में अब तक कम ही जनप्रतिनिधियों ने अपनी राशि का योगदान दिया है किंतु कुंड विकास के लिए जो राशि मिली नगर पालिका बीते 3 वर्षों में वह राशि भी पूरी तरह से खर्च नहीं कर पाई। पूर्व मंत्री एवं विधायक सुखदेव पांसे ने सूर्य कुंड के विकास के लिए विधायक निधि से लगभग 5 लाख रुपए की राशि स्वीकृत की थी नगर पालिका ने इस सरोवर के ऊपर टीन सेट लगाकर मात्र दो या ढाई लाख रुपए खर्च किए और बाकी राशि कहां है इसकी जानकारी अभी तक किसी के पास नहीं है इसमें और कार्य करना था जो अब तक नहीं किए गए। चौंकाने वाला तथ्य यह है कि अपने आप को ताप्ती श्री क्षेत्र विकास के लिए वचनबद्ध बताने वाले लोगों ने एक बार भी जानने का प्रयास नहीं किया की जो राशि पूर्व विधायक पांसे से मिली थी उसका उपयोग हुआ है अथवा नहीं।

इनका कहना है –

पूर्व विधायक एवं मप्र शासन के पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे ने सूर्यकुंड सुधार के लिए 5 लाख रुपए दिए थे, इसमें टीन सेट पर दो से ढाई लाख रुपए खर्च हो चुके है परंतु विवाद के चलते शेष कार्य नहीं हो सका।

–योगेश अनेराव, उप यंत्री नगर पालिका मुलताई

स्व सहायता समूहों को अश्वगंधा की खेती का दिया गया प्रशिक्षण

बैतूल। देवारण्य योजना के अंतर्गत अश्वगंधा की खेती को बढ़ावा देने के लिए बुधवार 16 अप्रैल को जिले के छह विकासखंड आमला, मुलताई, आठनेर, शाहपुर, घोड़ाडोंगरी और भीमपुर में स्व सहायता समूहों को इस औषधीय पौधे की खेती के लिए मास्टर ट्रेनर्स द्वारा एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। जिला आयुष अधिकारी डॉ योगेश चौकीकर ने बताया कि यह संपूर्ण कार्यक्रम आयुक्त, संचालनालय आयुष मध्यप्रदेश भोपाल के निर्देशानुसार एवं कलेक्टर बैतूल के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। प्रत्येक विकासखंड में जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की उपस्थिति में प्रशिक्षण का विधिवत शुभारंभ किया गया।

भीमपुर में वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी प्रभु कुमार चटके, आमला में जनपद अध्यक्ष गणेश यादव, शाहपुर में वरिष्ठ उद्यान अधिकारी प्रकाश कापसे, घोड़ाडोंगरी में पार्षद राहुल इवने, आठनेर में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सुषमा जगताप तथा मुलताई में जिला पंचायत सदस्य श्रीमती कंचन कासलेकर ने कार्यक्रम की शुरुआत की। इस कार्यक्रम की सफलता में देवारण्य योजना अंतर्गत जिले के नोडल अधिकारी डॉ. मनक धुर्वे और डॉ. अतुल राय की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भीमपुर में डॉ. मनक धुर्वे और डॉ. वेद प्रकाश डेहरिया, आमला में डॉ. नितिन अतुलकर और डॉ. रवि चौकीकर, भैंसदेही में डॉ. दीपक कडवे और डॉ. अजय मांडवे, मुलताई में डॉ. विनीता महादुले और डॉ. शारदा चौधरी, शाहपुर में डॉ. प्रहलाद नागले और डॉ. कंचन डडोरे, तथा घोड़ाडोंगरी में डॉ. विजय तांडिलकर और डॉ. अभय देव इवने के नेतृत्व में प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मारपीट कर कैमरा लूटने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। मारपीट कर कैमरा लूटने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार 4 अप्रैल को फरियादी चंद्रभान नागले पिता गुरुप्रसाद नागले, उम्र 24 वर्ष, निवासी ग्राम ससाबड़, आमला ने बैतूल बाजार थाने में शिकायत दर्ज कराई थी कि 4 अप्रैल को वरुण धुर्वे निवासी करंजीघाट ने उसे फोन कर बताया कि ग्राम खंडारा में सापना डेम पर नीलेश धुर्वे एवं उसके चार साथियों की फोटोशूट करानी है। वरुण ने नीलेश का मोबाइल नंबर भी दिया। फरियादी चंद्रभान अपने साथी सचिन के साथ दोपहर करीब 2 बजे सापना डेम पहुंचा और नीलेश व उसके तीन साथियों की फोटोशूट कर रहा था, तभी अचानक दो अज्ञात व्यक्ति बिना नंबर की नीले रंग की मोटरसाइकिल से आए। दोनों के मुंह कपड़े से ढंके हुए थे और हाथ में हार्स पाइप लिए हुए थे। आते ही उन्होंने चंद्रभान के साथ मारपीट शुरू कर दी और उसका लगभग 80,000 रुपये कीमत का सोनी कंपनी का अल्फा 6400 कैमरा जिसमें शादियों के डाटा थे, लूटकर ले गए। पुलिस ने शिकायत पर धारा 309(6) बीएनएस के तहत मामला पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना के दौरान आरोपियों की पहचान कर सुमित पिता मुन्ना उइके, उम्र 25 वर्ष, निवासी मोरनढाना और अलकेश पिता कमलेश मर्सकोले, उम्र 20 वर्ष निवासी सोहागपुर को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया है। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी निरीक्षक अंजना धुर्वे, उप निरीक्षक रघुवंशी, आरक्षक सुभाष बघेल, आरक्षक कमल पवार, आरक्षक ओमप्रकाश एवं सैनिक मनोज सरयाम की सराहनीय भूमिका रही।

कोठीबाजार क्षेत्र में चला अतिक्रमण हटाने का अभियान

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार बुधवार को बैतूल मुख्यालय के कोठी बाजार क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने की बड़ी कार्रवाई की गई। यह अभियान एसडीएम राजीव कहार के नेतृत्व में संचालित हुआ, जिसमें राजस्व विभाग, पुलिस प्रशासन और नगर पालिका की संयुक्त टीम ने हिस्सा लिया। अभियान के दौरान बस स्टैंड से लेकर लल्ली चौक और गणेश चौक तक के मार्ग पर चिन्हित अतिक्रमणों को हटाया गया। कार्रवाई के अंतर्गत सडकों और सार्वजनिक स्थलों पर अवैध रूप से किए गए निर्माण, ठेले, दुकानें, टीन शेड और अन्य अतिक्रमणों को हटाया गया, जिससे आमजन को आवागमन में हो रही परेशानी से राहत मिली। एसडीएम श्री कहार ने जानकारी देते हुए बताया कि पूर्व में अतिक्रमणकारियों को नगर पालिका के माध्यम से नोटिस जारी कर अतिक्रमण स्वयं हटाने के लिए कहा गया था। बावजूद इसके अतिक्रमण नहीं हटाए जाने पर बुधवार को प्रशासन द्वारा यह सख्त कार्रवाई की गई।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में खून की जांच के लिए परेशान हो रहे स्कूली बच्चे

अस्पताल प्रबंधन का कहना– किट उपलब्ध नहीं, इसलिए नहीं हो रही खून की जांच

बैतूल/ शाहपुर। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर में स्वास्थ्य सेवाओं का हाल-बेहाल है। हालात यह है कि शाहपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में ब्लड जांच कराने तक की सुविधा नहीं है। ऐसे में मरीजों को राशि खर्च कर खून की जांच करानी पड़ रही है। इनमें सबसे ज्यादा परेशान विद्यार्थी को है, जो खून की जांच कराने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुंच रहे है, यहां रसीद कटवाने के बाद भी खून की जांच नहीं हो रही है। ऐसे में अभिभावकों में नाराजगी बनी हुई है। बताया जा रहा है कि स्कूल के शिक्षकों द्वारा बच्चों के आधार कार्ड, ब्लड रिपोर्ट आदि कागजात की मांग की जा रही है। ऐसे में बच्चे खून की जांच कराने के लिए परेशान हो रहे है। अभिभावकों ने बताया कि खून की जांच कराने वह बच्चों को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुंचे। वहां पर उन्होंने 10 रुपये की पर्ची भी ली। लेकिन लेबोरेटरी में उन्हें ब्लड जांच करने से मना कर दिया गया। ऐसे में बच्चे और अभिभावकों को गर्मी में परेशान होना पड़ रहा है। खून की जांच के संबंध में बीसीएम क्रांति यादव से बात की, तो उन्होंने बताया कि उनके पास अभी अस्पताल में ब्लड जांच कीट उपलब्ध नहीं है। जिसके कारण ब्लड जांच नहीं हो पा रही है। इधर सीएम राइस स्कूल शाहपुर के शिक्षकों का कहना है कि यदि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में खून की जांच नहीं हो रही है तो अभी हम ब्लड रिपोर्ट जमा करने के लिए अभिभावकों को कुछ समय दे सकते है। लोगों का कहना है कि बच्चों की ब्लड रिपोर्ट के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर के कर्मचारियों द्वारा स्कूलों में शिविर आयोजित किये जाने चाहिए, जिससे कि हर बच्चे के खून की जांच हो सके।

इनका कहना है –

खून की जांच करने वाली कीट अभी अस्पताल में नहीं है, इसलिए खून की जांच नहीं हो पा रही है। कीट मांग के संबंध में जिला अस्पताल को डिमांड नोट भेजा है।

–क्रांति यादव, बीसीएम, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर

ईडी के दुरुपयोग के खिलाफ जिला कांग्रेस ने किया प्रदर्शन

कांग्रेस नेताओं के खिलाफ ईडी केस को बताया राजनीतिक प्रतिशोध, सौंपा ज्ञापन

बैतूल। जिला कांग्रेस कमेटी ने बुधवार को कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, राजीव गांधी एवं अन्य कांग्रेस नेताओं के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की कार्रवाई के विरोध में कलेक्ट्रेट के सामने प्रदर्शन कर राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। जिला कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत वागद्रे के नेतृत्व में सैकड़ों कांग्रेसजनों ने जमकर नारेबाजी कर कार्यवाही वापस लेने की मांग की। ज्ञापन में कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर विपक्षी नेताओं को बदले की द्वेषपूर्ण भावना से निशाना बनाने और संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ नेशनल हेराल्ड प्रकरण में ईडी द्वारा हाल ही में आरोप पत्र दाखिल किया गया है। पूर्व में इसकी जांच होकर 2016 में यह प्रकरण बंद हो चुका था। ज्ञापन में कहा गया कि यह कार्रवाई दुर्भाग्यपूर्ण है, यह केंद्र की भाजपा सरकार की संकीर्ण राजनीतिक मानसिकता को दर्शाती है। गांधी-नेहरू परिवार ने देश के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया है एवं अपनी करोड़ो रुपयों की संपत्ति देश के नाम कर दी, लेकिन इसके बावजूद उन्हें बार-बार अपमानित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

विपक्षी दलों को निशाना बना रही सरकार– जिला अध्यक्ष हेमन्त वागद्रे ने कहा कि वर्ष 2014 से केंद्र की भाजपा सरकार लगातार कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों के नेताओं को ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स जैसी सरकारी एजेंसियों के जरिए निशाना बना रही है। यह लोकतंत्र के मूल्यों पर सीधा हमला है और इसकी जितनी निंदा की जाए, वह कम है। ज्ञापन में राष्ट्रपति से निवेदन किया गया कि वे भारत के संविधान के संरक्षक होने के नाते इस प्रकरण का संज्ञान लें और केंद्र सरकार से स्पष्टीकरण मांगे कि बिना किसी मूल शिकायत के वर्षों पुराने मामले को दोबारा खोलकर विपक्ष के शीर्ष नेताओं को क्यों प्रताड़ित किया जा रहा है।

निष्पक्ष और स्वतंत्र न्यायिक जांच की मांग

पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे ने मांग की है कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता की आड़ में लोकतंत्र को कुचलने की साजिश को रोका जाए और संवैधानिक संस्थाओं की गरिमा बनाए रखने के लिए त्वरित हस्तक्षेप किया जाए। साथ ही यह भी मांग की गई कि इन कार्रवाइयों की निष्पक्ष और स्वतंत्र न्यायिक जांच कराई जाए, ताकि देश की जनता के बीच एजेंसियों की निष्पक्षता और लोकतंत्र की साख बनी रह सके। पूर्व विधायक निलय डागा ने कहा कि यह प्रदर्शन और ज्ञापन प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार प्रदेश भर की कांग्रेस इकाइयों द्वारा सौंपा जा रहा है, जिससे देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक जनता और जनप्रतिनिधियों की असहमति दर्ज हो सके। प्रदेश महामंत्री रामू टेकाम ने कहा कि भाजपा अपने गिरते एवं कांग्रेस के बढ़ते जनाधार से घबराकर कांग्रेस नेताओं को परेशान कर जनता का ध्यान भटका रही है। इस अवसर पर आदिवासी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम, प्रदेश सचिव समीर खान, प्रदेश प्रतिनिधि नवनीत मालवीय, मनोज मालवे, संभागीय प्रवक्ता हेमंत पगारिया, नपा अध्यक्ष आमला नितिन गाडरे, सेवादल जिला अध्यक्ष अनुराग मिश्रा, सोनू पाल सहित सैकड़ों कांग्रेस पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

पुरुषों के अधिकारों के लिए दिल्ली में होगा सत्याग्रह

डॉ. संदीप गोहे के नेतृत्व में दिल्ली रवाना होगी एसआईएफ बैतूल की टीम

बैतूल। देशभर में झूठे मुकदमों, वैवाहिक विवादों, आत्महत्या और मानसिक उत्पीड़न जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहे पुरुषों के समर्थन में 19 अप्रैल को दिल्ली के जंतर-मंतर पर एक ऐतिहासिक आंदोलन होने जा रहा है। सेव फैमिली फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित इस शांतिपूर्ण आंदोलन का नाम पुरुष सत्याग्रह रखा गया है। यह कार्यक्रम देशभर के पुरुष अधिकारों के लिए लड़ रहे संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का सबसे बड़ा मंच बनने जा रहा है। इस आंदोलन में बैतूल जिले से भी एसआईएफ बैतूल की टीम शामिल होने जा रही है। यह टीम जिले की एकमात्र ऐसी गैर-सरकारी संस्था है जो पुरुषों के अधिकारों की रक्षा के लिए निरंतर सक्रिय है। एसआईएफ बैतूल झूठे दहेज प्रकरण, घरेलू हिंसा कानूनों के दुरुपयोग, वैवाहिक विवादों, आत्महत्या के बढ़ते मामलों और पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर काम कर रही है। एसआईएफ बैतूल के संस्थापक डॉ संदीप गोहे ने बताया कि दिल्ली में होने जा रहा यह सत्याग्रह पुरुषों को भी समाज में न्याय और समानता दिलाने की पहल है। उन्होंने कहा कि आज समाज में जिस प्रकार पुरुषों को झूठे आरोपों में फंसाया जा रहा है और कानूनी असंतुलन की वजह से कई निर्दोष पुरुष आत्महत्या तक कर रहे हैं, वह चिंता का विषय है। उन्होंने यह भी बताया कि पुरुष सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य इन मुद्दों को राष्ट्रीय मंच पर लाकर न्यायिक और सामाजिक सुधारों की मांग करना है। डॉ संदीप गोहे के नेतृत्व में बैतूल से रवाना हो रही एसआईएफ बैतूल की टीम दिल्ली में जिले का प्रतिनिधित्व करेगी और जंतर-मंतर पर आयोजित इस सत्याग्रह में पुरुषों की आवाज़ को मजबूती से प्रस्तुत करेगी। डॉ गोहे ने बताया दिल्ली में होने वाला यह ऐतिहासिक सत्याग्रह पुरुषों की पीड़ा, उनकी उपेक्षित आवाज़ और न्याय की मांग को लेकर एक निर्णायक कदम साबित हो सकता है, जिसमें बैतूल की भागीदारी भी अहम भूमिका निभाएगी।

बैतूल विधायक ने दिव्यांग बेटी की जिंदगी को बनाया आसान

निकिता पवार को दी मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल की सौगात

बैतूल। विधानसभा क्षेत्र के विकास के लिए सतत प्रयासरत बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल द्वारा बीते दिनों क्षेत्र में भ्रमण के दौरान सापना सोहागपुर के समीप मिली अस्थिबाधित दिव्यांग बेटी निकिता पवार को बैतूल विधायक नें मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल की सौगात देकर उसकी जिंदगी को आसान बना दिया। मोटराइज्ड मिलने के बाद दिव्यांग बेटी निकिता के चेहरे पर आत्मविश्वास की झलक साफ दिखाई दे रही है। उल्लेखनीय है कि गत दिनों बैतूल बाजार मंडल के ग्रामीण इलाकों में भ्रमण के दौरान सापना - सोहागपुर मार्ग पर एक वृद्ध महिला के साथ ट्राईसाइकिल से जा रही बेटी नजर आने पर बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें गाड़ी से उतरकर दिव्यांग बिटिया से भेंटकर उसकी समस्या सुनी थी। सापना कॉलोनी निवासी निकिता पवार नें बैतूल विधायक को बताया कि उसकी ट्राईसाइकिल क्षतिग्रस्त हो गई है जिससे उसे आने - जाने में परेशानी होती है। निकिता नें विधायक से मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल दिलवाने की मांग की। बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें निकिता को मोटराइज्ड दिलवाने के साथ ही हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। साथ ही अपने वाहन से निकिता और उसकी नानी को उनके घर तक पहुंचाया था।

मोटराइज्ड दिलवाकर बैतूल विधायक ने बढ़ाया हौसला..

दिव्यांग बिटिया निकिता को मोटाराइज्ड ट्राईसाइकिल देनें के लिए बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें उपसंचालक, सामाजिक न्याय एवं निशक्त जन कल्याण विभाग बैतूल को निर्देश दिए। जिसके परिपालन में उपसंचालक नें दिव्यांग बिटिया को मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल उपलब्ध कराई। मोटराइज्ड की सौगात मिलनें से निकिता की खुशी का ठिकाना नहीं है ।साथ ही उसके चेहरे पर आत्मविश्वास की झलक साफ दिखाई देती है। निकिता बताती है कि उसके पिता का निधन हो गया है। मां मजदूरी करती है। इसलिए वह नाना-नानी के पास रहती है। निकिता के मुताबिक बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें मोटराइज्ड दिलवाकर उसका हौसला बढाया है। अब उसकी जिंदगी आसान हो गई है। मोटराइज्ड मिलने से दुकान से सामान लाने सहित अन्य कार्य करना उसके लिए आसान हो गया है।

मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में आज खेलों का इतिहास दोहराएगा बैतूल

विश्व कप विजेता अशोक कुमार और महान खिलाड़ियों को मिलेगा सम्मान

बैतूल। बैतूल में 17 अप्रैल को खेल प्रेमियों को वो सब कुछ देखने मिलेगा जो शायद ही पहले कभी हुआ हो। 1975 की हॉकी विश्व विजेता भारतीय टीम के नायक अशोक कुमार खुद मौजूद रहेंगे, जिन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ फाइनल में जीत का गोल दागा था। मेजर ध्यानचंद हाकी स्टेडियम में शाम 5 बजे से आयोजित कार्यक्रम में फुटबॉल और एथलेटिक्स में समान रूप से निपुण खिलाड़ी रह चुके अतिथि मंच पर विराजमान होंगे। दिवंगत खिलाड़ियों को पुष्पांजलि अर्पित की जाएगी और समापन पर गायक धीरज बोथरा, बुजुर्ग खिलाड़ियों को समर्पित कर जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां... गीत गाकर माहौल भावुक कर देंगे। फिर आसमान आतिशबाजी से जगमगाएगा और बैतूल के खेल इतिहास में एक और सुनहरा पन्ना जुड़ जाएगा। इस समारोह की जानकारी वरिष्ठ खिलाड़ी संघ के अध्यक्ष रमेश भाटिया और सचिव मुकेश वर्मा लल्ली ने दी। उन्होंने बताया कि यह आयोजन बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के मार्गदर्शन में होने जा रहा है और वे ही कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे। इस आयोजन में बैतूल के उन महान खिलाड़ियों का भावपूर्ण सम्मान किया जाएगा, जिन्होंने जिले का नाम रोशन किया है। रमेश भाटिया और मुकेश वर्मा लल्ली ने बताया कि विधायक हेमंत खंडेलवाल स्वयं पारंपरिक भारतीय खेल खो-खो के राष्ट्रीय खिलाड़ी रहे हैं और यही वजह है कि वे विधायक होते हुए भी खुद को पहले एक खिलाड़ी मानते हैं। उन्होंने हमेशा खिलाड़ियों के साथ खड़े होकर खेल गतिविधियों को आगे बढ़ाया है।

विधायक हेमंत खंडेलवाल का प्रयास हुआ सार्थक– वरिष्ठ वॉलीबॉल खिलाड़ी बबन शर्मा और नरेश शर्मा ने बताया कि पूर्व सांसद विजय कुमार खंडेलवाल और वर्तमान विधायक हेमंत खंडेलवाल के प्रयासों से बैतूल को स्विमिंग पूल, स्केटिंग मैदान और मेजर ध्यानचंद स्टेडियम जैसी खेल सुविधाएं प्राप्त हुईं। इन सुविधाओं से खिलाड़ियों को अपने खेल कौशल को निखारने का अवसर मिला है और विधायक हेमंत खंडेलवाल आज भी खेल सुविधाओं को बढ़ाने के लिए लगातार सक्रिय हैं। इस अवसर पर 1975 की हॉकी विश्व विजेता भारतीय टीम की यादों से जुड़ी चित्र प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। इस प्रदर्शनी को खेल शिक्षक नितेश राजपूत द्वारा तैयार किया गया है। उन्होंने बताया कि इस प्रदर्शनी में 1975 के फाइनल में पाकिस्तान के खिलाफ भारत को विजयी बनाने वाले अशोक कुमार स्वयं उपस्थित रहेंगे, जिन्होंने ऐतिहासिक गोल किया था।

कार्यक्रम में शामिल होने की अपील– कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ खिलाड़ी नरेंद्र सिंह ठाकुर और मुकेश वर्मा लल्ली द्वारा किया जाएगा। आयोजन समिति के प्रमुख सदस्य मनप्रीत सिंह वालिया ने बताया कि सभी खिलाड़ी एक टीम की भावना से अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। जपप्रीत सिंह वालिया ने कहा कि नगर के नागरिकों, खिलाड़ियों और मीडिया का अभूतपूर्व सहयोग इस आयोजन को मिल रहा है। बैतूल के सभी खिलाड़ियों ने नागरिकों से इस ऐतिहासिक और भावनात्मक कार्यक्रम में सपरिवार शामिल होने की अपील की है।

भोपाल में नाबालिग से रेप करने वाले को उम्रकैद

भोपाल (नप्र)। भोपाल की विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट कुमुदिनी पटेल ने 14 साल की नाबालिग को अगवा कर रेप करने वाले आरोपी को उम्रकैद की सजा सुनाई है। शासन की ओर से विशेष लोक अभियोजक दिव्या शुक्ला और ज्योति कुजूर ने मामले में पैरवी की थी। आरोपी शरीफ अता ने 9 दिसंबर 2019 को पीड़िता को गोविंदपुरा इलाके से अगवा किया था। उसे सीहोर ले जाने के बाद एक कमरे में बंधक बनाकर ज्यादती की थी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपहरण, रेप और पास्को एक्ट की धाराओं में केस दर्ज किया था।

ऐसे दिया था वारदात को अंजाम- 9 दिसंबर 2019 को पीड़िता के पिता ने गोविन्दपुरा थाने पहुंचने के बाद बताया कि उनकी 14 वर्षीय नाबालिग पुत्री को आरोपी शरीफ अता दूध लेने का कहकर अपने साथ ले गया। इसके बाद से ही आरोपी नहीं लौटा था। शरीफ अता पीड़िता के भाई के दोस्त का मुंह बोला चाचा था। जो घटना के आठ दिन पहले से पीड़िता के घर में रह रहा था।

बच्ची को सीहोर से रिकवर किया गया था- दो दिन बाद पुलिस ने बच्ची को सीहोर से दस्तयाब किया था। तब पीड़िता ने पुलिस को दिए बयानों में बताया कि आरोपी उसे दूध दिलाने का बोलकर साथ ले गया। जबरन नादरा बस स्टैंड तक ले गया और वहां से सीहोर लेकर चला गया। वहां एक बूढ़ी अम्मा के कमरे में उसे बंधक बनाकर रखा और गलत काम किया। बयानों के आधार पर पुलिस ने धारा 363, 366, 376 (3) भादवि 3/4, 5/6 पॉक्सो एक्ट व 3(2)5 एससीएसटी एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया था।

आरटीओ ने जब्त की एलपीजी से दौड़ रही 6 गाड़ियां

परिवहन सुरक्षा स्क्वॉड भोपाल ने की कार्रवाई, 18000 रुपए जुर्माना भी वसूला

भोपाल (नप्र)। भोपाल में बुधवार को परिवहन विभाग ने एलपीजी से दौड़ रही 6 गाड़ियों को जब्त किया। इन वाहन मालिकों से 18 हजार रुपए का जुर्माना भी वसूला है।

क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी भोपाल के निर्देशानुसार परिवहन सुरक्षा स्क्वॉड ने यह कार्रवाई की। अनधिकृत रूप से एलपीजी गैस से संचालित वाहनों के खिलाफ कार्रवाई के दौरान 6 ऐसे वाहनों को जब्त किया गया, जो अवैध रूप से एलपीजी का उपयोग कर रहे थे। इन वाहनों को क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय भोपाल के परिसर में खड़ा कराया गया है।

नियमों को तोड़ने पर भी कार्रवाई- इसके अलावा अन्य नियम उल्लंघन करने वाले वाहनों के विरुद्ध मोटर वाहन अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत कार्रवाई करते हुए कुल 18000 रुपए जुर्माना वसूला। तीन टीमों ने यह कार्रवाई की।

मुरैना जिला अस्पताल में आग, 1 मरीज की मौत

मुरैना (नप्र)। मुरैना जिला अस्पताल की पुरानी बिल्डिंग के मुख्य ओटी, बर्न यूनिट और सर्जिकल वार्ड में बुधवार शाम 6 बजे आग लग गई। जैसे ही आग लगी सभी अटेंडर अपने मरीज को लेकर बाहर की तरफ भागे। जल्दबाजी में एक मरीज का ऑक्सीजन मास्क निकल गया। जब तक उसे बाहर लाया गया, तब तक उसकी मौत हो चुकी थी।

आग लगते ही सर्जिकल वार्ड के बगल वाली गैलरी में धुआं फैल गया। सर्जिकल वार्ड और 1 वार्ड के सभी मरीजों को फौरन बाहर निकाला गया। कुछ मरीजों को अटेंडर बाहर लाए तो कुछ मरीज ड्रिप निकालकर खुद बाहर निकले। एक मरीज घिसटते हुए बाहर आते दिखा।

किसी ने इसकी सूचना फायर ब्रिगेड को दी। दमकल वाहन आया भी, लेकिन वह अंदर तक नहीं पहुंच सका। हालांकि कर्मचारियों ने समय पर आग बुझाकर उसे पर काबू कर लिया। हादसे के दौरान बड़ी लापरवाही भी दिखी। जिला अस्पताल में फायर सेफ्टी सिस्टम की पाइपलाइन डाली गई है। लेकिन उसकी न तो सीटी बजी और ना ही सायरन बजा।

मोहनबाई शेतानमल लोढ़ा के निधन पर परिजनों ने उनके नेत्रदान किए

नेत्रदान से 4 लोगों को आँखों में रोशनी प्राप्त होगी

धार। श्री सुमति नाथ मंदिर धार के ट्रस्टी एवं जैन समाज के धार्मिक कार्यो व साधु संतों की सेवा में अग्रणी समाजसेवी राजेंद्र जैन की माताजी एवं यश गुगलिया की दादी सास श्रीमती मोहनबाई

शेतानमल जी लोढ़ा का आकस्मिक प्रभु मिलन हो गया । इस कठिन और दुखद की घड़ी में परिवार द्वारा उनके नेत्रदान करने का अनुकरणीय, प्रेरणा दायक, साहसिक व त्वरित निर्णय लिया गया। धार मानव सेवा कल्याण समिति के माध्यम से उनका नेत्रदान किया गया । आपके द्वारा किये गए इन दो नेत्रदान से 4 लोगो को आँखों में रोशनी प्राप्त होगी साथ ही समाज के अन्य लोगो को प्रेरणा भी प्राप्त होगी। धार मानव सेवा कल्याण समिति आपके इस सराहनीय कदम की बहुत बहुत अनुमोदना करते हुए पुण्यात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जनरल उपेंद्र द्विवेदी 'विंध्य की माटी का गौरव': उप मुख्यमंत्री शुक्ल

उप मुख्यमंत्री ने थलसेना अध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी का भोपाल स्थित निवास पर किया आत्मीय स्वागत

भोपाल । उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने बुधवार कोअपने भोपाल स्थित निज निवास पर भारतीय थलसेना अध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी एवं उनकी धर्मपत्नी का सपरिवार आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि विंध्य अंचल की धरती से निकलकर भारतीय सेना के सर्वोच्च पद पर पहुंचे जनरल उपेंद्र द्विवेदी 'विंध्य की माटी के गौरव' हैं। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने जनरल उपेंद्र द्विवेदी को देश की सीमाओं की सुरक्षा में उनकी वीरता, नेतृत्व क्षमता एवं अनुकरणीय सेवाओं के लिए हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि जनरल द्विवेदी विंध्य क्षेत्र के उन अनमोल रत्नों में से हैं, जिन पर सम्पूर्ण प्रदेश को गर्व है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि जनरल द्विवेदी जैसे व्यक्तित्वों से युवा पीढ़ी को प्रेरणा मिलती है।

मजदूरों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली को ट्रक ने मारी टक्कर, एक की मौत, 20 घायल

ट्रक में भरे कप, प्लेट लूट ले गए राहगीर

गुना (नप्र)। गुना जिले के पाटई इलाके में नेशनल हाईवे पर बुधवार शाम को एक तेज रफ्तार ट्रक ने मजदूरों से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे एक मजदूर की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 20 घायल हो गए। हादसे के बाद मौके पर अफरातफरी मच गई। घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

मजदूरी कर लौट रहे थे 30 मजदूर

जानकारी के अनुसार, खराई गांव के रहने वाले आदिवासी मजदूरों को धमनार गांव मजदूरी के लिए लाया गया था। शाम को मजदूरी के बाद लगभग 30 मजदूरों को ट्रैक्टर ट्रॉली से वापस गांव छोड़ा जा रहा था। शाम करीब 6:30 बजे जैसे ही ट्रैक्टर नेशनल हाईवे पर पहुंचा, पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रक ने ट्रॉली को टक्कर मार दी।

ट्रक और ट्रैक्टर दोनों पलटे

टक्कर के बाद ट्रॉली और ट्रैक्टर दोनों पलट गए। ट्रैक्टर तो उल्टा होकर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया, जबकि ट्रक भी सड़क किनारे पलट गया। ट्रॉली में बैठे मजदूर दूर जा गिरे, और कुछ उसी में दबकर घायल हो गए। एक मजदूर की मौके पर ही मौत हो गई। म्याना थाना और उमरी पुलिस चौकी से पुलिस टीम तुरंत मौके पर पहुंची और सभी घायलों को 108 एम्बुलेंस की मदद से जिला अस्पताल भेजा गया। जहां घायलों का इलाज चल रहा है।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने आज राजभवन में सौजन्य भेंट की।

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने मंत्रालय में विभागीय अधिकारियों के साथ पिछड़ा वर्ग कल्याण, विमुक्त,घुमंतु एवं अर्ध घुमंतु विभाग की योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

एम्स भोपाल ने महिला सशक्तिकरण पर निबंध प्रतियोगिता के साथ मनाई अंबेडकर जयंती

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में संस्थान ने भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 135वीं जयंती के उपलक्ष्य में 15 अप्रैल, 2025 को नर्सिंग कॉलेज में एक निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया। 'महिला सशक्तिकरण: डॉ. बी.आर. आबेडकर की विरासत विषय पर आधारित इस कार्यक्रम का उद्देश्य डॉ. अंबेडकर द्वारा वंचित वर्गों के उत्थान एवं महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए किए गए ऐतिहासिक योगदान को सम्मानित करना था। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों और नर्सिंग स्टाफ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और डॉ. अंबेडकर के भारतीय संविधान निर्माण, सामाजिक न्याय की स्थापना तथा लैंगिक समानता की दिशा में किए गए प्रयासों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रतिभागियों ने अपनी रचनाओं में मौलिकता, प्रासंगिकता और रचनात्मकता का परिचय देते हुए डॉ. अंबेडकर के आदर्शों की सजीव अभिव्यक्ति की। प्रो. (डॉ.) अजय सिंह द्वारा प्रतियोगिता के शीर्ष तीन प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया और उन्होंने प्रतिभागियों की गहरी सोच और समझ की सराहना की। प्रथम पुरस्कार कु. वीना पांडे (प्रथम वर्ष बी.एससी. नर्सिंग) को, द्वितीय पुरस्कार श्री जयेश कुमार (सीनियर नर्सिंग ऑफिसर - एसएनओ) को तथा तृतीय पुरस्कार श्री उदय पंथ (तृतीय वर्ष एमबीबीएस) को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, डॉ. बी.आर. अंबेडकर का योगदान कालातीत है। सामाजिक सुधार, संविधानिक मूल्यों और महिला सशक्तिकरण की दिशा में उनके अटूट प्रयास आज भी पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं। यह निबंध प्रतियोगिता न केवल उनकी विरासत को श्रद्धांजलि है, बल्कि युवाओं को समावेशी और न्यायसंगत समाज की दिशा में सोचने और संवाद करने का अवसर भी प्रदान करती है। इस कार्यक्रम का सफल समन्वय डॉ. संतोष वाकोड़े, डॉ. ममता वर्मा, डॉ. वैशाली वालके एवं श्री राजकुमार द्वारा किया गया, जिन्होंने प्रतिभागियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की। इस अवसर पर निर्णायक मंडल में डॉ. विजेन्द्र सिंह, डॉ. सीमा महंत एवं डॉ. राजरतन गुप्ता शामिल रहे, जिन्होंने रचनाओं का मूल्यांकन रचनात्मकता, प्रासंगिकता एवं अंतर्दृष्टि के आधार पर किया। इस प्रतियोगिता के अतिरिक्त, एम्स भोपाल द्वारा पूरे माह डॉ. अंबेडकर जयंती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इनमें 11 से 14 अप्रैल तक रक्तदान शिविर शामिल रहा, जिसमें 65 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया तथा बंगाली बस्ती क्षेत्र में एक स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जहां बड़ी संख्या में मरीजों को चिकित्सकीय सेवाएं प्रदान की गईं। ये सभी आयोजन प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के सतत समर्थन एवं दूरदर्शी नेतृत्व का परिणाम हैं, जिनके मार्गदर्शन में एम्स भोपाल डॉ. अंबेडकर की विचारधारा एवं विरासत को सार्थक रूप से जीवंत रखे हुए है।

एमपी में तेज गर्मी के बीच बदला मौसम

धार के मनावर और पांढुर्णा में पानी गिरा, अगले कुछ घंटों में 7 जिलों में बारिश का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अगले 3 दिन तेज गर्मी के अलर्ट के बीच बुधवार को कुछ जिलों में मौसम बदला है। धार के मनावर में करीब आधे घंटे तक तेज बारिश हुई। वहीं पांढुर्णा में भी पानी गिरा है।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में खरगोन और बालाघाट जिले में मध्यम गरज के साथ बारिश होने का अलर्ट जारी किया है। सिवनी, मंडला, बड़वानी, बुरहानपुर और बैतूल में भी हल्की गरज के साथ बारिश हो सकती है।धार जिले के मनावर में बुधवार शाम 4 बजे नगर और आसपास के क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ जोरदार बारिश हुई।

पांढुर्णा में आधे घंटे तक तेज बारिश- पांढूर्णा में बुधवार दोपहर करीब साढ़े 3 बजे अचानक बारिश होने लगी। आधे घंटे लगातार बारिश जारी रही। भीषण गर्मी में अचानक बारिश होने से लोगों को गर्मी से राहत मिली है। हालांकि किसानों की चिंता बढ़ गई, क्योंकि गेहूं की फसल कटकर खेतों में रखी है।

अगले 3 दिन तेज गर्मी का असर रहेगा- मध्यप्रदेश में अगले 3 दिन तेज गर्मी का असर रहेगा। ग्वालियर, चंबल, इंदौर और उज्जैन संभाग के जिलों में हीट वेव यानी, लू भी चल सकती है। बुधवार को प्रदेश के सभी जिलों में गर्मी बढ़ने का अलर्ट है। भोपाल, इंदौर, उज्जैन और सागर संभाग में पारा 41 डिग्री के पार रहेगा।

मौसम विभाग ने 18 अप्रैल तक तेज गर्मी की संभावना जताई है। इस दौरान बारिश के आसार नहीं है। पूर्वी हिस्से यानी, जबलपुर, रीवा-शहडोल संभाग में कहीं-

कहीं बूंदाबांदी हो सकती है।

अभी 3 सिस्टम एक्टिव- मौसम विभाग के अनुसार, प्रदेश में अभी तीन सिस्टम एक्टिव है। इनमें दो साइक्लोनिक सकुर्लेशन और तीसरा ट्रफ शामिल हैं। 16 अप्रैल से पश्चिमी हिमालय क्षेत्र को नया वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) प्रभावित कर सकता है। ऐसा होता है तो प्रदेश में दो दिन बाद असर देखने को मिलेगा। जिससे पारे में 2 से 3 डिग्री की गिरावट हो सकती है।

18-19 अप्रैल को अवकाश के बावजूद सभी उपार्जन केन्द्रों पर होगी गेहूं की खरीदी : खाद्य मंत्री राजपूत

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के अन्नदाताओं की सुविधा और हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि अब सभी उपार्जन केन्द्रों पर आगामी 18 और 19 अप्रैल को सार्वजनिक अवकाश होने के बावजूद गेहूं की खरीदी का कार्य निर्बाध रूप से जारी रहेगा। इसके लिए किसान स्लॉट बुक करा सकते हैं।

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया कि यह निर्णय किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए लिया गया है, ताकि उपार्जन प्रक्रिया में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न हो। किसान इन तिथियों में स्लॉट बुक कर बिना किसी परेशानी के गेहूं विक्रय कर सकेंगे। इसके लिए सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं।

कलेक्टरों को दिए गए निर्देश- खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने समस्त जिलों के कलेक्टरों को निर्देशित किया है कि वे अपने-अपने जिलों में उपार्जन केन्द्रों की निरंतर मॉनीटरिंग करें। उपार्जन कार्य से जुड़े कर्मचारियों, अधिकारियों और एजेंसियों को भी सख्त हिदायत दी गई है कि किसानों को कतारों में लंबा इंतजार न करना पड़े, तुलाई, रख-रखाव, भुगतान और परिवहन की सभी व्यवस्थाएँ समय पर और पारदर्शिता से हों।

किसानों को न हो कोई असुविधा- खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि सरकार किसान हितैषी है। यह सुनिश्चित करना हमारा दायित्व है कि किसानों को अपने उत्पाद बेचने के लिए अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े। इसलिए अवकाश के दिन भी उपार्जन कार्य जारी रखा जाएगा। सभी संबंधित विभागों को आवश्यक संसाधनों और कर्मचारियों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश जारी किए जा चुके हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यदि किसी भी उपार्जन केन्द्र से लापरवाही या अनियमितता की शिकायत प्राप्त होती है तो जिम्मेदार अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध तत्काल कठोर कार्रवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री कन्यादान कार्यक्रम समरसता का कुंभ है : भूपेंद्र सिंह

खुरई। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत आयोजित सामूहिक विवाह समारोह सामाजिक समरसता का कुंभ है। सामाजिक समरसता से ही राष्ट्र की मजबूती संभव होती है। यह उद्गार पूर्व गृहमंत्री, खुरई विधायक श्री भूपेन्द्र सिंह ने यहां मुख्यमंत्री कन्यादान योजना अंतर्गत आयोजित 697 बेटियों के सामूहिक विवाह कार्यक्रम में शामिल हुए हजारों लोगों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। पूर्व गृहमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह कार्यक्रम में ने स्वयं भी अहिरवार समाज की एक कन्या जानकी अहिरवार का पूरे विधि-विधान सहित कन्यादान करके सामाजिक समरसता की मिसाल प्रस्तुत की।

पूर्व गृहमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि सामाजिक समरसता आज देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है। कांग्रेस अपनी राजनीति के लिए देश को धर्म, जातियों और समाजों में तोड़ने में लगी है। राष्ट्र सामाजिक समरसता से ही मजबूत होगा। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत होने वाले ऐसे आयोजनों से देश को एक सूत्र में बांधने का काम भी होता है।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में सभी जाति धर्म समुदायों की बेटियों के विवाह एक पंडाल में एक जैसी व्यवस्था में हो रहा है। महाकुंभ की तरह यहां भी कोई किसी से जाति या धर्म नहीं पूछता। भाजपा सामाजिक समरसता को मानने वाली पार्टी है। आज खुरई में हुए 697 बेटियों के विवाह समारोह में 22 मुस्लिम बेटियों के निकाह भी शामिल हैं। मैं प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी अपने परिवार के साथ अनुसूचित जाति समाज की एक कन्या जानकी अहिरवार के पैर पूज कर कन्यादान कर रहा हूं। श्री सिंह ने कहा कि जाति, धर्म, समाज को बांटने की कोशिश करने वालों को इस कार्यक्रम से बड़ा जवाब और कोई नहीं हो सकता। पूर्व गृहमंत्री, विधायक श्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि नारी समाज का आधार है। हमारी संस्कृति नारी प्रधान संस्कृति है जहां बेटियों को देवी स्वरूप मानकर पूजा जाता है।

संगीतमय श्री शिवमहापुराण कथा महोत्सव समारोह 26 से

बैतूल। विनोबा शिव शक्ति ग्रुप बैतूल युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल के तत्वावधान में सप्त दिवसीय श्री शिव महापुराण महोत्सव का आयोजन 26 अप्रैल दिन शनिवार से 2 मई दिन शुक्रवार तक विनोबा वार्ड बैतूल में आयोजित की जा रही है। आयोजन समिति ने बताया कि 26 अप्रैल दिन शनिवार को सुबह 10 बजे से कथा स्थल से श्री माता मंदिर तक कलश यात्रा निकाली जाएगी एवं साम 4 बजे से 7 बजे तक श्री शिव महापुराण कथा महोत्सव समारोह का आयोजन किया जाएगा। पार्थिव शिवलिंग पूजन प्रतिदिन सुबह 9 से 11 बजे तक पार्थिव आयोजित किया जाएगा। कथा व्यास के रूप में सुश्री जया देवी प्रतिदिन व्यास पीठ से शिव भक्ति की महिमा का बखान करेगी। 26 अप्रैल दिन शनिवार को शाम 4 से 7 श्री शिवमहापुराण कथा महात्म्य एवं श्री शिव पुराण श्रवण से देवराज को शिवलोक की प्राप्ति पर कथा, 27 अप्रैल को श्री शिवमहापुराण की कथा श्रवण से बिंदूक और चंचूला को शिवलोक की प्राप्ति पर कथा, श्री शिवलिंग पूजन का महत्व पर कथा होगी। 28 को भगवान शिव का अग्नि स्तंभ रूप में प्राकट्य, शिवलिंग की स्थापना पूजन विधि पर कथा होगी। 29 को पार्थिव शिवलिंग के निर्माण की रीति तथा पार्थिव शिवलिंग के पूजन का महत्व एवं नारद मोह पर कथा होगी। 30 को भस्म रुद्राक्ष और भगवान शिव नाम का महत्व का वर्णन, रुद्राक्ष धारण की महिमा पर कथा होगी एवं श्री शिव पार्वती विवाह, श्री गणेश रिद्धि सिद्धि विवाह की लीला एवं झांकी का प्रसंग का मंचन किया जाएगा। 1 मई को मैना के रूठने पर ब्राह्मण पत्नी का मां पार्वती को पतिव्रत धर्म का उपदेश, भगवान कार्तिकेय प्रकट एवं तारकासुर वध पर कथा होगी 2 मई दिन शुक्रवार को कथा सुबह 10 बजे से 1 तक होगी, इसमें भगवान शिव का जालंधर से युद्ध राक्षसों का वध एवं द्वादश ज्योतिर्लिंग महिमा वर्णन किया जाएगा। 2 मई को 1 से 2 बजे तक हवन पूजन का आयोजन किया जाएगा। भंडारा प्रसादी वितरण 2 मई दिन शुक्रवार को दोपहर 3 बजे से 7 बजे तक आयोजित किया गया है जिला वासियों से सप्त दिवसीय शिव महापुराण कथा महोत्सव समारोह में उपस्थित रहकर कथा श्रवण करने का आग्रह किया गया है।

वडनेरकर को मातृ शोक

धार। महाराष्ट्र ब्राम्हण सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं जिला अभिभाषक संघ धार के वरिष्ठ अभिभाषक उदय वडनेरकर,हेमंत रोकड़े सुहास रोकड़े की माताजी श्रीमती

पदमाबाई जी का आज लंबी आयु के बाद निधन हो गया स्थानीय मझलीआली से उनकी अंतिम यात्रा निकली, कालिका मार्ग स्थित मुक्ति धाम पर उनके पुत्र हेमंत रोकड़े ने मुखाग्नि दी। अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में समाजजन अभिभाषक संघ के सदस्यों व जनप्रतिनिधियो ने शामिल होकर शोक संवेदनाएं व्यक्त की।

॥ मंदिरम् ॥ 85

चंग वटेश्वर मंदिर, महाराष्ट्र

चंग वटेश्वर मंदिर पुणे के बाहरी इलाके में सासवड के पास नारायणपुर गांव में पुरंदर किले की तलहटी में स्थित है। यह मंदिर हेमाडपंती शैली में है, इसकी दीवार पर शिलालेख हैं जो चांगदेव महाराज की शिक्षाओं का प्रचार करता हैं। इस मंदिर का निर्माण संत चांगदेव ने शुरू करवाया था। वह प्रतिदिन अपने बाएं हाथ पर शिवलिंग रखकर भगवान शिव की पूजा करते थे। लेकिन जब एक दिन हाथ से उन्होंने शिवलिंग को उठाने की कोशिश की तो वह अपनी जगह से नहीं हिला। तब से ही यहाँ पर उन्होंने भोलेनाथ जी का मंदिर बनवाया। उन्होंने उसी स्थान पर मंदिर बनवाया जहां प्रारंभ में शिवलिंग स्थित था। बाद में 1700 ई. में सरदार आबाजीपंता पुरंदरे द्वारा इसका जीर्णोद्धार कराया गया। यह मंदिर वास्तुकला की 'हेमाडपंती' शैली में बनाया गया है। यहां हम मंदिर के बाहर दो विशाल 'दीपमल' (एक मीनार जिस पर तेल के दीपक जलाए जाते हैं) देख सकते हैं। इस मंदिर के 'सभामंडप' में एक बड़ा 'नंदी' भी स्थापित किया हुआ है। यह स्थान चारों ओर बहुत सारे इमली के पेड़ों के साथ बहुत साफ और शांतिपूर्ण है। इस मंदिर में मराठी फिल्म 'वलु' के कुछ दृश्य फिल्माए गए हैं।

मध्यप्रदेश कृषक कल्याण मिशन किसानों के समग्र विकास की दिशा में ऐतिहासिक पहल : मुख्यमंत्री

किसानों की आर्थिक समृद्धि के लिए मंत्रिपरिषद ने दी है मिशन को सैद्धांतिक मंजूरी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश कृषि आधारित राज्य है और इस क्षेत्र में यहां अपार संभावनाएं हैं। किसानों की आय, कृषि उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन में वृद्धि के साथ-साथ खाद्य प्र-संस्करण और कृषि से उत्पादित कच्चे माल पर आधारित औद्योगिक इकाई स्थापित करने जैसे हर संभव प्रयास जारी हैं। किसानों और गौपालकों की आय बढ़ाने के साथ-साथ कुपोषण दूर करने की दिशा में सरकार योजनाबद्ध तरीके से पूरी ऊर्जा के साथ कार्य कर रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण योजनाएं तैयार की जा रही हैं। मध्यप्रदेश में वर्तमान दुग्ध उत्पादन 9 प्रतिशत से बढ़ाकर जल्द से जल्द 20 प्रतिशत तक करने के लिए राज्य सरकार ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना प्रारंभ की है। इससे हम घर-घर गोकुल तैयार करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि हमने गौशालाओं में दुधारू पशुओं के लिए भी अनुदान राशि बढ़ाने का भी निर्णय लिया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार को मीडिया को जारी संदेश में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विकसित भारत @2047 के विजन के अनुरूप हमारी सरकार ने गरीब, युवा, अन्नदाता (किसान) और नारी कल्याण के लिए मिशन शुरू कर दिए हैं। मंत्रि-परिषद की गत दिवस मंगलवार को बैठक में मध्यप्रदेश कृषक कल्याण मिशन को सैद्धांतिक स्वीकृति दे दी गई है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार मध्यप्रदेश को विशेषकर गरीबों औरकिसानों को आर्थिक रूप से सुखी और समृद्ध बनाने के लिए प्राण-प्रण से कार्य कर रही है।

सीधी जिले के कालीन मप्र की शान : मंत्री जायसवाल

भोपाल (नप्र)। कुटीर एवं ग्रामोद्योग मंत्री श्री दिलीप जायसवाल ने कहा है कि 'एक जिला एक उत्पाद' योजना के अंतर्गत सीधी जिले की दरी और कालीन को खास पहचान मिली है। सीधी जिले के दरी और कालीन मध्यप्रदेश की शान हैं। मंत्री श्री जायसवाल ने कहा कि स्थानीय कारीगरों की मेहनत को नया बाजार मिलेगा। साथ ही उनकी परंपरा और हुनर को नये मुकाम तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा कि बुनकर मुद्रा योजना के साथ प्रदेश के बुनकरों की तरक्की होगी। योजनांतर्गत, बुनकरों को अब 50 हजार रुपए से लेकर 5 लाख रूपए तक का ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। राज्य और केन्द्र सरकार साझा प्रयास कर बुनकरों को हक और प्रोत्साहन दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। मंत्री श्री जायसवाल ने कहा कि रेशम के धागे से दवाइयाँ और सेरीबैंडेज का निर्माण होगा। ऐसा नवाचार करने के मामले में मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है। उन्होंने कहा कि सतपुड़ा एवं नर्मदा के वनों के ककून से दवाएँ बनाई जाएंगी। पाउडर, क्रीम, सेरीबैंडेज, सिजेरियन ड्रेसिंग, डायबिटिक घाव की ड्रेसिंग तथा ऑपरेशन के बाद की ड्रेसिंग निर्मित होंगी।

सेरीबैंडेज की विशेषताएं–रेशम घाव को गीला नहीं रखता, शरीर के साथ भी नहीं चिपकता तथा रेशम से फायब्रोयिन नामक प्रोटीन निकलता है, जो जख्मों, डायबिटीज से ऊंगलियों में होने वाले घाव और गर्भवती महिलाओं के सर्जिकल डिलीवरी के घाव को कम समय में ठीक करता है।

बीजेपी आलाकमान के इशारे पर विधायक पुत्र ने मांगी माफी

पुजारी के पैर छुए ; संघ प्रचारक ने भी जताई थी नाराजगी

इंदौर (नप्र)। इंदौर-3 विधानसभा सीट से विधायक गोलू शुक्ला के बेटे रुद्राक्ष ने मंगलवार देर रात देवास की चामुंडा टेकरी पहुंचकर पुजारी के पैर छुए, माफी मांगी। इससे पहले उन्होंने देवास कोतवाली थाने में सरेंडर किया, जहां पुलिस ने उन्हें मुचलके पर जमानत दे दी। रुद्राक्ष ने इस दौरान मीडिया से किसी भी तरह की बातचीत करने से इनकार कर दिया।दरअसल, देवास टेकरी विवाद को लेकर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने सख्ती दिखाई है। सोमवार को दिल्ली में पार्टी आलाकमान ने पूरे मामले की रिपोर्ट तलब की थी। इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने बयान दिया था कि कोई भी हो, कानून सबके लिए एक समान है। दोषी पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से भी मामले पर नाराजगी जताई गई थी।बता दें कि रुद्राक्ष और उसके साथियों पर देवास टेकरी के माता मंदिर के पुजारी से मारपीट का आरोप है। शनिवार को कोतवाली थाने पर आवेदन देने के बाद पुजारी परिवार ने रुद्राक्ष के नाम का जिक्र कर मारपीट के आरोप लगाए थे। हालांकि, बाद में वे अपने बयान से पलट गए और कहा कि मामले से विधायक पुत्र का लेना-देना नहीं है।

आलाकमान की सख्ती के बाद बदली रणनीति–बीजेपी सूत्रों के मुताबिक, मामले को शांत करने के लिए पहले यह तय किया गया था कि विधायक गोलू शुक्ला और रमेश मेंदोला देवास जाकर पुजारी और उनके परिवार से मिलेंगे।

भोपाल में चांटे का बदला लेने युवक की बाइक जलाई

जहां वारदात की पुलिस ने गिरफ्तारी के बाद वहीं जुलूस निकाला

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टीला जमालपुरा नगर निगम कॉलोनी में रहने वाले युवक की बाइक को तीन बदमाशों ने आग के हवाले कर दिया। जिस युवक की बाइक को जलाया गया, पूर्व में उसने आरोपियों में से एक को चांटा मारा था। इसी का बदला लेने की नीयत से वारदात को अंजाम दिया गया। पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। एक आरोपी फिलहाल फरार है। गिरफ्तार

आरोपियों का बुधवार की दोपहर को जुलूस निकाला गया। घटना मंगलवार की देर रात की है।

टीआई डीपी सिंह के मुताबिक फराज खान (32) नगर निगम कॉलोनी में रहता है। उसने रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि आरोपी साहिल हनुमानगंज थाने का निगरानी बदमाश है। उसके साथी शब्बर और औबेज भी बदमाश हैं। तीनों मंगलवार की रात को उसके घर आए।

आरोपियों ने बाहर बुलाने के बाद शराब पिलाने के लिए 500 रुपए की मांग की। मांग पूरी नहीं करने पर आरोपियों ने उसके दो पहिया वाहन में आग लगा दी। इसके बाद फराज से मारपीट कर फरार हो गए। शिकायत मिलने के बाद आरोपियों की तलाश की गई। शब्बर और औबेज को गिरफ्तार कर लिया है। साहिल फिलहाल फरार है। उसकी तलाश की जा रही है।

जांच में पुराने विवाद का हुआ खुलासा– पुलिस की जांच में सामने आया कि फराज भी आदतन अपराधी है। उसके खिलाफ कई केस दर्ज हैं। पूर्व में फराज ने साहिल को विवाद के बाद चांटा मार दिया था। तब से ही दोनों पक्षों में इलाके में वर्चस्व को लेकर विवाद है। पुरानी रंजिश का बदला लेने आरोपियों ने फराज से मारपीट के बाद उसके वाहन में आग लगाई है।

ग्वालियर में रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव को 26 दिन तक डिजिटल अरेस्ट कर ठगे 2.52 करोड़ रुपए

ग्वालियर (नप्र)। मध्यप्रदेश के ग्वालियर में थाटीपुर स्थित रामकृष्ण मिशन आश्रम के सचिव स्वामी सुप्रदिप्तानंद को 26 दिन तक डिजिटल अरेस्ट कर 2.52 करोड़ रुपए की ठगी कर ली गई। ठगों ने नासिक पुलिस का अफसर बनकर फोन किया था। स्वामी सुप्रदिप्तानंद को नरेश गोयल मनी लॉड्रिंग केस में फंसा बताकर ठगी की गई। सबसे पहला कॉल 17 मार्च को आया था। इसके बाद उन्हें डिजिटल अरेस्ट कर लिया गया। इस मामले में ग्वालियर पुलिस की क्राइम ब्रांच ने एफआईआर दर्ज की है।

संभवतः यह मध्यप्रदेश में अब तक का सबसे बड़ा डिजिटल

अरेस्ट है। यहां बता दें कि रामकृष्ण आश्रम के सचिव स्वामी सुप्रदिप्तानंद के पहले उज्जैन में आश्रम का काम देखने वाले प्रबंधन के साथ भी डिजिटल अरेस्ट की घटना हुई थी। उन्हें डिजिटल अरेस्ट कर 71 लाख रुपए की ठगी की गई थी।

फोन पर धमकाकर कहा खाते में हुआ है अनैतिक लेनदेन

- 17 मार्च को दो अलग-अलग नंबरों से स्वामी सुप्रदिप्तानंद के पास कॉल आया।
- इसके बाद उन्हें धमकाया कि उनके नाम से केनरा बैंक में खाता है।
- उसमें 20 करोड़ रुपए का अनैतिक लेनदेन हुआ है।
- उन्हें इसकी पीडीएफ भी भेजी गई। धमकाने वाले पुलिस की ड्रेस में थे।
- पीछे नासिक पुलिस का बोर्ड भी लगा था।
- 26 दिन तक देशभर के अलग-अलग बैंक खातों में 2.52 करोड़ रुपए ट्रांसफर करा लिए।
- यह राशि 15 अप्रैल को वापस करने के लिए बोला गया था।
- लेकिन जब राशि वापस नहीं आई तब स्वामी सुप्रदिप्तानंद से एसएसपी धर्मवीर सिंह से शिकायत की।

प्रदेश में जल संरचनाओं के संरक्षण और सफाई के कार्य निरंतर जारी

जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जन भागीदारी से हो रहे है कार्य

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर प्रदेश में 30 मार्च से निरंतर जल संरचानाओं के संरक्षण और सफाई के कार्य निरंतर जारी है। इन कार्यों में समाज के प्रत्येक वर्ग का सहयोग मिल रहा है। अभियान के दौरान उन स्थानों को चिन्हित किया गया है, जिन्हें सफाई और गहरीकरण के बाद पर्यटन के रूप में विकसित किया जाना है।

ग्वालियर में पृथ्वी तालाब को पर्यटन के रूप में किया जायेगा विकसित– जल गंगा संवर्धन अभियान में ग्वालियर के पृथ्वी तालाब को पर्यटन के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया। तालाब के सौंदर्यीकरण की शुरूआत क्षेत्रीय सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह और महापौर डॉ. शोभा सिकरवार की उपस्थिति में भूमि-पूजन से हुई। सांसद श्री कुशवाह ने बताया कि पृथ्वी तालाब के लिये अमृत योजना में 3 करोड़ रूपये की राशि प्राप्त हुई है। महापौर डॉ. शोभा सिकरवार ने जानकारी दी कि तालाब के चारों और सघन वृक्षारोपण किया जायेगा। इससे तालाब का जल स्तर बढ़ेगा।

सिंगरौली के चितरंगी की कन्या शाला में हुई भाषण प्रतियोगिता– सिंगरौली जिले में जल गंगा संवर्धन अभियान में जल स्रोतों की सफाई के साथ जन-जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है। चितरंगी शासकीय कन्या विद्यालय में जल के महत्व पर भाषण प्रतियोगिता हुई। छात्राओं ने जलवायु परिवर्तन को देखते हुए अपने विचार रखे। छात्राओं ने कहा कि जल संरक्षण को जन-आंदोलन का रूप देना होगा।

धार में रामतलाई तालाब की साफ-सफाई की गई– धार जिले में नगर के रामतलाई तालाब की साफ-सफाई का कार्य किया गया। इस कार्य में जिला आयुष कार्यालय से जुड़े अधिकारी और कर्मचारियों ने तालाब की सफाई का कार्य किया। आंगनवाड़ी केन्द्र क्रमांक 80 त्रिमूर्ति नगर की कार्यकर्ता और सहायिका ने आयुर्वेद से जुड़े चिकित्सकों से पोषण आहार के बारे में जानकारी प्राप्त की। तालाब के सफाई कार्य में महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित की जा रही है।

बड़वानी के पानसेमल में वाटरशेड मिशन की शुरूआत– बड़वानी जिले में जन भागीदारी से जल संवर्धन के कार्य किये जा रहे है। जनपद पंचायत पानसेमल के ग्राम राखी बुजुर्ग में विधायक श्री श्याम बर्डे के उपस्थिति में वाटर शेड मिशन में कार्य की शुरूआत की गई। क्षेत्रीय विधायक ने कहा कि पानी के बगैर जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। उन्होंने बताया कि राखी बुजुर्ग के निकट सुसरी नदी पर बांध बनाये जाने की स्वीकृति मिली है। जनपद क्षेत्र में जल बचाव और पौध संरक्षण पर बच्चों की चित्रकला और रंगोली प्रतियोगिता हुई।

जैन मुनि बोले- समय खराब था, कर्म भोगना था

नीमच में 6 लड़कों ने की थी मारपीट, सभी जेल भेजे गए

जावद (नप्र)। हमारा समय खराब था। हमारे पिछले कर्म थे। हम किसी को कोई सजा नहीं दिलाना चाहते हैं। ये जो घटना हमारे साथ हुई, ये हमारे भाग्य में होनी लिखी थी। जिन लोगों ने ये किया, उन्हें ईश्वर सद्बुद्धि दे।

यह कहना था जैन संत शैलेश मुनि का। दरअसल, मंगलवार को घायल संतों को देखने के लिए दूर-दूर से श्रद्धालु आए। इस दौरान कुछ लोगों ने जैन संत को बताया कि महाराज जी आपके हमलावर पकड़े गए हैं। उन्हें कैसी सजा मिलनी चाहिए। इसके बाद संतों ने यह उत्तर दिया।

नीमच से 90 किमी दूर सिंगोली के कछाला गांव में रविवार रात करीब 12 बजे बालाजी मंदिर में रात्रि विश्राम के लिए रुके तीन संतों के साथ 6 लड़कों ने बुरी तरह मारपीट की थी। हमले में दो संत गंभीर रूप से घायल हो गए। तीसरे वहां से किसी तरह जान बचाकर भागे। उन्होंने गांव में सूचना दी। इसके बाद ग्रामीण इकट्ठा हुए। उन्होंने दो को मौके से पकड़ लिया।

पुलिस ने रात में सर्चिंग कर आसपास के ग्रामीण इलाकों से बाकी चार आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया। इनमें से एक नाबालिग है। पुलिस के मुताबिक, सिंगोली जैन समाज के पवन मेहता ने संतों पर हुए हमले की शिकायत दर्ज कराई है।

सिंगोली जैन स्थानक में ही रुके हैं संत

मंगलवार को आरोपियों को जावद कोर्ट में पेश किया गया। वहां से सभी को जेल भेज दिया गया। वकीलों ने इनकी पैरवी करने से मना कर दिया। आरोपी गांव में जिस परिवार के यहां आए थे, उसके खिलाफ भी समाजजनों ने ज्ञापन सौंपा है। घटना के विरोध में सोमवार को सिंगोली बाजार बंद था।

घटना के बाद पैदल ही जैन स्थानक पहुंचे

पूरे घटनाक्रम के बाद पुलिस और जैन समाज के लोगों ने संतों को वाहन में बैठकर घटनास्थल से सिंगोली जैन स्थानक चलने का अनुरोध किया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। संत पैदल ही चले। गंभीर घायल मुनींद्र मुनिजी को पवन मेहता ठेला गाड़ी से लेकर सिंगोली वर्धमान स्थानक पहुंचे। बाकी संत 10 किलोमीटर पैदल ही पहुंचे। रविवार रात यहां विश्राम किया। तीनों संत स्वस्थ होने तक सिंगोली में ही विहार करेंगे।

आयुर्वेदिक पद्धति से हो रहा इलाज

घटना वाली रात तहसीलदार सहित कई डॉक्टर भी पहुंचे, लेकिन जैन संतों ने रात में डॉक्टर को हाथ नहीं लगाने दिया। किसी प्रकार का कोई इलाज नहीं कराया। सुबह होने पर आयुर्वेदिक पद्धति से जैन स्थानकवास में ही इलाज किया गया। दरअसल, जैन संत सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच ही भोजन ग्रहण करते हैं। उसके बाद नहीं, इसलिए उन्होंने दवा आदि लेने से इनकार कर दिया।

भिक्षा मांगकर किया भोजन

तीनों जैन संतों ने मंगलवार को हमेशा की तरह ही अपनी दिनचर्या की। उनसे मिलने राजस्थान, महाराष्ट्र और गुजरात से भी समाजजन पहुंच रहे हैं। उनका कुशल-क्षेम जान रहे हैं। इस दौरान संत पानी, भोजन, गोचरी (भिक्षा) स्वयं कर रहे हैं।

हलाली से छोड़े सफेद पीठ लंबी चोंच वाले 6 गिद्ध

जीपीएस ट्रैकर से हर मूवमेंट पर नजर रखेंगे ; भोपाल में अभी भी मौजूद 80 गिद्ध

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हलाली जंगल से बुधवार को सफेद पीठ और लंबी चोंच वाले 6 गिद्ध छोड़े गए। पिंजरे से बाहर आते ही वे अपने प्राकृतिक रहवास के लिए उड़ गए। हालांकि, जीपीएस ट्रैकर से उनके हर मूवमेंट पर एक्सपर्ट नजर रखेंगे।

गिद्ध संवर्धन एवं प्रजनन केंद्र केरवा, भोपाल से 6 गिद्ध (2 सफेद पीठ और 4 लंबी चोंच) को उनके

प्राकृतिक रहवास हलाली डेम के वनक्षेत्र में रामकली गोशाला के पास से सुबह छोड़ा गया। इन गिद्धों का प्रजनन गिद्ध संवर्धन एवं प्रजनन केंद्र केरवा में हुआ है। यह गिद्धों का पहला समूह है, जिसे केंद्र से छोड़ा गया है।

गिद्ध यदि ऐसी स्थिति में मिले तो तुरंत सूचना दें– वन विहार के संचालक मीना अवधेश कुमार ने बताया कि गिद्धों को जीपीएस ट्रैकर सिस्टम लगाकर प्राकृतिक रहवास में छोड़ा गया है। यदि वे घायल अवस्था में, उन्हें कोई क्षति पहुंचा रहा हो या एक समय पर एक ही जगह पर काफी देर से बैठे मिले तो तुरंत सूचना वन विभाग को दी जानी चाहिए।

तेज धूप में रहने से कम होती सोचने-समझने की क्षमता

ओपीडी में बढ़े 15 फीसदी बायपोलर डिसऑर्डर केस, ज्यादा बोलना और नींद की कमी शुरुआती लक्षण

भोपाल (नप्र)। धूप अब सिर्फ झुलसा नहीं रही, सोचने-समझने की ताकत भी चुरा रही है। तापमान में लगातार बढ़ोतरी से दिमाग के न्यूरो ट्रांसमीटर पर असर पड़ रहा है, जिससे बायपोलर डिसऑर्डर के मेनिया केस तेजी से सामने आ रहे हैं। स्थिति यह है कि हमीदिया अस्पताल के मनो रोग विभाग की ओपीडी में ऐसे केस अप्रैल माह में 15 फीसदी तक बढ़े हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार अधिक तापमान दिमाग में डोपामिन और सेरोटॉनिन जैसे न्यूरो ट्रांसमीटर को प्रभावित करता है। जिससे बायपोलर डिसऑर्डर के मेनिया फेज के केस बढ़ते हैं। इन मरीजों में तेज़ बोलना, नींद की कमी और निर्णय लेने की क्षमता का कमजोर होना प्रमुख लक्षणों के रूप से देखे जा रहे हैं।

बायपोलर डिसऑर्डर का धूप से सीधा कनेक्शन– बायपोलर डिसऑर्डर एक मानसिक स्वास्थ्य स्थिति है। जिसमें व्यक्ति के मूड में अत्यधिक उतार चढ़ाव होता है। यह दो

तरह का होता है। जिसमें पहला मेनिया है। इसमें व्यक्ति उत्साह और ऊर्जा की अधिकता महसूस करता है। यह तब होता है जब व्यक्ति तेज धूप के संपर्क में ज्यादा रहता है। जिसमें समय पर इलाज ना लिया जाए या सावधानी ना रखी जाए तो यह एक्यूट मेनिया का रूप ले सकता है। वहीं, बारिश या ठंड में जब धूप कम होती है तब इसके दूसरे रूप डिप्रेशन के मामले बढ़ते हैं। जिसमें उदासी और ऊर्जा की कमी के एपिसोड शामिल होते हैं।

यह है बायपोलर डिसऑर्डर के शुरुआती लक्षण

- उत्साह और ऊर्जा की अधिकता
- अधिक बात करना और तेजी से बोलना
- विचारों की अधिकता और तेजी से बदलते विचार
- जोखिम भरे व्यवहार में शामिल होना
- नींद की कमी और अत्यधिक गतिविधि

गंभीर अवस्था में दिखते हैं यह लक्षण

- हैलूसिनेशन- ऐसी आवाजें सुनना या चीजें देखना जो असल में नहीं होती हैं।
- डिल्यूजन्स- झूठे, गलत लेकिन मजबूत ख्यालों का आना। जैसे मैं भगवान हूं, मुझमें विशेष शक्तियां हैं या कोई मुझे नुकसान पहुंचाना चाहता है।
- निर्णय क्षमता का खत्म होना। कई दिनों तक न सोना, फिर भी थका हुआ महसूस न करना।

बचाव के उपाय

कोशिश करें कि तेज धूप में ना निकलें।

जरूरी हो तो चश्में, टोपी और गमछे का उपयोग करें।

पर्याप्त पानी पीएं।

खुद को शांत रखने का प्रयास करें और रोजाना 7 से 8 घंटे की नींद लें।

यदि शुरुआती लक्षण नजर आएं तो बिना देरी करे विशेषज्ञ से परामर्श जरूर लें।

इन दिनों बायपोलर डिसऑर्डर व एंग्जाइटी का खतरा ज्यादा

गांधी मेडिकल कॉलेज के मनोचिकित्सा विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रुचि सोनी के अनुसार, गर्मी में दो रोग बायपोलर डिसऑर्डर और एंग्जाइटी के केस ज्यादा बढ़ते हैं। गर्मी बढ़ने पर सूर्य की रोशनी तेज होती है। जिससे न्यूरो ट्रांसमीटर पर असर पड़ता है और बायपोलर डिसॉर्डर के मरीज मेनिया फेज में चले जाते हैं। जो इस रोग के पुराने रोगी हैं, उन्हें सावधान रहना चाहिए। वे दवा समय पर खाएं, पर्याप्त नींद जरूर लें, खुद को हाइड्रेट रखें और तेज धूप में ज्यादा देर से बचें।